अरबी काव्य-दर्शन।

। इतिहास, परिचय
उत्कृष्ट रचनाओंका
संग्रह।

लेखक—

श्रीयुत बाबू महेशप्रसाद साधु,
मौलवी आलिम और फाजिल।
(काशी हिन्दू-विश्वविद्यालयके अध्यापक।)

प्रकाशक—

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, बम्बई।

आषाढ़, १९७८ वि०।
जुलाई, १९२१ ई०।

प्रथमावृत्ति]

पुस्तक मिलने का प[मूल्य ॥)
जिल्दसहितका [illegible]

प्रकाशक—
नाथूराम प्रेमी
हिन्दी-ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, गिरगांव, बम्बई।



मुद्रक—
गणपति कृष्ण गुर्जर,
लक्ष्मीनारायण प्रेस,
जतनबर, काशी।

नोट—प्रारंभके ८ पेज मंगेश नारायण कुलकर्णीके कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, ४३४ ठाकुरद्वार, बम्बईमें छपे हैं।

विषय-सूची।

पृष्ठसंख्या

कालिदास और भवभूति ।

अनु०—प० रूपनारायण पाण्डेय ।

इस ग्रन्थके मूल लेखक स्व० द्विजेन्द्रलाल राय हैं । इसको पढकर पाठक समझेंगे कि वे केवल कवि और नाटककार ही नहीं थे किन्तु एक मार्मिक और तलस्पर्शी समालोचक भी थे । महाकवि कालिदासके अभिज्ञान शाकुन्तल और महाकवि भवभूतिके उत्तर-रामचरितकी ऐसी गुणदोषविवेचिनी, मर्मस्पर्शिनी और तुलनात्मक समालोचना अब तक शायद ही किसी भारतीय विद्वानके द्वारा लिखी गई होगी । यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि द्विजेन्द्रबाबू इन नाटकोंकी समालोचना लिखनेके बहुत बडे अधिकारी थे । क्यों कि वे सर्वश्रेष्ठ कवि और नाटककार थे । इसमें संस्कृतके उक्त दोनों नाटकोंके कथाभागकी, उनके प्रत्येक पात्रकी, उनके नाटकत्व, कवित्व, भाषा-रचना आदिकी खूब ही विस्तृत समालोचना की गई है और उसमें इस विषय सम्बन्धी इतना ज्ञान भर दिया है कि वह प्रत्येक कवि और नाटक लेखकके लिए अतीव उपयोगी है । संस्कृतके विद्यार्थियोंके लिए तो यह बडे ही कामकी चीज है । इसे पढ कर वे नाटक-साहित्यके मार्मिक विद्वान हो सकते हैं । संस्कृतकी उच्च परीक्षाओंमें यदि यह भरती किया जाय, तो बडा लाभ हो । इससे संस्कृतके विद्वानोंमें गुणदोष-विवेचिनी शक्तिका जागरण होगा ।

आयुर्वेदाचार्य और सुकवि प० चतुरसेन शास्त्रीने इस ग्रन्थकी विस्तृत भूमिका लिखी है जिसे पढनेसे इस ग्रन्थका महत्त्व और भी स्पष्ट हो जाता है । मूल्य १॥), सजिल्दका २)

साहित्य-मीमांसा ।

अनु०—प० रामदहिन मिश्र, काव्यतीर्थ ।

श्रीयुत पूर्णचन्द्र वसुके अपूर्व बंगला ग्रन्थका अनुवाद । यह भी एक समालोचनात्मक ग्रन्थ है । इसमें पूर्वीय और पश्चिमी साहित्यकी, अर्थात् वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, भवभूति और होमर, शेक्सपीयर, वर्ड्सवर्थ, शीलर आदिके काव्य नाटकोंकी तुलनात्मक आलोचना करके आर्य साहित्यकी महत्ता, मार्मि-

कता और अनुकरणीयता प्रतिपादन की गई है। इसमें १ साहित्यका आदर्श, २ साहित्यमें रक्तपात (ट्रेजेडी), ३ साहित्यमें प्रेम, ४-५ साहित्यमें पशुत्व और मनुष्यत्व, ६ साहित्यमें वीरत्व और ७ साहित्यमें देवत्व ये सात अध्याय हैं। इन अध्यायोंमें आर्य सभ्यता, आर्य सतीत्व, आर्य शृगार, आर्य वीरता आर्य परिवार, आत्मोत्सर्ग, स्वार्थत्याग आदि विषयोंकी उच्छ्वसित कण्ठसे महिमा गाई गई है। पढते पढते हृदय स्फीत होने लगता है। प्रत्येक आर्यत्वाभिमानी साहित्यप्रेमीको यह ग्रन्थ पढना चाहिए और आर्यसाहित्यके महत्त्वको हृदयगम करना चाहिए। मूल्य १।) जिल्दसहितका १॥।)

अन्तस्तल।

लेखक—आयुर्वेदाचार्य प० चतुरसेनशास्त्री। इसमें सुख, दु ख, स्मृति, भय, क्रोध, लोभ, निराशा, आशा, घृणा, प्यार, लज्जा, अतृप्ति, आदि अनेक मानसिक भाव बडे ही अनोखे ढगसे चित्रित किये गये हैं। लेखकने मानों मनुष्यके भीतरके-अन्तस्तलके-भावोंको बाहर निकाल कर रख दिया है। भाषा बडी ही चुटीली और जानदार है। पढते समय गद्य काव्यका आनन्द आता है। हिन्दीमें इस ढगकी यह सबसे पहली पुस्तक है। मूल्य लगभग ॥≈)

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर-सीरीज।

हिन्दीकी यह सबसे पहली और सबसे श्रेष्ठ ग्रन्थमाला है। प्राय सभी साहित्यसेवियोंने इसकी मुक्त कण्ठसे प्रशसा की गई है। इसमें प्रतिवर्ष ५-६ महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ निकलते हैं। अब तक इस तरहके ४८ ग्रन्थ निकल चुके हैं और बराबर निकलते जा रहे हैं। छपाई सुन्दर होती है और कागज बढिया लगाया जाता है। कोई भी पुस्तकालय इस ग्रन्थमालासे खाली न रहना चाहिए। इसके स्थायी ग्राहकोंको सब ग्रन्थ पौनी कीमतमें दिये जाते है। स्थायी ग्राहकोंके नियम और ग्रन्थोंका सूचीपत्र मँगाकर देखिए।

मैनेजर, हिन्दी-ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, पो० गिरगाँव, बम्बई।

विषय-प्रवेश।



प्राय नौ वर्ष हुए, मुझे पहले पहल अरबी कविताके पढ़नेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उसके बाद फिर मेरी प्रवृत्ति देव-योगसे अरबी कविताके स्वाध्यायकी ओर बढ़ती ही गई। यहाँ तक कि पिछले पाँच वर्षोंमें मुझे अरबीके उच्च कोटिके ग्रन्थोंके अवलोकन करनेका सुअवसर मिला। मैंने अरबी काव्यका अधिक स्वादिष्ट रस चखा और देखा कि लैटिन, जर्मन, फ्रेंच और अँग्रेजी आदि भाषाओंने अरबी कविताओंके अनेक अनुवादोंसे अपना अपना भाण्डार भरा है। फिर तो मैंने दृढ सङ्कल्प कर लिया कि एक न एक दिन हिन्दीके प्रेमियों-को भी अरबी काव्यका कुछ न कुछ स्वाद अवश्यमेव चखा-ऊँगा। सो उसीका यह फल है कि मैं आज हिन्दी प्रेमियोंके सम्मुख यह छोटीसी पुस्तक रख रहा हूँ।

पहले मेरा विचार था कि "सबा मुअल्का" अर्थात् अर-बोंकी उन सात कविताओंका अनुवाद करूँ, जो कि सर्वोत्तम समझी जानेके कारण मक्केमें काबे (मन्दिर) की दीवारपर सुवर्णाक्षरोंमें लिखकर लटकाई गई थीं। परन्तु उनके भावोंको दर्शानेके लिये अधिक व्याख्याकी आवश्यकता थी। केवल

अनुवादसे उनका मर्म भली भाँति समझना अति कठिन था। इसी लिये भिन्न भिन्न ग्रन्थोंसे अनेक विषयोंकी कविताओंका अनुवाद देना ही मैंने अधिक उचित समझा जिसमें पाठकोंको हर प्रकारकी कविताका थोड़ा थोड़ा परिचय हो सके। इस कारण, यद्यपि इस ग्रन्थकी तैय्यारीमें मुझे अरबीके अनेक काव्य-ग्रन्थोंको देखना पड़ा है और अनेक ग्रन्थोंसे भिन्न भिन्न प्रकारकी सामग्री एकत्र करना आवश्यक प्रतीत हुआ है, तथापि मैंने अधिक सामग्री ऐसे ही काव्य ग्रन्थोंसे ली है, जिनका मान आज केवल भारतवर्षमें ही नहीं है, बल्कि अरब, मिस्र, ईरान, तुर्किस्तान और शाम आदि मुसल्मानी देशोंमें भी जिनका सबसे अधिक मान है और जिनकी प्रतिष्ठा पश्चिम-के धुरन्धर प्राच्य विद्वानोंके हृदयोंमें भी घर किये हुए है।

इसके अतिरिक्त यह बात भी बतला देने योग्य है कि मैंने विशेषत रुचिकर तथा छोटी कविताओंका ही अनुवाद दिया है, जिसमें सब लोग सुगमतासे पढ़ें और किसीका जी न उकताय। जो कविता बहुत बड़ी थी, अथवा जिसमें अधिक व्याख्याकी आवश्यकता थी, उसमेंसे केवल उतना ही भाग ले लिया है जितना कि अधिक उपयोगी और सरल समझा है। साथ ही कुछ बड़ी कविताओंका भी अनुवाद दे दिया है जिसमें लोग यह जान सकें कि अरबीमें उपमान, उपमेय आदि किस ढंगके होते हैं, तुलनाएँ इत्यादि कैसे की जाती हैं, इत्यादि, इत्यादि।

अरबी कवियोंने तुलनाओं तथा उपमाओंमें प्राय ऊँट और खजूरसे काम लिया है। और वास्तवमें उस देशकी

अवस्थाके अनुसार ऐसा होना भी चाहिए था। परन्तु उनकी तुलनाएँ तथा उपमाएँ ऐसी सटीक और चुभती हुई होती हैं कि उनको पढकर विचारशील पुरुष मुक्त-कण्ठसे उनकी प्रशंसा किये विना नहीं रह सकते। साथ ही यह भी अच्छी तरह प्रकट है कि ऊँट अरबके मरुस्थलका जहाज है। घोडा भी अरब ऐसे युद्धवीरोंके लिये कुछ कम उपयोगी पशु नहीं। मेघ-के छा जाने तथा वर्षाके हो जानेसे भी अरबोंके सुखमें अपूर्व वृद्धि होती थी।

अस्तु, ऊपर कहे हुए विषयों पर अरबी कवियोंने जो विचार प्रकट किये हैं, उनकी चाशनी भी पाठकोंके चखनेके लिये थोडी सी रख दी गई है।

अरब लडाईके पुतले थे। उनका समस्त जीवन संग्राममय होता था। बडी वीरताके साथ मरना मारना उनके बाये हाथ-का खेल था। इसी लिये उनकी संग्राम सम्बन्धी कविताएँ बडी विलक्षण हैं। मैंने उस विषयकी भी अनेक कविताओंका अनु-वाद दिया है। परन्तु यह भी स्मरण रहे कि अरबी कवितामें केवल पुरुषोंने ही यश नहीं प्राप्त किया, बल्कि स्त्रियोंने भी पर्याप्त तथा आदरणीय कार्य्य किया है। इसलिये मैंने कई स्त्रियोंकी कविताओंका भी अनुवाद दिया है। परन्तु हिन्दी जाननेवालोंके लिये यह कठिन बात है कि वे भली भाँति जान सकें कि अमुक नाम किसी स्त्रीका है और अमुक पुरुषका। इसी लिये प्रत्येक कवित्रीके नामके बाद कोष्ठमें 'स्त्री' शब्द लिख दिया गया है। अब पाठकगण जिस कविताके अन्तमें नामके

साथ उपर्युक्त शब्द देखें, उसके विषयमें समझ लें कि यह नाम एक स्त्रीका है।

अरबी एक ऐसी अपूर्व भाषा है कि उसके अनेक शब्दों-का भाव अँग्रेजी, उर्दू तथा हिन्दी ऐसी भाषाओंमें निस्सन्देह एक बड़े वाक्यके बिना दर्शाया ही नहीं जा सकता। इसलिये अनुवादमें जितनी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा है, उनको मैं ही जानता हूँ। इसके अतिरिक्त उच्च कोटिके ग्रन्थोंसे सीधे अनुवाद करना भी कुछ सुगम कार्य न था। जिन लोगोंने कभी ऐसा कार्य किया है, उनको इसका अच्छी तरह अनुभव होगा। इसलिये अधिक न लिखकर अनुवादके सम्बन्धमें मैं केवल यह बतला देना चाहता हूँ कि मेरा तात्पर्य इस अनुवादसे यह नहीं है कि लोग इसके द्वारा अरबीकी मूल कविताका स्वाध्याय करें। बल्कि मैंने इस बात पर लक्ष्य रखकर अनुवाद किया है कि लोग इससे अरबी कविताका कुछ रस चख सकें। इसलिये अनुवादमें दो बातों पर विशेष रूपसे दृष्टि रक्खी है। एक यह कि अरबीका मर्म न जाय। दूसरे यह कि हिन्दी-प्रेमियोंको स्वाद अच्छा मिल सके।

अनुवादकी शुद्धताका कितना ध्यान रक्खा है, इस सम्बन्धमें मैं यह बतला देना उचित समझता हूँ कि जिन ग्रन्थों तथा कविताओंकी टीकाएँ मिल सकी हैं, उनकी अनेक टीका-टिप्पणियोंको भी ध्यान देकर देख लिया है। परन्तु फिर भी यदि कहीं तनिक भी शंका हुई है तो उसकी निवृत्ति अपने माननीय मौलाना हजरत सैय्यद मुहम्मद तलहा साहब और मौलाना हजरत नजमुद्दीन साहब सरीखे अरबीके धुरन्धर

मौलानाओंसे कर ली है, जो कि मेरे आदरणीय उस्ताद हैं और जिनकी योग्यताके विषयमें केवल इतना ही कह देना पर्याप्त है कि दोनों माननीय मौलाना साहबान पंजाब विश्वविद्यालयके ओरिएण्टल कालिज, लाहौरमें मौलवी आलिम और मौलवी फाजिल अर्थात् अरबीकी उच्च श्रेणियोंके अध्यापक हैं।

यद्यपि मैंने अनुवादको यथाशक्ति सुगम ही रक्खा है, तथापि कहीं कहीं आवश्यकतानुसार टीका टिप्पणी भी कर दी है जिसमें उन लोगों की जो अरबी और अरबोंसे बिलकुल अनभिज्ञ हैं, समझनेमें लेशमात्र भी कठिनता न हो। फिर भी यदि पाठक निम्नलिखित बातें ध्यानमें रक्खेंगे तो निस्सन्देह अनुवादके समझनेमें बड़ी सुगमता हो जायगी —

(१) अरब कंजूसीको बहुत ही बुरा समझते थे।

(२) अरब एक बहुत गरम देश है। दिनके समय वहाँ यात्रा करना कठिन होता था। इसलिये लोग प्राय रात्रिमें यात्रा करते थे। किन्तु रेतमें राह भूलना साधारणसी बात थी। ऐसे यात्रियोंकी सुगमताके लिये गृहस्थोंके यहाँ अग्नि जलाई जाती थी। परन्तु ऐसी अग्नि उसीके यहाँ जलती थी जो अतिथि-सेवी होता था। आगतुकोंकी अच्छी तरह सेवा करना और उनको उत्तम खानपानसे सुख देना बड़ा पवित्र, महत्त्वपूर्ण तथा प्रशसनीय कार्य समझा जाता था। जो गृहस्थ ऐसे अपरिचित आगन्तुकोंकी सेवामें किसी प्रकारकी कसर करता था वह अच्छा नहीं समझा जाता था। जिसके द्वारसे आगतुक रुष्ट होकर जाते थे वह अति निन्दनीय होता था। साथ ही इसके यह भी जान लेना चाहिए कि प्राचीन अरबमें

अकालके दिनोंमें भी जो कोई आगन्तुकोंको सुख पहुँचाता था, वह विशेष रूपसे प्रशसाका भागी होता था ।

(३) प्राचीन अरब जब कभी अपने सहायकोंको युद्ध ठाननेकी सूचना देना चाहते थे और उनके एकत्र होनेके लिये घोषणा करना चाहते थे, तब उस अवसर पर भी किसी ऊँची जगह पर अग्नि प्रज्वलित किया करते थे । इसके अतिरिक्त कई अन्य बातोंके चिह्नस्वरूप भी अग्नि प्रज्वलित की जाती थी ।

(४) अरब लड़ाईमे मर जाना अच्छा समझते थे ।

(५) तलवारके कुन्द हो जाने अथवा उसमें दन्दाने आदि पड़ जानेका अभिप्राय यह है कि अति घोर युद्ध हुआ ।

(६) बदला लेनेमे बड़ा गौरव समझा जाता था ।

(७) अरब लूटमार करके धन प्राप्त करना अच्छा समझते थे । उनके खयालमें यह जीवनका एक अग था । लूटमार प्राय अन्धेरी रात अथवा प्रात कालके समय होती थी ।

(८) दोपहरके समय यात्रा करनेवाला बड़ा साहसी समझा जाता था ।

(९) किसीसे माँगनेके बदले दु ख भोगना, यहाँ तक कि मर जाना भी वे अच्छा समझते थे ।

(१०) अरबके कवि अपनी अथवा अपने पूर्वजों आदिकी प्रशसा करना बुरा नहीं समझते थे ।

(११) अरबीके 'उम्म' शब्द का अर्थ है 'माता' । 'इम्र'

अथवा 'बिन' का अर्थ 'पुत्र', 'बिन्त, का पुत्री' और 'वनी' अथवा 'बनू' का अभिप्राय 'समुदाय' या 'कुटुम्बी' होता है।

(१२) अरबीकी किसी मूल कविता पर उसका शीर्षक नहीं दिया था। प्रत्येक शीर्षक मेरी ओरसे लगाया हुआ है। जिसकी कविताका अनुवाद किया है उसका नाम नीचे दे दिया है।

(१३) जिस कवि अथवा कवित्रीका नाम नहीं मालूम हो सका, उसके नामके बदले "एक कवि" अथवा "एक स्त्री" आदि ऐसे शब्द रख दिये गये हैं।

(१४) कई कवियोंने अपनी पत्नीको सबोधन करके कविताएँ की हैं, और कई कवियोंने अपने आपको सम्बोधन करते हुए शिक्षाप्रद कविताएँ की हैं। और कई कवियोंने तो मध्यम पुरुषको सबोधन किया है। किन्तु उनका अभिप्राय एक प्रकारसे सार्वभौमिक ही है। परन्तु कुछ कविताएँ ऐसी भी हैं जो कि विशेष घटनाओंकी सूचक हैं तथा अरबोंके आचार-विचार तथा व्यवहार आदिको भी प्रकट करती हैं।

(१५) अनेक कवियोंकी कविताओंमे यह बात भी पाई जाती है कि उन्होंने अपनी कविताओंके प्रारभमें अपनी प्रिया अथवा किसी कपोल-कल्पित प्रियाका ध्यान रखकर शृङ्गार रसके कुछ पद्य अवश्य कहे हैं।

मुझे पूर्ण आशा है कि इन सब बातोंपर ध्यान रखनेसे पाठकोंको ग्रन्थके अवलोकनमे तनिक भी कठिनाई न पड़ेगी। और यदि कोइ कठिनाई उपस्थित भी होगी तो तनिक विचार-

श्री महाशय दयालजी भीमभाई देसाई एस० ए० तथा श्रीमान् सन्तराम जी बी० ए०का भी मैं कृतज्ञ हूँ । इनके अतिरिक्त मैं श्रीस्वामी वेदानन्द तीर्थजी मीमासक चक्रवर्तीको विशेष रूपसे धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता क्योंकि आपने कृपापूर्वक ग्रन्थका केवल अवलोकन ही नहीं किया, बल्कि यथास्थान संस्कृतके श्लोक आदि देनेमें भी बड़ी सहायता की है ।

अनुवादक तथा सम्पादक ।



अरबी कविता ।



यदि कोई मुझसे पूछे कि प्राचीन अरब क्या था, तो मै यही कहूंगा कि लडाईका केन्द्र था। क्योंकि तुच्छसे तुच्छ बातो पर भी अरबोंका लडाईके लिये कटिबद्ध हो जाना एक साधारणसा कार्य्य था। सहस्रो मनुष्योंका तलवारके घाट उतर जाना एक छोटीसी बात थी। वर्षो लड़ते रहना मानों उनमें एक प्राकृतिक गुण था, यहाँतक कि अपने सम्बन्धियोंको भी तलवारों और भालोंसे साफ कर देना उनके स्वभावका एक अग था। अपमानकी जो मर्य्यादा (Standard) उनकी दृष्टिमे थी, उसकी परिभाषा यदि असम्भव नहीं तो दुस्तर अवश्य है। उनकी प्रत्येक लडाई तथा उत्तेजित करनेवाली या लड मरनेवाली बातमें निस्सन्देह एक न एक विलक्षणता या चमत्कार है। परन्तु जिस वस्तुने मित्रों और शत्रुओंके एक साथ बैठनेका बीज बोया, आगे पीछे बैठनेका भेद-भाव मिटाया, किसीकी बातको कान देकर सुनने सुनानेके लिये बाध्य किया, वह अरबी कविता ही थी।

यह बात प्राय सभी लोग निर्विवाद रूपसे जानते और मानते हैं कि प्रत्येक भाषामें कविता बड़ी ही मनोरञ्जक होती है। हर एक भाषामें कविताको उच्च पद प्राप्त है। संस्कृतमें कविताको जो महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त हो चुका है, वह अकथ-

नीय है। किन्तु अरबीमें भी कविताका जितना आदर किया गया है और कवितासे जितना काम लिया गया है वह भी कुछ कम प्रशंसनीय नहीं है। कविताकी ही बदौलत लोग अरबका इतिहास जाननेमें समर्थ हुए हैं। यदि प्राचीन अरबमें कविताका प्रचार न होता तो लोग अरबका बहुत कुछ इतिहास जान ही न सकते। इसके अतिरिक्त एक विद्वान्‌का यह भी मत है कि यूरोपियन भाषाओंके छन्द शास्त्रकी रचना अरबी कविताके ही आधार पर हुई है।

कविताकी उत्पत्ति।

अरबी कविताकी उत्पत्ति कब और क्योंकर हुई थी, इस विषयमें अनेक लेखकोंके अनेक मत हैं जिनका सारांश इस प्रकार है—केवल अरबी कविताकी ही नहीं, बल्कि समस्त संसारमें कविता मात्रकी उत्पत्ति बाबा (हजरत) आदम द्वारा हुई है जो कि सृष्टिके आदि मनुष्य थे। उन्होंने ही पहले अपने पुत्र हाबीलके शोकमें विलापमय पद्य कहे थे। उनका कथन सृष्टिकी एक प्राचीन भाषा सुर्यानीमें था। परन्तु एक लेखकका मत है कि बाबा आदमका कथन गद्यमें था। तत्पश्चात् जब उस सुर्यानी गद्यका अनुवाद अरबीमें साधारण रीति पर किया गया तो वह कविता रूपमें पाया गया, और उसी समयसे अरबी कविताकी नींव पड़ी। कविताकी उत्पत्ति चाहे जिसके द्वारा हुई हो, परन्तु पहले कविता वास्तवमें किसी नियमबद्ध शैली पर नहीं होती थी। उसमें और प्रचलित कविताके ढंगमें बड़ा अन्तर था। फिर बादको जिसने संशोधन करके कवितामें एक नया चमत्कार

उत्पन्न किया वह अरबके एक बडे सरदार कुलैबका भाई था। उसका नाम अदी था। वह रबीआका पुत्र था। परन्तु उसने कवितामें चमत्कार उत्पन्न किया था, इसलिये वह प्राय" मुहलहिलके नामसे विख्यात है। इस कविका जन्म हजरत मुहम्मद साहबके जन्मसे लगभग एक सौ वर्ष पहले हुआ था।

प्राचीन कालमें कविता।

वास्तविक अर्थात् प्रचलित अरबी कविताके जन्म कालका जो पता चलता है वह हजरत मसीहसे ४०० वर्ष बाद अर्थात् हजरत मुहम्मदके जन्मसे लगभग १०० वर्ष पहले ठहरता है। अपने जन्म कालसे लेकर हजरत मुहम्मदके समय तककी कविता अरबी साहित्य ससारमें सबसे उच्च कोटिकी कविता थी। आज भी उसी कालकी कविता प्रामाणिक रूपमें पेश की जाती है और उसका लोहा आज भी अरबीके बडे बडे विद्वान् मानते हैं। इसके सिवा यह भी एक महत्त्वपूर्ण बात है कि हजरत मुहम्मद साहबसे पहलेका समय 'अज्ञानताका समय' कहा जाता है। परन्तु उस कालके कई कवियोंने काव्यमें ज्ञानयुक्त बातोंको भी दर्शाया है। पर यह बात अवश्यमेव स्पष्ट है कि प्राचीन कवि-ताओंमें किसी अद्भुत चीजका वर्णन नहीं है, किन्तु अरबके घोडों, ऊँटों और टीलों आदिके विषयमें भी जो कुछ कहा गया है, उसमें भी चित्ताकर्षणकी जबरदस्त शक्ति है। इसके अतिरिक्त प्राचीन कवियोंका बहुत कुछ महत्त्व इस बातसे भी जाना जा सकता है कि उस कालमें अनेक कवि ऐसे भी हुए

हैं जिन्होंने समय पड़ने पर तुरन्त बिना सोचे विचारे बड़ी अपूर्व कविताएँ की हैं। इन सब बातोंसे कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन अरबमें कविताका प्रबल संस्कार स्वाभाविक ही था। इसी कारण कवि लोग अलँकृत कविताके द्वारा लोगोंको जिधर चाहते थे, उधर ही फेर देते थे। यहाँ तक कि यदि युद्धस्थलमें पूर्वजोंकी वीरता और गौरवका वर्णन करते तो सहस्रों दुर्बल आत्माओंमें भी अदम्य उत्साह भर देते थे। और यदि शोक प्रकट करनेके लिये कभी कुछ कहते तो आँखोंसे आँसुओंकी धारा बन्द न होने देते थे। कविता की ही बदौलत लोग बड़ा सम्मान पाते थे। अरबमें प्रत्येक कुटुम्बके लोग पृथक् पृथक् रहा करते थे। इसलिये जिस कबीले (समुदाय) के लोग कवि होते थे, वह भी बड़ा आदरणीय समझा जाता था। कविताका ही एक ऐसा द्वार था जिससे किसीकी भलाई या बुराई बिना किसी समाचारपत्र या नोटिसके समस्त अरबमें फैल जाती थी।

अरबोंकी स्मरण-शक्ति।

अरबोंकी स्मरण-शक्ति बड़ी अपूर्व थी। वे उसके बलसे केवल अपनी तथा अपने समुदायकी ही वंशावली कण्ठस्थ नहीं रखते थे बल्कि अपने घोड़ोंतककी वंशावली भी अपनी जबान पर रखते थे। अवश्य ही बहुतसे लोगोंको यह जान कर आश्चर्य होगा कि अरबी साहित्यमें पहलेसे ही किसी किसी वस्तुके सहस्रों नाम हैं। जैसे तलवारके ४०००, ऊँट और मदिरा, प्रत्येकके १०००, सिंहके ५०० और अजगरके

२०० नाम अरबीमें हैं। अरब इन सब नामोंको कण्ठस्थ रखते थे, और अपनी स्मरण-शक्तिकी ही बदौलत प्राय लिखनेको बुरा समझते थे। वे कहते थे कि यदि लेखमें सब बातें आ जायँगी तो स्मृतिका विश्वास जाता रहेगा। साथ ही लेखकी अशुद्धि भी प्रामाणिक समझी जा सकेगी। इस प्रकार समस्त बातोंको वे स्मरण रखना ही सर्वोत्तम समझकर अनेक कविताएँ याद कर लेते थे। इसके अतिरिक्त बहुतसे लोगोंमें यह गुण भी था कि वे केवल एक बार सुनकर ही कविताएँ याद कर लेते थे। इसी लिये यदि एक बार किसीकी भलाई अथवा बुराई अरबमें फैल जाती, तो वह अमिट हो जाती थी। क्योंकि एक पीढीके बाद दूसरी पीढीवाले क्रमानुसार सब कुछ स्मरण कर लेते थे और इसी प्रणालीके कारण हम अरबकी कविताओंको जान सके हैं और उनके प्राचीन आचार-विचार बहुत कुछ मालूम कर सके हैं। जिस प्रकार संस्कृतवालोंने धर्मशास्त्र तथा इतिहास तकको कविताका रूप दे दिया है, उसी प्रकार अरबोंने भी अपने सम्बन्धकी प्राय सभी बातोंका कवितामें वर्णन किया है। और इसी लिये सब लोगोंने माना है कि कविता ही अरबका कोष है।

कविताका प्रभाव।

अरबी कविताके विषयमें यदि यह कहा जाय तो अनुचित न होगा कि कविताने अरब निवासियोंपर जादूकासा काम कर दिखाया है। अरब निवासियोंका पहले यह हाल था कि वे एक दूसरेसे पृथक् पृथक् रहा करते थे। चारा पारा

है; और न एक मात्र ऐसी ही बातोंका उल्लेख है जिनसे दार्शनिक अथवा नास्तिक लोग ही किसी दशामें इन्कार कर सकते हों। बल्कि अधिकांश वर्णन शूरता, वीरता, विलाप, प्रेम, तलवार आदिका ही है। तथापि यूरोपियन विद्या प्रेमियोंने अरबी कविताका बहुत अधिक आदर किया है।

कवितामें स्त्रियोंका भाग।

इस अवसर पर यह बतला देना भी उचित प्रतीत होता है कि अरबी कवितामें स्त्रियोंने जो काम किया है, वह भी उच्च कोटिमें परिगणित होता और आदर-दृष्टिसे देखा जाता है। जिस प्रकार आजकल अरबमें स्त्री-शिक्षाका कुछ भी प्रबन्ध नहीं है, उसी प्रकार प्राचीन कालमें भी कोई प्रबन्ध नहीं था। फिर भी कविता तथा साहित्यकी जो सेवा स्त्रियों द्वारा हुई है, वह आज भी प्रशंसनीय और आदरणीय समझी जाती है। स्त्रियोंके रचे पद्य प्रायः शोक और विलापसे भरे हुए हैं। परन्तु किसी किसी स्त्रीने शौर्य्य और वीर रससे भरे हुए ओजस्वी पद्य भी कहे हैं। और जिस प्रकार अरबी काव्यमें अनेक पुरुषोंने अमिट यश पाया है, उसी प्रकार अनेक स्त्रियोंने भी अरबी संसारमें अक्षय्य कीर्ति प्राप्त की है। ऐतिहासिकोंका मत है कि एक बार ओकाज़के बाजारमें ही कवि-सम्राट् इमरउल्कैस और एक अन्य कविके बीचमें काव्य विषयक कुछ झगड़ा पड़ गया था। उसको निपटानेमें एक स्त्रीने जिस योग्यताका परिचय दिया था, उसका लोहा आजकलके अरबीके बड़े बड़े विद्वान और बुद्धिमान् भी निःसंकोच भावसे मानते हैं।

नीति ।

विपत्तिके समय यदि मनुष्य नीतिसे काम नहीं लेता तो वह अपनी जान निरर्थक खोता है और दुर्दशामें फँसकर कष्टका भागी होता है।

लेकिन चतुर पुरुष वह है जो किसी संकटमें पड़ते ही झट नीतिपर दृष्टि डालता है।

ऐसा मनुष्य संसारमें आयु पर्य्यन्त एक अच्छा सरदार बना रहता है, और जब उसका एक मार्ग बन्द हो जाता है तब दूसरा खुल जाता है।

—सामन्यत शर्न।

अरबी काव्य-दर्शन ।



१—नीति ।



सुनहरी शिक्षा ।

जिस स्थानमें भद्र पुरुषकी दुर्गति होती है उस स्थानपर तनिक भी ठहरनेसे सकटमें पड़ना पड़ता है ।

जातियोंमें कोई कोई दूषित स्वभाव वैसा ही असाध्य हुआ करता है जैसा कि जलोदरका रोग असाध्य होता है ।

किसी किसी बातसे कभी तो कुछ तत्त्व ही नहीं निकल सकता, जैसे, पानी बिलोनेसे मक्खन नहीं निकला करता ।

मनुष्य तो चाहता है कि मेरी इच्छाएँ पूर्ण हों, किन्तु ईश्वर उसके अनुसार नहीं करता, बल्कि स्वयं जो कुछ चाहता है वही देता है ।

जब किसी जातिपर कोई सख्ती आती है तब उस सख्तीके बाद शीघ्र ही नरमी आ जाती है ।

लोभी पुरुष अपने लोभके कारण धनी नहीं हो जाया करता । बल्कि उदार पुरुष दान करने पर भी कभी कभी धनवान् हो जाया करता है ।

उदार हृदयवाला पुरुष जबतक जीता रहता है तबतक आनन्दसे ही रहता है । और संकीर्ण हृदयवाला आयु पर्य्यन्त दुःखी ही रहता है ।

कजूसको धनसे कुछ लाभ नहीं होता, और न दानीको अपने दानके कारण किसी प्रकारका दोष ही लगा करता है ।

किसी किसी अति कठिन रोगकी भी दवा है । लेकिन जड़ताकी तो कोई ओषधि ही नहीं है ।*

—क्रैस बिन इल खताम ।

कुछ बिखरे मोती ।

मान मर्यादा प्राप्त कर, चाहे वह नरकमें ही क्यों न मिले । और अपमानको त्याग, चाहे वह चिरस्थायी स्वर्गमें ही क्यों न हो ।

एक तुच्छ मनुष्य नपुंसकको मार डालता है, चाहे वह तुच्छ बालकके सिरका कपड़ा भी न काट सके ।

---

* सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्यौषधम् ।

भर्तृहरि नीतिशतक ।

अर्थात्, शास्त्रकी विधिमें सबका औषध है, परन्तु मूर्खका कोई औषध नहीं है ।

ईश्वरकी सृष्टिमें सबसे अधिक दुःखी पुरुष वह है जिसका साहस तो बढा चढा हो, परन्तु जिसकी शक्ति उसके लक्ष्य से न्यून हो।

प्रतिष्ठाकी प्राप्तिमे तू सारा धन व्यय न कर दे। नहीं तो प्रभुताकी गाँठ, जो धनके कारण बँधी हुई है, खुल जायगी।

ससारमें उसका कुछ भी मान नहीं जिसके पास धन नहीं। और जिसका कुछ मान नहीं, मानो उसके पास धन भी नहीं है।

भेड़ें चरानेवाला गडरिया अपनी अज्ञानताकी अवस्थामें भी वैसे ही मरेगा जैसे कि जालीनूस ऐसा भारी चिकित्सक ज्ञानी होकर मरा था।

अनेक बार ऐसा देखा गया है कि अज्ञानीकी आयु अधिक होती है और उसकी जान भी अधिक सुरक्षित रहती है।

क्या श्रेष्ठ नीच कहा जा सकता है? अथवा स्वच्छको अस्वच्छ बताया जा सकता है?

यदि तू किसी कुलीनका सत्कार करेगा तो उसका स्वामी बन जायगा। और यदि किसी दुष्टका सत्कार करेगा तो वह तुझे दुःख देगा।

तलवार चलानेके अवसरपर प्रभुताके लिये उदारता उसी प्रकार हानिकारक है, जिस प्रकार कि उदारताके अवसर पर तलवारसे काम लेना हानिकारक है।

किसी स्थानमे मेरा कोई मित्र (सहायक) ही नहीं मिल सकता । क्योंकि जब किसी मनुष्यका लक्ष्य महान् हो जाता है तब उसके सहायक भी कम हो जाया करते हैं ।

बुद्धिमत्तापूर्वक थोड़ासा प्रेम निस्सन्देह अच्छा है । और निर्बुद्धिताके साथ अधिक प्रेम भी बुरा है ।

जब किसी मामलेमें दिल ही हाथको न उठावे तब बाहु ही हाथको क्योंकर उठावेगा ?

कालने अपने सम्प्रदायमे यह फैसला कर रक्खा है कि एक जातिकी विपत्तियाँ, दूसरी जातिके लिये कल्याणकारी हों।*

—मुतनब्बी ।

धन और निर्धनता ।

जो मनुष्य अपनी जातिमें निर्धन हो जाता है वह, धनकी ही प्रशंसा करता है, चाहे वह अपनी जातिमे उच्चकुल-उत्पन्न, भद्र पुरुष ही क्यों न हो ।

निर्धनतासे मनुष्यकी बुद्धि दूषित हो जाती है, चाहे वह एक बहुत बड़ा नीतिज्ञ और सरदार ही क्यों न हो ।

---

* जीवो जीवस्य भोजनम् ।
एक प्राणी दूसरेकी खूराक है (एककी जान जानेमे दूसरेको मुर्ग मिलता है)।

मनुष्य जब वस्त्र धारण कर लेता है तब ऐसा प्रतीत होता है कि मानों वह कभी नग्न ही नहीं था। और जब अमीर हो जाता है तब ऐसा मालूम होता है कि मानों वह कभी गरीब ही नहीं था।

जब तू किसी जगह तंग हो जाय, तो किसी दूसरी जगह चला जा, क्योंकि तुझे बहुतसे विश्वसनीय स्थान मिल जायँगे॰

—जाबिर बिन मालव बन-साई।

जैसेको तैसा।

उम्म सआद (सआदकी माता) मेरा कड़वा स्वभाव तथा तीखी प्रकृति देखती है, इसलिये वह मुझको सठियाया हुआ बतलाती है। लेकिन सच तो यह है कि वह मेरी हालत नहीं जानती।

मैंने उससे कहा कि भद्र पुरुष चाहे कितना ही सुशील क्यों न हो, तथापि किसी अवसरपर वह मुसब्बर (एलुवा) से भी अधिक कड़वा पाया जाता है।

॰ यस्मिन् देशे न सम्मानो न वृत्तिर्न च बान्धवा।
न च विद्यागम कश्चित् तं देशं परिवर्जयेत्॥
जिस देशमें न तो आदर, न गुजारा, न बन्धुजन और न कुछ विद्या-प्राप्ति ही हो उस देशको त्याग देना चाहिए।

नम्रता निर्बलता है, कठोरतासे रोब-दाब रहता है, और जिस मनुष्यका कुछ रोब-दाब नहीं हुआ करता उसकी बड़ी दुर्दशा होती है।

जो मनुष्य मुझसे नम्रताके साथ मिलता है, मैं भी उसके साथ धृष्टता नहीं करता। लेकिन दुष्टताके उत्तरमें मैं अति कटु हूँ। मैं टेढ़ेका टेढ़ापन दूर कर देता हूँ और उसको सीधा करके पूर्ववत् कर देता हूँ। यहाँ तक कि उसकी नाकमें एक नकेल डाल देता हूँ जिसमें वह अपनी सीमाका उल्लंघन न कर सके।

ऐ उम्म सआद! यदि तू मुझको बुरा भला कहती है, तो निस्सन्देह तू एक ऐसे पुरुषको बुरा-भला कहती है जिसकी निर्धनताकी कथा प्रशंसनीय है, और जिसकी अमीरीमें सबका हिस्सा है।

जब वह अखण्ड व्रत धारण करता है, तब अपनी दोनों आँखोंके सम्मुख अपनी प्रतिज्ञाको रख लेता है और बढ़िया सुरैजी तलवारकी भाँति कर्मक्षेत्रमें प्रविष्ट हो जाता है।

—सवाद बिन नाशिब।

यदि तुझे किसीका अनुसन्धान करनेकी स्वतन्त्रता दी जाय, तो किसी विवेकी और कुलीन को अपना मित्र बना।

—एक कवि

अच्छी मित्रता।

मैं दुर्बल तथा नीच नहीं हूँ, और न ऐसा ही हूँ कि मेरा मित्र यदि मुझसे मुँह मोड़े तो आतुर हो जाऊँ अथवा लड़ने लगूँ।

परन्तु यदि मित्र प्रीति रक्खे तो मैं भी निस्सन्देह प्रीति रखता हूँ। और यदि उसका मार्ग मुझसे दूर हो जाता है तो मेरा मार्ग भी उससे दूर हो जाता है।

ध्यान रहे कि अच्छी मित्रता वह है जिसे आत्मा पसन्द करे, और वह नहीं, जो कि दु:खदायी बनकर आवे।

—अमद वराला एक कवि।

जब मेरा कोई मित्र मुझसे नाता तोड़े और मुझसे मित्रता रखना उचित न समझे, तब मैं ऐसा नहीं हूँ कि उस पर कोई दोष आरोपण करूँ या उसको कोसूँ। मैं उसको बिल्कुल छोड देता हूँ। फिर हम दोनों पृथक् पृथक् जीवन व्यतीत करते हैं। परन्तु मैं उस समय भी कोई अनुचित शब्द मुँहसे नहीं निकाला करता।

पेट पापीकी मित्रतासे पृथक् रह, क्योंकि जब उसके साथ मित्रताकी रस्सी टूट जाती है तब वह झूठी बातें बनाया करता है।

—मुतवक्लिन-उल लैसी।

नम्रता निर्बलता है, कठोरतासे रोब-दाब रहता है ; और जिस मनुष्यका कुछ रोब-दाब नहीं हुआ करता उसकी बड़ी दुर्दशा होती है ।

जो मनुष्य मुझसे नम्रताके साथ मिलता है, मैं भी उसके साथ धृष्टता नहीं करता । लेकिन दुष्टताके उत्तरमें मैं अति कटु हूँ । मैं टेढेका टेढापन दूर कर देता हूँ और उसको सीधा करके पूर्ववत् कर देता हूँ । यहाँ तक कि उसकी नाकमें एक नकेल डाल देता हूँ जिसमें वह अपनी सीमाका उल्लंघन न कर सके ।

ऐ उम्म सआद ! यदि तू मुझको बुरा भला कहती है, तो निस्सन्देह तू एक ऐसे पुरुषको बुरा भला कहती है जिसकी निर्धनताकी कथा प्रशंसनीय है, और जिसकी अमीरीमें सबका हिस्सा है ।

जब वह अखण्ड व्रत धारण करता है, तब अपनी दोनों आँखोंके सन्मुख अपनी प्रतिज्ञाको रख लेता है और बढ़िया सुरैजी तलवारकी भाँति कर्मक्षेत्रमें प्रविष्ट हो जाता है ।

—मसाद बिन नाशिर ।

यदि तुझे किसीका अनुसन्धान करनेकी स्वतन्त्रता दी जाय, तो किसी विवेकी और कुलीन को अपना मित्र बना ।

—एक कवि

अच्छी मित्रता।

मैं दुर्बल तथा नीच नहीं हूँ, और न ऐसा ही हूँ कि मेरा मित्र यदि मुझसे मुँह मोड़े तो आतुर हो जाऊँ अथवा लड़ने लगूँ।

परन्तु यदि मित्र प्रीति रक्खे तो मैं भी निस्सन्देह प्रीति रखता हूँ। और यदि उसका मार्ग मुझसे दूर हो जाता है तो मेरा मार्ग भी उससे दूर हो जाता है।

ध्यान रहे कि अच्छी मित्रता वह है जिसे आत्मा पसन्द करे, और वह नहीं, जो कि दु खदायी बनकर आवे।

—असद वंशका एक कवि।

जब मेरा कोई मित्र मुझसे नाता तोड़े और मुझसे मित्रता रखना उचित न समझे, तब मैं ऐसा नहीं हूँ कि उस पर कोई दोष आरोपण करूँ या उसको कोसूँ। मैं उसको बिल्कुल छोड़ देता हूँ। फिर हम दोनों पृथक् पृथक् जीवन व्यतीत करते हैं। परन्तु मैं उस समय भी कोई अनुचित शब्द मुँहसे नहीं निकाला करता।

पेट पापीकी मित्रतासे पृथक् रह, क्योंकि जब उसके साथ मित्रताकी रस्सी टूट जाती है तब वह झूठी बातें बनाया करता है।

। भद्र पुरुष ।

मैं उस पुरुषको अच्छा समझता हूँ जिसके कान बुरी बातोंको नहीं सुनते—मानों प्रत्येक बुरी बातकी ओरसे बहरे हैं।

ऐसे पुरुषके विचार शुद्ध होते हैं। वह न बुरी बातोंका प्रचारक होता है, न अच्छे कामोंमें बाधक, और न वाचाल ही होता है।

जब तू चाहे कि तू एक आदरणीय पुण्यात्मा कहलावे और योग्य सद्व्यवहारी तथा प्रशंसनीय कुलीन समझा जाय, तो, जबकि तेरे किसी मित्रसे कोई अनुचित कार्य्य हो जाय, उस समय तूही उसके लिये कोई कारण ढूँढ ले।

हृदयका विशाल होना इस बातमें है कि आवश्यकताकी पूर्ति पर तू सन्तोष करे। और यदि तू आवश्यकतासे अधिक चाहे तो हृदयकी विशालता दरिद्रताका स्थान ले लेगी।

—सालिम बिन-वासबत-उल असदी

अपनी आत्माको मनुष्य जिस प्रकारका चाहे, बना सकता है, सो यदि मनुष्य अपनी आत्माको लालचमें फँसाना चाहे तो वह उसमें फँस जायगी। और यदि उसको सन्तोषका पाठ पढ़ावे तो वह सन्तोषी बन जायगी।

—अबुल हसन नामरी

पुत्रको उपदेश ।

हे पुत्र ! बुद्धिमान पुरुष नीतिका उपदेश समझदार-को ही देता है ।

तू अपने मित्रसे सदैव मित्रता रख। वह मित्रता जो सदैव नहीं रहती, अच्छी नहीं है ।

अपने पड़ोसीके स्वत्वको पहचान, और जान ले कि अच्छे मनुष्य ही पडोसीके स्वत्वको पहचाना करते हैं ।

समझ रख कि अतिथि कुछ समय बाद किसी न किसी दिन आतिथ्यकर्त्ताकी या तो प्रशंसा करेगा, और या बुराई ।

लोग दो प्रकारके कार्य्य किया करते हैं—प्रशंसनीय कार्य्य या निन्दनीय कार्य्य ।

हे मेरे पुत्र यह भी याद रख कि विद्वान् पुरुषको विद्या-से ही लाभ होता है ।

निस्सन्देह कुछ छोटी छोटी बातें ऐसी भी होती हैं कि जिनसे बड़े बड़े बखेड़े उठ खड़े होते हैं ।

बदला उस कर्जके समान है जो कि बारम्बार तुझसे माँगा जाता है । और यह क़र्ज़ (बदला) कभी कभी ऋणदाता (बदला लेनेवाले) को देरसे मिलता है ।

दुष्टता दुष्टको पछाड़ डालती है, और अत्याचारकी चरागाह (चरी) का चारा अत्याचारीके अनुकूल नहीं होता ।

कभी मुसाफिर तेरा भाई बन जाता है और सगा नातेदार नाता तोड बैठता है।

कभी धनके कारण मनुष्यका आदर किया जाता है और निर्धनतासे निर्धनका अनादर होता है।

कभी बडा नीतिज्ञ या धर्म्मात्मा पुरुष निर्धन हो जाता है और पापी निर्बुद्धि धनवान् हो जाता है।

कभी पापीको छोड दिया जाता है और धर्म्मात्माकी परीक्षा की जाती है। सो उन दोनोंमें कौनसा बुरा है?

मनुष्य उचित कार्य्योंमें भी कजूसी करके धन इकट्ठा करता है। परन्तु वे ऊँट जिनको कि वह चराता है, कभी कभी ऐसे वारिसोंकी जायदाद बनते हैं जो कि उसके वशके नहीं होते।

उस मनुष्यकी कजूसी कितनी बुरी है जो कि काल और यमके चक्रका ठीक निशाना है और देखता है, कि जातियाँ उसीके सामने ऐसी पिस गई हैं, जैसे कि सूखी घास चूर चूर हो जाती है।

सृष्टि नष्ट हो जायगी। सो न कोई सर्वदा दुःखी रहेगा और न सुखी।

जल्दी ही अपने पतिके मरनेसे स्त्री राँड हो जायगी, या पत्नीकी मृत्युके कारण पुरुष रडुँआ हो जायगा।

किसीका पिता क्या कह सकता है कि मैं अपने पुत्रसे पहले मरूँगा अथवा मेरा पुत्र मुझसे पहले मर जायगा।

रणशूर वह है जो युद्ध स्थलकी कठिनाइयोंके समय भी दृढ हृदयवाला हो, आपदाओंसे दुःखी न हो और सत्याग्रहमें मैदान न छोडे।

स्मरण रहे कि भीरु तथा छिछोरे मनुष्यमें लडाईका भार उठानेकी शक्ति नहीं होती।

अच्छे घोडोंमेंसे सर्वश्रेष्ठ घोडा वह है जो बहुत दौडता और खूब लगाम चबाता है। —वजीर मिन हुकम-उल सक़फ़ी।

मनुष्य और उसका साहस।

जिस मनुष्यमें जितना साहस होता है उसीके अनुसार उसके संकल्प भी होते हैं। और जिस मनुष्यका जैसा दान होता है उसीके अनुसार उसके प्रशंसनीय कार्य्य भी हुआ करते हैं।

जो मनुष्य भीरु है वह छोटे छोटे कार्य्योंको भी बहुत बडे बडे कार्य्य समझता है। और जो साहसी होता है वह बहुत बडे बडे कार्य्योंको भी छोटे ही छोटे कार्य्य समझता है।

मैं अपनी जातिके कारण श्रेष्ठ नहीं हुआ, बल्कि मेरे कारण मेरी जाति श्रेष्ठ हुई है। और मुझे अपने आप पर गर्व है, न कि अपने बाप-दादोंके कारण।

वीर पुरुष उस समय भी सुरक्षित होता है जब कि बडे बडे सरदारोंकी छातीके रक्तमें भाला घुसा होता है।

—मुतनब्बी।

अपरिचितका विश्वास नहीं ।

जब कि कोई मनुष्य क्रुद्ध हो और न तो उसके लिये मृत्युमे भी भयभीत न होनेवाले सवार क्रुद्ध हों, न अति दुस्तर कार्य्य करनेवाले महाप्रतापी ही उसकी सहायता करें ।

ऐसे मनुष्यको एक तुच्छ शत्रु भी तोड़ डालता है और सदैव उस पर आफत आती रहती है, चाहे वह कितना ही क्रूर और शक्तिशाली क्यों न हो ।

मैत्री-कालमें, तू जिससे चाहे, भ्रातृ-भाव रख ले । किन्तु यह जान ले कि निस्सन्देह तेरे चचेरे भाईके सिवा, ससारमें प्रत्येक व्यक्ति अपरिचित है ।

तेरा सच्चा भाई (तेरे चचेरे भाइयोंमेंसे) वह है जिसको तू अपने सहायतार्थ बुलावे और वह प्रसन्नतापूर्वक तेरी सहायताके लिये आवे—चाहे रणक्षेत्रमें रक्तकी धारें ही क्यों न बहती हों ।

तू अपने चचेरे भाईसे विमुख मत हो, चाहे वह कुटिल ही क्यों न हो, क्योंकि उसीकी बदौलत कार्य्य सँवरते और बिगड़ते हैं ।

—कुराद बिन ओबार ।

यदि तू किसी मित्रका उत्सुक हो, तो प्रत्येकको जो कि मित्रताका दम भरता है, अपना मित्र न समझ ।

—एक कवि

चेतावनी।

जब कि तू धनी हो और अपनी आवश्यकतासे बच रहने- वाले धनको पुण्यार्थ न दे तो तेरी प्रशंसा करनेवाला कोई न होगा।

यदि तू उस मनुष्यकी रोक थाम नहीं करेगा जो तेरे निकट रहकर तुझे दुःख देता है, तो दूरवाले तुझपर तीर चलावेंगे।

जब कि तेरी शान्ति तेरी अज्ञानतापर प्रबल न रहेगी, तो तुझपर बहुतसी बिजलियां और कड़ककी भरमार रहेगी।

यदि तेरे संकल्पकी दृढता तेरे संशयको दूर न कर देगी तो तू अन्य लोगोंके अधीन रहेगा, जैसे ऊँटनी अपनी नकेल वाले अधिकारीकी अधीनतामें रहती है।

जब गाड़नेवाले तुझको क़बरमें गाड़ देंगे और तेरा माल और लोगोंकी जायदाद बन जायगा, तब तुझको अपने जमा किये हुए धनसे कुछ भी लाभ न होगा।

यदि तू अतिथिको अच्छा भोजन न देगा और उसको उत्तम आसन पर न बैठावेगा, तो तू ऐसे अपयशका वस्त्र धारण करेगा जिसको लोगोंकी गालियाँ, तथा उनके पद्य और गद्य सदैव प्रकट करते रहेंगे। *

—मुहम्मद बिन मशीराहाज़।

---

* अतिथिर्यस्य भग्नाशो गृहात्प्रतिनिवर्त्तते।
स तस्मै दुष्कृतं दत्त्वा पुण्यमादाय गच्छति॥

जिसके घरमे अतिथि निराश होकर लौटता है वह अपने पाप उसे देकर और उसके पुण्य लेकर जाता है (क्योंकि वह स्थान स्थान जाकर उसका अपयश करेगा और अपयश पापका फल है। अपयशके विस्तारसे सुकीर्तिका लोप हो ही जाता है।)

महत्व किसमें है ।

यद्यपि मैं बड़े डील-डौलवाला नहीं हूँ तथापि उत्तम कार्यों-की बदौलत महान् हो सकता हूँ ।

शरीरकी सुन्दरता तथा शोभासे कोई मनुष्य प्रशंसाका भागी नहीं हो सकता, जबतक कि शरीरकी कान्तिके अनुसारही उसमें ज्ञान न हो । *

जब मैं भद्र पुरुषोंकी सङ्गतिमें रहता हूँ, उस समय मैं दान करनेमें उनसे बढ़ जाता हूँ । यहाँ तक कि मुझे ही सर्व-श्रेष्ठ कहा जाता है ।

प्रायः हमने यह देखा है कि वे शाखाएँ सूख जाती हैं जिनको उनकी जड़ोंने जीवित नहीं रक्खा है । *

मैंने पुण्यके समान कोई ऐसी वस्तु नहीं देखी जिसका स्वाद मीठा हो और आकृति भी चारु हो ।

—फजारीनका एक कवि

कमीनोंके पास बैठना कमीनगीका चिह्न है । और जो मनुष्य किसी पंडितके पास बैठा करता है, चतुर कहलाता है ।

—एक कवि ।

---

* रूपयौवनसम्पन्ना विशालकुलसम्भवाः ।
विद्याहीना न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥

सुन्दरता तथा जवानीसे युक्त, उत्तम कुलोत्पन्न किन्तु ज्ञानरहित मनुष्य गन्धरहित ढाककी भाँति शोभाशून्य रहते हैं ।

* कविका अभिप्राय यह है कि जिस कुटुम्बके लोग अच्छे कार्य्य नहीं किया करते, वह कुटुम्ब नष्ट हो जाता है ।

अनुवादक ।

नीति-उद्यान।

जिस मनुष्यने अपने मामलोंमें कालके चक्रोंसे कोई शिक्षा नहीं प्राप्त की, उसको बे-चरवाहेके ऊँटोंके साथ चरना चाहिए।

जो मनुष्य सावधानीको खो बैठता है, वह अपने कार्य्यमें सफल नहीं होता। और जो मनुष्य घमण्डके बाण चलाता है वह अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर सकता।

जो जड़ोंकी सगतमें बैठेगा, वह अपने लिये लज्जाके फल चुनेगा और किसी बड़ी आपत्तिका शिकार बनेगा।

जो मनुष्य दान करता है वह सरदार बन जाता है और लोग उसके बिना दामके गुलाम बन जाते हैं। पर कजूसोंकी हालत एक सी ही बनी रहती है।

जो मनुष्य अपनी मान-मर्यादाकी रक्षा नहीं करता उसके स्वभावमें असाध्य त्रुटियाँ जड पकड लेती हैं।

जो मनुष्य अनुचित रीतिसे एकत्र किये हुए धनकी बदौलत उच्च पद प्राप्त करना चाहता है, वस्तुत अपनी मूढताके कारण उसकी बड़ी दुर्दशा होती है और वह बडे सकटमें पडता है।

जो मनुष्य हिलमिलकर रहता है, वह अच्छी तरहसे जीवन व्यतीत करता है, और सर्वश्रेष्ठ जीवन उसका है जिसमें भलमनसाहत है। पर जो कायर तथा कजूस है, उसका जीवन अति निकृष्ट है।

—सलाह उद्दीन सफदी।

आदर्श नीति ।

सदाचारी विद्वान् ! तू प्रसन्न हो, क्योंकि तू बिना जलके ही खूब हरा भरा है ।

हे अल्पज्ञ ! यद्यपि तू लहर मारनेवाले जलमें है, तथापि तू प्यासा ही रहेगा ।

जिन शुभ बातोंका तू अभिलाषी है, उनके हेतु आलस्यको त्याग दे। क्योंकि आलसी शुभ वस्तुओंकी प्राप्तिमे सफली भूत नहीं हो सकता । *

अपनी मर्य्यादा तू बनाये रख और उसका वस्त्र न फाड़, क्योंकि केवल भद्र पुरुषही अपनी मर्य्यादामें बट्टा नहीं लगने देता ।

समस्त लोगोंको एक जैसे स्वभावका मत समझ लो, क्योंकि उनकी प्रकृतियाँ इतने प्रकारकी हैं जिनकी तुम गणना नहीं कर सकते ।

लोग उस मनुष्यके भाई हैं जो अपने धनके बलसे सम्मान पाये हुए हैं। परन्तु जब वह धन जाता रहता है, तब वे उसके विरोधी बन जाते हैं ।

* "उद्यमेनैव सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः । नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।।"

उद्योगसे ही कार्य्य सिद्ध होते हैं न कि मनोरथोंसे। सोये हुए शेरके मुँहमें हिरन नहीं घुसते ।

"न लभन्ते विनोद्योग सम्पदां पदं । सुरा क्षीरोद विलोममनुभूयामृत पपु ।।"

उद्योगके बिना जीव सम्पत्तिकी पदवी नहीं पाते । देवताओंने भी क्षीरसागर मथनका अनुभव करके अमृत पिया था ।

उभरती हुई जवानीमें चटक मटककर चलनेवाले ! बता, क्या कभी कोई मतवाला भी नियत स्थानपर पहुँचा है ?

तू अपनी उभरती हुई जवानीके धोखेमें न आ, क्योंकि कई नवयुवक अपनी युवावस्थामें ही परलोक सिधार गये हैं।

यदि किसी मनुष्यके आचार विचार शुद्ध हों तो परमात्मा उसके पापोंको क्षमा कर देगा।

जब तक बस चले, नेकी कर, क्योंकि मनुष्यमें सदैव नेकी करनेकी शक्ति नहीं रहा करती।

उद्यानकी सुगन्धि कलियोंसे हुआ करती है, और भद्र पुरुषकी प्रतिष्ठा न्याय और नेकीके कारण होती है।

—अबुल-फतहिल-बुस्ती।

आदर्श जीवन।

प्रत्येक पुण्यात्मा जो आगन्तुकोंके साथ सद्व्यवहार करता है, निन्दासे वंचित रहता है, और साथ ही सत्पुरुषोंके बीचमें ऐसा यश प्राप्त कर लेता है जो कि अमिट होता है।

हे प्रिये ! मैं तेरी सौगन्द खाकर कहता हूँ कि कोई स्थान स्वयं ही लोगोंकी रुचिके प्रतिकूल नहीं हुआ करता, बल्कि उस स्थानके निवासियोंके आचार विचार लोगोंको असन्तुष्ट कर दिया करते हैं।

हे प्रिये ! तू मुझको धन खर्च करनेसे मत रोक, क्योंकि कंजूसी मनुष्यके सद्गुणोंको चुरानेवाली है।

हे प्राणेश्वरि ! तू मुझे इच्छानुसार खर्च करने दे, और

यात्रासे लाभ।

हे समारके लोगो ! तुम यात्रार्थ घरसे निकलो। जो कुछ तुम छोडकर जाओगे, उसका बदला मिल जायगा। तुम भ्रमण करो, क्योंकि जीवनका स्वाद निस्सन्देह कष्ट उठानेमें ही है।

विवेकी और पण्डितके लिये कोई स्थान दुखदायी नहीं हुआ करता। अस्तु, गृह त्यागकर भ्रमणार्थ विदेशकी राह लो। *

निस्सन्देह मैं देखता हूँ कि एक ही स्थान पर ठहरे रहनेके कारण पानी गँदला हो जाता है, और यदि बहता रहता है तो स्वच्छ रहता है, नहीं तो स्वच्छ नहीं रहता। †

चन्द्रमा यदि एक स्थानको छोडकर दूसरे स्थानपर न जाय, तो कभी यह नौबत नहीं आ सकती कि लोग उसके दर्शनकी प्रतीक्षा करें।

सिंह जब तक अपना वन नहीं छोडता तबतक शिकार नहीं कर सकता। और तीर जबतक धनुषको छोडकर पृथक नहीं होता तबतक निशानेपर नहीं लगता।

सोना खदानोंमें मिट्टीके समान पडा रहता है और लकडी वृक्षमें रहते हुए भी लकडी ही रहती है।

यह सब जब अपने स्थानको त्याग देते है तभी उच्च आसन प्राप्त करते हैं, और यदि अपने स्थानमें ही रहे तो कभी आदरणीय पद प्राप्त नहीं कर सकते। —एक कवि।

---

* विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।
† पानी बगदे रगदे खरे रहदे। —वारस शाह।

मेरी इच्छाके अनुकूल ही तू भी हो जा; क्योंकि मैं इस बातसे डरता हूँ कि कजूसीके कारण कहीं मेरे सद्गुणोंको कुछ धक्का न पहुँचे ।

तू मुझे मत रोक, क्योंकि मैं उत्तम कार्य्य किया करता हूँ और सांसारिक आपत्तियों तथा लोगोंके दायित्वके निमित्त सदैव चिन्तित रहा करता हूँ ।

—समर बिन अहमर् ।

देश-त्याग ।

जब कि तू किसी जगहसे तंग आ जाय तो उसे छोड़कर किसी अन्य स्थानकी राह ले ।

ईश्वरकी रची हुई भूमि लम्बी चौड़ी है । फिर तो यह बड़े आश्चर्यकी बात है कि ऐसा होने पर भी कोई मनुष्य अपमान-जनक भूमिमें रहे ।

वह मनुष्य तो बिल्कुल ही गिरा हुआ तथा निर्बुद्धि है जो यह नहीं जानता कि मुझपर कैसी चक्की चल रही है ।

यदि तुझे अत्याचारका भय हो तो उस अवसरपर अपनी आत्माकी भलाईका अभिलाषी हो । और घर बनाने वालेको घरके क्षयका समाचार सुनाकर त्याग दे ।

निस्सन्देह तुझको एक स्थानके बदले दूसरा स्थान मिल जायगा । किन्तु तुझको इस आत्माके बदले अन्य आत्मा न मिल सकेगी ।

—एक कवि ।

प्रत्येक सुन्दर वस्तुमें शोभा होती है। अत विद्वान्की शोभा सद्व्यवहारके कारण हुआ करती है।

यदि कोई मनुष्य किसी ऐसे मनुष्यके साथ भलाई करता है, जो उसकी भलाईका अनुभव नहीं करता, तो वह भलाई करनेवाला ऐसे मनुष्यके समान है, जो अन्धोंके घरोंमे दीपक जलाता है।

जिस मनुष्यका पद सूर्यके स्थानसे भी ऊपर हो, उसको न तो कोई वस्तु घटाही सकती है और न बढाही सकती है।

यदि तुमसे कोई खल मेरी निन्दा करे, तो वास्तवमें वह इस बातका साक्षी हो रहा है कि मैं श्रेष्ठ हूँ, क्योंकि खल तो सदैव भद्र पुरुषोंकी निन्दा किया ही करते हैं।

—भिन्न भिन्न कवि

ज्ञान-गेह।

जब तुझपर कोई आपत्ति आवे तो धैर्य धर, क्योंकि मनुष्यके लिये सुख और दु ख दोनोंका होना आवश्यक है।

मैं किसी मनुष्यसे मैत्री करनेसे पहले उसके स्वभावसे मित्रता करता हूँ और उसके कार्य्यों और विचारोंको परख लेता हूँ।

जब कि तूने किसीपर अत्याचार किया हो, तो उसके शापसे बचे। क्योंकि जो मनुष्य काँटे बोता है वह अँगूर नहीं काटा करता। *

अपनी सौगन्द, जबानी मित्रतासे कुछ लाभ नहीं है, जबतक कि मित्रताकी जड़ हृदयमें न हो।

* बोए पेड़ बबूलको आम कहाँसे खाय।

विदेश-गमन ।

उचित यह है कि कुटुम्बियों और देशवासियोंका प्रेम, तुझे आनन्दमय जीवनके सुखसे न रोके । *

जिस स्थानमें तू सफर करते समय ठहरेगा, उसी स्थानमें तुझे कुटुम्बियोंके बदले कुटुम्बी और पड़ोसियोंके बदले पड़ोसी मिल जायँगे ।

—एक कवि ।

नीति-भाण्डार ।

विद्या नीचको उच्च शिखरपर चढ़ा देती है, और अविद्या मनुष्यको पछाड़ डालती है ।

ईश्वर आपदाओंकी हर तरहसे भलाई करे, क्योंकि इन्हींकी बदौलत हमने अपने शत्रुओं तथा मित्रोंको परख लिया है ।

जिसकी ओरसे अभिवादनकी आशा भी न थी, वह भी आज अभिवादन करता है । और यदि धन न होता, तो कोई मनुष्य अभिवादन न करता ।

बहुतसे लोग ऐसे हैं जो मर गये, किन्तु उनके गुण नहीं मरे । और बहुतसे लोग ऐसे हैं जो कि जीवित हैं, किन्तु सर्व साधारणकी दृष्टिमें मृतक हैं ।

प्रत्येक रोगके लिये औषध है, जिससे कि उसका इलाज हो जाता है । किन्तु अज्ञानता अपने दवा करनेवालेको परेशान कर देती है ।

---

* कविने विदेश यात्राको आनन्दमय जीवनकी प्राप्तिका साधन बतलाया है । और एक कहावतका तात्पर्य है—'यात्रा सफलताका साधन है' । —अनु०

जवानी जमाखर्च है। सो ईश्वर करे कि न वह रहे और न उनके झूठे दान।

चुगुलखोरोंकी बातोंका प्रभाव मित्रोंपर ऐसा नहीं पड़ा करता जैसा कि शत्रुओं पर पड़ा करता है। —मुनतख्बी।

चेतावनी।

तेरी श्रेष्ठता इसी बातमें है कि तू संसारमें एक भीषण गरज छोड़ जा, जिसकी ऐसी गूंज हो जैसी गूँज कानमें उँगली देनेसे पैदा होती है।

यदि तेरी श्रेष्ठता तुझे किसी अधमको धन्यवाद देनेसे न बचा सके, तो वास्तवमें श्रेष्ठता उसके निमित्त हो जायगी, जिसको कि तू धन्यवाद देता है।

जो मनुष्य दरिद्रतासे भयभीत होकर सदैव धनोपार्जनमें लगा रहता है, उसका यह काम स्वयमेव दरिद्रता है।

अत्याचारियोंको दूर करनेके निमित्त हमें उचित यह है कि हम बड़े बड़े घोड़ोंका प्रबन्ध करें जिनपर कि नवयुवक सवार हों। और उनमेंसे प्रत्येकका हृदय अत्याचारीके वैमनस्य से भरा हुआ हो।

फिर उनका हाल यह हो कि उनमेंसे प्रत्येक नवयुवक अपने बरछोंकी अनीसे अत्याचारियोंको उस क्षेत्रमें मृत्युका प्याला पिलाता हो, जिसमें मदिराकी इच्छा ही नहीं की जाती।

—मुनतख्बी।

दोषरहित मित्रका पाया जाना अति कठिन है। अत मित्रोंके दोषोंका वर्णन करना नीचता है।

जो मनुष्य आनन्दमय जीवनके कारण ससारकी प्रशंसा करता है, निस्सन्देह वह अति शीघ्र उसके अवगुणोंके कारण उसको धिक्कारेगा भी।

तू अपना गुप्त भेद किसीको मत बतला, क्योंकि जो भेद दोनों होठोंसे बाहर निकल जाता है वह प्रकाशित हो जाता है।

अपनी विद्या, शान्ति, गुण और उदारताके कारण ही मनुष्य द्रोहका निशाना बन जाता है।

यदि किसी भवनकी नींव न होगी, तो जो कुछ बनाया जायगा उसका विध्वंस हो जायगा। —भिन्न भिन्न कवि।

स्फुट नीति।

जो बातें मनुष्योंकी हार्दिक रुचिके अनुसार हुआ करती हैं, वही मनुष्योंपर प्रभाव डाला करती हैं।

सम्मति प्रदान करनेवाला व्यक्ति कभी बिना सोचे समझे ही शुभ सम्मति प्रदान कर दिया करता है। और कभी बहुतेरा सोचने पर भी चूक जाया करता है।

नम्रता यदि किसीमें स्वाभाविक न हो, तो चिर आयु पाने पर भी वह नम्र नहीं हो सकता।

पुण्यात्माओंका दान हाथोंसे होता है, किन्तु झूठोंका दान

तेरी सचाई लोगोंके झूठके सामने दूषित हो गई। पर क्या कोई टेढ़ी वस्तु किसी सीधी वस्तुके समान हो सकती है ?

—अनु॰ इस्माइल तुगराई।

आदर्श उपदेश।

भाग्य उद्योगमें है, और आलस्यमें दुर्भाग्य है। सो तू कटिबद्ध होकर उद्योग कर, जिसमें तू अपनी अन्तिम इच्छा पूरी कर ले।

जिस प्रकार कवचधारी योद्धाके हाथमें तलवार धैर्य धरे रहती है, उसी प्रकार काल-चक्रकी आपदाओंमे तू भी धैर्य धारण किये रह।

जो कुछ तुझे मिले उसपर फूला न समा, और जो नष्ट हो जाय उसके लिये दुःखी न हो।

यदि तू लोभ और लालचसे दूर रहेगा, तो तेरी मनोकामना शीघ्र ही पूर्ण होगी और गुप्त रीतिसे तुझे ईश्वरीय सहायता मिल जायगी।

यदि तेरा पाला ऐसे मनुष्यसे पड़े जिसमें मनुष्यता नामको भी नहीं है, तो तू ऐसा बन जा मानों तूने उसकी कोई बात सुनी ही नहीं और न उसने कुछ कहा ही है।

यदि कोई तुमसे मीठी मीठी बातें करे तो तुम फूल न जाओ, क्योंकि निस्सन्देह मधुमें कभी कभी विष भी हुआ करता है।

यदि तू सफलता और मनोकामनाकी पूर्तिका इच्छुक है, तो प्रत्येक अमीर और गरीबसे अपनी बातोंको छिपाये रख।

उपदेश-विचार।

मेरे विचारोंकी दृढताने मुझे बकवाद करनेसे बचाया और प्राकृतिक आभूषणोंकी अनुपस्थितिमें श्रेष्ठताके गहनोंने मुझको सुशोभित कर दिया।

जीवन रक्षाका मोह, साहसीको उच्च पदोंकी प्राप्तिसे वञ्चित रखता है।

यदि तू आलसी ही रहना चाहता है अथवा जीवनके मोह-में पडा है, तो पृथ्वीमें एक गुफा बना ले, या आकाश पर सीढी लगाकर चढ जा, जिससे तू एकान्तवासी बन जाय।

तू उच्च पदोंकी प्राप्तिकी कठिनाइयोंको उन लोगोंके लिये छोड दे जो कि उन कठिनाइयोंको सहन कर सकते हैं, और तू नाममात्र सुख पर सन्तोष कर।

नाममात्र सुख पर प्रसन्न रहना मनुष्यका ओछापन है क्योंकि भरपूर सुख तो भ्रमणकी अनेक प्रकारकी कठिनाइयाँ सहनेपर ही प्राप्त हो सकता है।

निस्सन्देह उच्च पदोंने मुझसे कहा है कि सुख भ्रमणसे प्राप्त होता है, और वस्तुतः उनका यह कहना सर्वथा ठीक ही है।

यदि किसी अच्छे ठिकाने पर ही पड़े रहनेसे किसीकी सारी मनोकामनाएँ पूरी हो सकतीं, तो सूर्य सदैव एक अच्छे स्थानमें ही पडा रहता।

मुझसे निकृष्ट लोग यदि आगे बढ गये, तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं, क्योंकि मैं तो सूर्यका अनुयायी हूँ, जो चौथे आकाशमें रहता है, पर मनहूस शनैश्चर सातवेंमें रहता है।

नीति-रत्नावली ।

जिस बातका तू अभिलाषी है उसके लिये अकुला मत, और सब पर दया दृष्टि रख, ताकि तुझे भी किसी दयालु से ही काम पड़े। संसारमें कोई हाथ ऐसा नहीं है कि उसके ऊपर ईश्वरका हाथ न हो, और कोई अत्याचारी ऐसा नहीं है कि उसे भी किसी अत्याचारीसे पाला न पड़े।

—एक कवि ।

यदि तूने किसी मामिलेमें कुछ विचारा है तो दूसरेका मत भी उस मामिलेमें जान और उससे सलाह ले। क्योंकि दो मनुष्योंके विचार करनेसे कोई रहस्य छिपा नहीं रह सकता।

एक मनुष्य तो केवल एक दर्पणके समान है, जिससे केवल मुख देखा जा सकता है, किन्तु दो दर्पणोंके एकत्र हो जानेसे पीठ भी दिखाई पड़ती है।

—एक कवि ।

तुझे ऐश्वर्य्य मिले तो किसी पर अत्याचार न कर, क्योंकि अत्याचारी बदलेके तट पर ही होता है।

तू अत्याचार करता है और सोता है, पर अत्याचारसे पीड़ित जागता रहता है, तुझे शाप देता रहता है, और ईश्वर तो हर समय सब कुछ देखता रहता है।

—एक कवि ।

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो दूर बसनेवाले लोगो-

संग्रामके समय तू ठोस या बाणके समान बन जा और संसारमें कहावतसे भी अधिक विख्यात हो जा।

जो मनुष्य तेरे साथ सच्ची प्रीति रखता हो, उसके साथ तू भी सच्ची ही प्रीति रख। और पेट पापीके साथ ऊँटसे भी अधिक पेट पापी बन।

यदि कोई मनुष्य अनेक प्रकारके वस्त्रोंसे ढका हुआ हो, पर परहेज़गारीके वस्त्रोंको धारण न किये हो, तो वास्तवमें वह नग्न ही है।

—सलाह उद्दीन-सफदी।



ऐसे मनुष्यकी मित्रता सदैव बनी रहती है। पर क्या प्रत्येककी मित्रता ऐसी ही रहा करती है ?

—महमद अरजानी।

तू बादशाहकी मुसकुराहटसे घमडी न हो जा, क्योंकि बिजलीके चमनेके समय ही बादल गरजा करता है।

—इब्न दहान।

हँसी ठट्ठेकी आदत मत डाल, क्योंकि इससे हानि होती ह। और हँसी ठट्ठा न करनेसे लोगोंका मान बढता है।

—इब्न-दहान।

क्या तुम यह अभिलाषा रखते हो कि बुढापेमे वैसे ही हो जाओ, जैसे युवास्थामे थे ? सो जान लो कि ऐसा होना असभव है, क्योंकि पुराना कपडा नयेके समान नहीं हो सकता।

—आह्दिज मौनरुली।

यदि कोई मनुग्य विद्वत्तामे बढा चढा हो तो उसके दुबले पतले होनेमे उसे कुछ हानि नहीं पहुँचती।

—आमिम।



जब कभी तू जातिका नेता बनना चाहे, तो शान्ति धारण करके बन, जल्दबाजी और गाली-गलौजसे नहीं।

शान्ति उत्तम है और उसका फल अज्ञानतासे श्रेष्ठ है। परन्तु उस अवसर पर शान्ति अच्छी नहीं जबकि अत्याचारक ढंग पर, तू धूपमें बैठाया जाय।

—मुरार-बिन-सईद।

जो लोग अपने घरोंमें ही बैठे रहते है, वे संसारकी बातोंसे अंधे होते है और अपनी कमाई खो बैठते हैं।

—एक कवि।

ईश्वरकी सृष्टि अति विशाल और विस्तृत है, और प्रत्येक स्थानमें वह पालनहार है। सो जिन लोगोंका किसी स्थानमें घोर अपमान किया जा रहा हो, उनसे कह दो कि जब वे किसी स्थानसे तङ्ग आ जायँ तो उसे छोडकर किसी अन्य स्थानके निमित्त प्रस्थान करें।

—एक कवि।

विधाताकी अटल बातोंसे डरकर जो मनुष्य दूर भागना चाहता है, वह वास्तवमें स्वयमेव भागकर उन्हीं आपत्तियोंमें जा पडता है जो उसके निमित्त नियत हैं।

—एक कवि।

सच्चे मित्रकी ओरसे जब एक भूल हो जाती है, तब उसके गुण सहस्रों सिफारिशें लेकर आया करते हैं।

—एक कवि।

मैं उस मनुष्यके निमित्त प्रेम रखता हूँ जिसका बाहर और भीतर दोनों अपने मित्रके लिये शुद्ध हो।

अरबी काव्य-दर्शन।



२—युद्ध।



योद्धाका कर्त्तव्य।

तू अपनी तलवारोंको बुरा भला कहनेवालोंकी गरदनें मारनेका पूर्ण अधिकार दे दे। और यदि तू अपमानजनक भूमिमें अचानक कभी उतर पड़े तो उसे त्यागकर अन्य स्थानकी राह ले।

सग्रामके दिन यदि कोई कायर तुझे इस भयसे रोके कि समरसेवियोंके घमसानमें कदाचित तू पिस न जाय, तो उसकी बातको तू मत मान, और उसकी बातकी तनिक भी परवा न करते हुए घमसान युद्धके समयमें भी अगली ही पंक्तिकी ओर बढ।

तू अपने लिये ऐसा स्थान पसन्द कर जिससे तू कोई उच्च पद प्राप्त कर सके, नहीं तो समरक्षेत्रकी धूलकी छायामें खेत हो जा।

युद्धको पैदा करनेवाली बात छोटीसी होती है और वह मनुष्य, जो युद्धका मूल कारण होता है, संग्राममें नहीं फँसता, बल्कि साफ अलग हो जाता है, और आफत दूसरे लोगों पर आती है।

जो लोग युद्धको अच्छा नहीं समझते, किन्तु लड़नेवालोंके निकट होते हैं, वे भी उसमें भाग ले लेते हैं। जैसे अच्छा नीरोग ऊँट खारिशको तो बुरा मानता है, परन्तु जब वह खारिशवाले ऊँटके निकट होता है, तब अपनी इच्छा न रखते हुए भी खारिशमें भाग ले लेता है।

—एक ऋषि।

लड़ाईके लिये भड़काना ।

[खुजाआ और असद नामके घरानेवालोंमें विग्रह हुआ । खुजाआ समुदायवाले हार गये । फिर उन्होंने किनाना नामी समुदायसे सहायता माँगी, क्योंकि वे लोग उनके मित्र थे । परन्तु किनाना और असद समुदायवालोंमें घनिष्ट संबध था, इसलिये वे खुजाआके सहायक बनकर असद समुदायवालोंसे नहीं लड़ सकते थे । इसी अवसर पर किनाना समुदायमेंसे शद्दाद नामक कविने खुजाआ समुदायवालोंको उत्तेजित किया था ।

—अनुवादक ।]

खुजाआ समुदायके लोगो ! तुम असद वंशवालोंसे लड़ो । तुममे उनकी लड़ाईसे कायरता न प्रविष्ट होने पावे ।

वे लोग भी तुम्हारे ही समान है । उनके सिरो पर भी बाल ही हैं । और वे यदि मार डाले जायँ तो फिर जीवित नहीं हो जाते ।

क्या हम खुजाआ समुदायवालोंकी माताके दास हैं ? सो जब कि वे लोग किसीके साथ युद्ध ठानेंगे तो हमको भी घसीट ले जायँगे ।

—शद्दाद बिन यामर इल किनानी ।

उच्च कुलोत्पन्नके निमित्त कालकी क्रूरताओंमेंसे एक क्रूरता यह भी है कि उसका ऐसे शत्रुसे पाला पड़े जिससे मित्रता किये बिना काम न चले ।

—मुतनब्बी ।

मैंने चमकदार नेजे और हिन्दी * तलवारसे ही उच्च पद प्राप्त किया है, अपने सम्बन्धी अथवा किसी बड़े समूहके द्वारा नहीं प्राप्त किया ।

रणभूमिमे जब कि तलवारोंकी धारोंमे अग्नि बरस रही थी, ऐसे समयमें झट मैंने अपने बछेड़ेको एड़ लगाई और वह रणक्षेत्रमें जा कूदा ।

खेतमे जानेसे पहले मेरा बछेड़ा पचकल्यान था । पर जब वह खेतसे लौटा तब रक्त और धूलके कारण पचकल्यान नहीं प्रतीत होता था ।

मुझे तू तिरस्कारमय अमृत न पिला, बल्कि मानयुक्त इन्द्रायनका प्याला पिला । तिरस्कारमय अमृत नरक है और मानयुक्त नरक सर्वश्रेष्ठ स्थान है † ।

—अन्तरा ।

---

* प्राचीन समयमें भारतवर्षकी तलवारें समस्त अरबमें अति उत्तम समझी जाती थीं । प्राचीन अरबी साहित्यमें अनेक स्थानोंमें भारतवर्षकी तलवारों और कहीं कहीं नेजोंका महत्त्वपूर्ण वर्णन है । अब इससे पाठक बड़ी सुगमतासे नतीजा निकाल सकते हैं कि जिन तलवारों तथा नेजोंका अरब ऐसे युद्धके पुतले महान आदर करते थे, वे कितनी अच्छी बनती रही होंगी । —अनुवादक ।

† रहिमन मोंहि न सुहाय अमिय पिआवत मान बिन ।
बरु बिष देइ पिआय मान सहित मरिबो भलो ॥

परस्पर युद्ध ।

मैं अपनी सौगंद खाकर कहता हूँ कि अभी पक्षी मेरे समीपसे गये, और उन्होंने मुझे ऐसे मामलेकी सूचना दी, कि जिसकी अब कोई ओषधि ही नहीं रही, क्योंकि अब पक्षी जा चुके हैं।

अब मेरा हाल यह है कि मुझे उन लोगोंके साथ मृत्युके प्यालोंको पीना-पिलाना पड रहा है, जिनका पिता और मेरा पिता एक ही है।

हम दोनों निज़ारको उस समय सहायतार्थ बुलाते हैं जब कि हम दोनोंके बीचमें खत्तीय अथवा भारतवर्षीय * भाले पर्देके समान तन जाते हैं।

हम निज़ारके समान श्रेष्ठ हैं जिन (हम) पर पैगम्बर हज़रत दाऊद साहबकी बनाई हुई अथवा सुग़दकी तैय्यार की हुई ज़िरहें हैं।

जब हम उनपर आक्रमण करते हैं, तब वे ऐसी तेज़ तलवारोंको लेकर हमारे सम्मुख खडे हो जाते हैं जो कि बाँहोंको साफ उड़ा देती हैं।

यदि हम उनके साथ तलवारोंसे लडते हैं, तो वे हमारे ही समान लोहेके वस्त्र धारण करके हम पर धावा कर देते हैं।

मेरे दु खी रहनेके लिये यह बात पर्याप्त है कि मैं सर्वत्र

---

* इस पद्यमें भारतवर्षके नेज़ों (भालों) का वर्णन है। किन्तु अन्य अनेक प्राचीन तथा अर्वाचीन अरबी पद्योंमें भारतकी तलवारोंका ही वर्णन है जो कि बहुत अच्छी समझी जाती थीं। —अनुवादक।

रणकुशल योद्धाओंकी सराहना।

मेरा तन, मन, धन सब कुछ उन सवारों पर न्योछावर हो जिन्होंने अपने आपको मेरे विचारोंके अनुकूल साबित कर दिखाया है।

वे सवार ऐसे रणवीर हैं कि मृत्युसे उस समय भी भयभीत नहीं होते जब कि घमासान युद्धकी चक्की लोगोंको पीस डालती है।

वे सवार भलाईके बदले बुराई नहीं करते और न निष्ठुरताके बदलेमे करुणा ही दर्शाते हैं। उनके शौर्य्यको हानि नहीं पहुँचती, चाहे वे सदैव युद्धमें लडते ही क्यों न रहें।

उन्होंने बफ्बाके चरागाह (चरी) की रक्षा ऐसे वारोंसे की है, कि तलवारके एक एक वारमें शत्रुओंके कई कई वीर एक साथ ढेर होते थे।

तलवारके धनी होनेके कारण उन सवारोंने शत्रुओंके साथ झगडेका निपटारा किया और पागलपनकी दवा पागलपनसे की।

वे सवार ऐसे युद्धवीर और निडर हैं, कि जब किसी स्थानमें डेरा डालते हैं तब अपने ऊँटोंको खराब जगहमे नहीं चराते और न मित्रोंकी ही भूमिमें चराते हैं। बल्कि लडाई मोल लेनेसे भयभीत न होते हुए, अपने ऊँटोंको दुश्मनोंकी ही भूमिमें चराते हैं।

—मजुल-उल गील उत्त-नहवी।

लम्बाईमें उनके और हमारे भाले बराबर हैं। वे हमारे ही समान हैं। मानों हम दोनों एक ही चमडेके चर्मरज्जु हैं।

—उन्ैल बिन हल फ़रत।

हमारी हीनता।

[कविके ३० ऊँट, जुहल समुदायमेंसे लक़ीता घरानेके लोगोंने लूट लिये। कविके समुदायमें यद्यपि बहुतसे लोग थे, तथापि उन्होंने सहायता देनेका साहस न किया। बादको उसने माज़िन नामकी एक बहादुर जातिसे सहायता माँगी। उन्होंने लूटनेवालोंके १०० ऊँट लूटकर कविको दे दिये। इसी पर माज़िनकी प्रशसा करते हुए अपने समुदायवालोंकी हीनताका विलक्षण चित्र कविने खींचा है

—अनुवादक।]

यदि मैं माज़िन नामके समुदायमेंसे होता तो जुहल बिन शैबानमेंसे लकीता नामक वशके लोग मेरे ऊँटों को लूटकर न ले जा सकते।

और यदि ले भी जाते तो उसी समय मेरी सहायताके लिये एक ऐसा समूह उठ खड़ा होता जिसके रणसेवी साधारणतया सरल स्वभावके हैं, किन्तु आत्म गौरवके अवसर पर युद्धमें नृशंस हैं।

माज़िन जातिके लोग ऐसे वीर हैं, कि जिस समय लड़ाई उनको अपनी डाढें दिखाती हैं—अर्थात् घोर युद्धका समय होता है, उस समय भी उनका दिल नहीं दहलता, बल्कि वे बड़ी

भालोंको देखता हूँ कि वे मेरे हाथों और बाँहोंके रक्तसे कुली करते हैं।

यदि मैं अपने भाइयोंसे लडूँ तो निस्सन्देह मैं उस मनुष्यके समान हूँ जो कि मृग तृष्णामें पडकर अपनी मशकका पानी गिरा दे।

अथवा मैं उस स्त्रीके समान हूँ जो अन्य लोगोंके बच्चोंको तो दूध पिलावे और अपनी सन्तानको नष्ट करे।

ऐ निज़ारके* पुत्रो! मैं तुम दोनोंको उपदेश देता हूँ कि तुम दोनों उसका उपदेश ग्रहण करो जो तुम्हारा हितैषी, विश्वस्त और प्रेमी है।

तुम मेरी उपस्थितिमें न लडो और न मेरे बाद बाण चलाओ। तुम दोनोंके लिये शोक है।

क्या तुम दोनो अपने मामलेमें अग्नि (नरक)से नहीं डरते और स्वर्गमें ईश्वरके दर्शनकी अभिलाषा नहीं रखते?

निस्सन्देह यद्यपि मैंने उनसे वैर रक्खा और उनपर अत्याचार किया, तथापि मेरा हृदय इस बातसे दुःखी है कि मैंने अपने ही कलेजेको काटा है।

इसलिये शोक क्यों न हो, जब कि मर्यादाकी रक्षाके समय मेरा पिता, उनका पिता, उनका मामा, मेरा मामा और उनका दादा, मेरा दादा है?

---

* निज़ार लड़नेवालोंके पूर्वजका नाम था। और इसी नामसे उनका घराना प्रसिद्ध था। —अनुवादक।

पिताका बदला ।

[कवि मसूरके पिताको शत्रुओंने मार डाला। तत्पश्चात् शत्रुओंने चाहा कि मसूर धन लेकर बदलेका विचार छोड़ दे और दयासे काम ले । मसूरके कुछ सम्बन्धियोंने भी मसूरको ऐसा ही करनेके लिये जोर दिया । पर मसूरने किसीकी भी न सुनी और निम्न-लिखित भावकी कविता बड़े साहसके साथ कही ।

—अनुवादक ।]

उस मनुष्यके पश्चात् जो कि कुवैकम पहाड़की घाटीमें मिट्टी और सख्त पत्थरकी कबरमें गड़ा है, मुझसे घातकके निमित्त कृपालुतासे काम लेनेके लिये आशा क्योंकर की जा सकती है ? ऐसे अवसर पर तो मेरी कृपालुता यही है कि मैं बदला लेनेमें कोई कसर उठा न रक्खूँ।

ऐ चचेरे भाइयों ! यदि मैंने आज या कल तक बदला नहीं लिया, तो कुछ हर्ज नहीं । समय तो बहुत पड़ा हुआ है, किसी न किसी दिन बदला ले ही लूँगा ।

ईश्वरकी सौगन्द, यदि मैं घातकको शीघ्र न मारूँ अथवा मैं ही न मारा जाऊँ, तो मेरी जाति मेरा तिरस्कार कर दे और मुझे किसी लड़ाईके निमित्त न बुलावे ।

जिनके बाप अथवा भाई पर ऐसी विपत्ति नहीं पड़ी, वे लोग मुझसे कहते हैं कि कुछ दण्ड लेकर ही निपटारा कर लो।

शत्रुओंने तो केवल एक बार ही हम पर युद्धका भार रक्खा, किन्तु हम शत्रुओं पर सदैव युद्धका भार रक्खा करेंगे।

—मसूर बिन हुदबा ।

निर्भयताके साथ झुण्डके झुण्ड और एक एक भी लड़ाईके समय शत्रुओं पर टूट पड़ते हैं।

उनका कोई भाई जब विपत्तिमें उनकी दुहाई देता है, तब वे उससे किसी प्रकारका प्रश्न नहीं करते, बल्कि उसी समय तन्मय होकर उसकी सहायतामें लग जाते हैं।

परन्तु मेरी जातिके लोग यद्यपि संख्यामें अधिक हैं, तथापि किसी छोटीसी लड़ाईमें भी वे किसी कामके नहीं हैं। बल्कि मेरी जातिके लोगोंका हाल तो यह है कि अत्याचारियोंके अत्याचार पर भी, वे क्षमाकी दृष्टि रखते हैं और बुराई करनेवालोंके साथ भी भलाई ही करते हैं। मानों सृष्टिके रचनेवालेने जिन मनुष्योंको पैदा किया है, उनमेंसे इनके सिवा किसी औरको अपनेसे डरनेके लिये बनाया ही नहीं। *

क्या ही अच्छा हो कि मुझे इनके बदले एक ऐसी जाति मिल जाय, जिसके लोग, जब घोड़ों और ऊँटों पर सवार हुआ करें, तब खूब ही लूट मार किया करें।

—कुरैत बिन उनैफ।

मेरी मृत्यु उसकी आँखोंमें इस प्रकार छिपी हुई है, जैसे तलवारकी धारमें मृत्यु छिपी रहती है।

—मिर्रा रफा।

---

* ध्यान रहे कि कविका कथन अपने समुदायके विषयमें व्यङ्गरूपमें है।

—अनुवादक।

एक घायल रणधीर और उसकी पत्नी।

मेरी पत्नीने देखा कि मेरे साथवाले सवार रणक्षेत्रमें खेत हुए, और घावोंकी बौछारसे मैं मूर्छित हूँ।

अत प्रात काल अपनी अज्ञानताके कारण वह मुझको बुरा भला कहती हुई आई और अपनी मूढताके कारण बुरा भला कहती हुई मुझको निकम्मा बतलाती थी। मैंने उससे कहा, कि मैं ही आदि मनुष्य नहीं हूँ, जिसको काल और उच्च कुलके रणसेवियोंने आज दु ख दिया है।

मैं उनसे लडता रहा। यहाँ तक कि सेनाके केन्द्रस्थानमें वे एकत्र हो गये। घोड़े रक्तके बहावमें तैरते थे। हमारे भालों और तलवारोंकी मारामारका यह हाल था कि तमीम समुदायके वीर मुआकस घरानेवालोंका आश्रय लेते थे।

मुआकस घरानेवाले बडे रण धनी हैं। ऐसे समर सेवियोंसे मैं कभी नहीं लडा था। इनके अतिरिक्त जिनसे अब तक लडा हूँ, उनका यह हाल होता था कि उनके कुछ घोड़े तो स्वय भाग जाते थे और और कुछ भगा दिये जाते थे।

जब कि दोनों ओरके रणकुशलोंकी मुठभेड हुई तो प्रत्येक ने नेजाबाजीके हाथ दिखाये। घोडे धूलमें लगामको खूब चबाने लगे।

फिर युद्धस्थलमें धूलसे घोडोंकी आकृति बदल गई थी और उनके शरीरमें बहुतसे घाव हो गये थे। उसी समय एक मुख्य सरदार पर मैंने एक ऐसा वार किया कि वह

समरस्थलमें मरना ।

जो लोग जैशान नामके रणक्षेत्रमें खेत हुए हैं, उनकी [मा]ताएँ क्यों न दुःखी हों ? क्योंकि वहाँके युद्धस्थानमें प्रभुता-[क]ा बड़ा विध्वंस हुआ है ।

उन समरसेवियोंकी छातीमें भाले घुसे हुए थे। लेकिन [इ]से हृदय-विदारक समयमें भी उन्होंने मैदान छोड़नेसे इन्कार [क]िया। और यह बात भी स्वीकार न की, कि मृत्युके भयसे [क]िसी सीढ़ी पर चढ़ जायँ। निस्सन्देह यदि वे रणबाँकुरे भाग [भ]ी जाते तो भी आदरणीय रहते *। परन्तु उन्होंने रणभू-[म]िमें धैर्यको मृत्युसे श्रेष्ठ समझा। (अर्थात् समरस्थलमें ही [क]ाम आये।)

—उम्म उस सरीह (स्त्री)

जब कोई मनुष्य तेरी मानहानि करे तब तू भी उसकी [म]ानहानि करे, चाहे उससे सम्बन्ध रखनेवाले कितने ही अधिक क्यों न हों।

यदि तू ऐसा शक्तिशाली नहीं है कि उसकी मानहानि कर [स]के, तो तू उससे उस समय तक कुछ मत कह जबतक कि तू उसके लिये शक्तिशाली न हो जाय।

—औस बिन हबा।

---

* अरबीमें एक कहावत है—अल फ़िरारो फ़ी वक्त ही फ़तहुन—अर्थात् समयके अनुसार भागना भी विजय है। —अनुवादक

जब कि समर स्थलमें खूब धूल उड़ रही हो और अस्त्र-शस्त्रकी चमक अग्निकी लपटके समान प्रतीत होती हो, ऐसे समयमें समर-स्थलमें मेरा साहस देखकर मृत्युका भी कलेजा दहल जाता है।

जिस समय मेरे शत्रु योद्धा निडर होकर अपने आसमानी रङ्गके नेजोंसे अपने शत्रुओं पर वार करते हैं, उस समय तो मुझे लड़नेमें खूब ही मजा मालूम होता है।

अनेक बार धूलसे भरे हुए मैदानमें जा कूदा हूँ, पर कभी तनिक भी नहीं हिचका। समर क्षेत्र ही मेरा आदर्श है, यहाँ तक कि मैं सदा उसीकी खोजमें लगा रहता हूँ।

मैं अवश्यमेव ऐसे कार्य्य करूँगा जो अद्वितीय होंगे और पुस्तकोंके पृष्ठोंमें लिखे जायँगे।

मैं निस्सन्देह रण स्थलमें घुस जाऊँगा, और ऐसी मार-धाड़ मचाऊँगा कि सारी नदियोंमें रक्त ही रक्त बह चलेगा, क्योंकि रक्तकी लहरें मेरे आनन्दको बढ़ा देती हैं।

निस्सन्देह मेरे रण स्थलमें इतनी धूल उड़ेगी कि उससे आकाश मण्डलमें एक परदा छा जायगा और सारा आकाश-मण्डल काली रात्रिके समान बन जायगा।

मेरे असली घोड़ेके सिवा, मेरी प्रत्येक लड़ाईमें किसी अन्यको मेरे साथ सहानुभूति नहीं, क्योंकि सच तो यह है कि तलवार भी मेरे क्रोधकी शिकायत करती है।

—अन्तर।

औंधे मुँह तृणके समान पृथ्वी पर आ लगा। जबकि मैंने उस सरदार पर चोट की थी, उस अवसर पर मेरे साथ हनीफा समुदायके शेर थे जिनके सिरों पर खोद (लोहेकी टोपी) के चिह्न हैं। -

हनीफा समुदायके लोग ऐसे हैं कि जब वे जिरहबकतर और खोद पहनते हैं, तो चमकते हुए तारोंके समान प्रतीत होते हैं।

यदि मैं जीता रहा, तो अपनी ऊँटनीको ऐसे संग्रामके लिये कसूँगा जिसमें बहुतसा धन प्राप्त हो, अथवा मैं पुण्यात्माकी मृत्यु मरूँ।

—कतादा बिन सलमा।

मेरा संग्राम ।

आज मैं ऐसा घोर युद्ध ठानूँगा कि मेरे धैर्य्यके सम्मुख बड़े बड़े प्रतिष्ठित प्राचीन योद्धा भी तुच्छ प्रतीत होंगे।

जब मैं अपनी तेज तलवार लेकर लोगों पर चढ़ाई करूँगा, तब उनके गलोंसे खून बहाकर ही छोड़ूँगा।

मेरी चढ़ाईके समय बहुतसे सरदार मुझे देखते ही अपने अस्त्र शस्त्र रख देंगे और अपने आपको भागनेके लिये उत्तेजित करेंगे।

मैं वह शूर वीर हूँ जो युद्धकी अग्निको प्रज्वलित करता है, लोगोंकी नाकोंको रगड़ देता है और उनको तथा उनके घोड़ोंको कालके हवाले कर देता है।

अनेक बार जब हमने युद्ध ठाना है तब उसका यथायोग्य ही निपटारा किया है, और हमारी कुलश्रेष्ठता तथा हमारी तलवारें सदैव हमारे अनुकूल ही रही हैं।

हम ऐसे सहनशील हैं कि चाहे हमपर कैसी ही विपत्ति क्यों न आवे, हमारी स्त्रियाँ मृतकोंके लिये रोया नहीं करतीं।

—क़ैस वशावा एक कवि।

हमारा प्रशंसनीय ग्रामीण जीवन।

नागरिक जीवन जिसको भाता हो, भावे। हे लोगो! भला ग्रामीण होनेकी हालतमें हमें कैसा पाते हो?

जिसके घरमें गधोंके बच्चे बँधे हों, बँधे रहें। हमारे यहाँ तो अच्छे घोड़े और लम्बे भाले हैं।

जब हमारे घोड़े जनाब नामी समुदायको लूटनेके लिये उद्यत होते हैं, तब जहाँ कहीं वह समुदाय होता है वहीं पहुँचकर उसपर छापा मारते हैं।

हमारे घोड़े जिनाब और जब्र नामके सुप्रतिष्ठित समुदायों पर भी डाका डालते हैं जो कि घरोंमें रहते हैं। और उनमेंसे जो मर जायँ वे मर जायँ, हमें कुछ चिन्ता नहीं।

लूट मारके लिये जब कोई और नहीं मिलता, तब हम अपने भाई बन्दों पर ही छापा मारते हैं।

—क़िनामा।

हमारा शौर्य्य ।

हे प्रिये सलेम ! मैं तेरे मङ्गलका अभिलाषी हूँ, सो तू भी मेरे मङ्गलकी अभिलाषिणी हो । और यदि तू भद्र पुरुषोंको मदिरा पान करावे, तो मुझे भी मदिरापान करा ।

यदि तू किसी दिन लोगोंको किसी शुभ कार्य्यके निमित्त अथवा युद्धके लिये बुलावे तो मुझे भी उस समय अवश्यमेव बुला।

यद्यपि शुभ कार्य्यके हेतु लोग कठिन उद्योग करते हैं तथापि उसमें पहला तथा दूसरा दरजा हमारा ही हुआ करता है।

ज्योंही हमारा कोई सरदार मर जाता है, त्योंही हम अपने किसी बालकको अपना सरदार बना देते हैं। (अर्थात् हमारे बच्चोंमें भी सरदारीकी योग्यता है ।)

युद्धके दिन निस्सन्देह हम अपनी जानें सस्ती कर देते हैं, पर शान्ति-कालमें उनका मूल्य बहुत अधिक होता है ।

शत्रु जब युद्धमें योद्धाओंको ललकारते थे, तब हमारे ही पूर्वज घोड़ोंसे उतरकर पैदल * मुठभेड़ करते थे ।

जब कि अन्य शूरवीर तलवारोंकी धारोंसे भयभीत होकर खेतमें कतराते हैं, ऐसे समयमें भी हम अपनी तलवारें हाथमें लेकर शत्रुओं पर टूट पड़ते हैं ।

---

* युद्धमें दूरसे बाणों द्वारा लड़ने अथवा घोड़ोंपर सवार होकर नेजों और तलवारोंसे लड़नेके बदले, तलवार लेकर पैदल लड़ना अधिक प्रशंसनीय समझा जाता था । और वास्तवमें यह शौर्य्यका बड़ा भारी चिह्न है । —अनुवादक ।

अनेक बार जब हमने युद्ध ठाना है तब उसका यथायोग्य ही निपटारा किया है, और हमारी कुलश्रेष्ठता तथा हमारी तलवार सदैव हमारे अनुकूल ही रही है।

हम ऐसे सहनशील हैं कि चाहे हमपर कैसी ही विपत्ति क्यों न आवे, हमारी स्त्रियाँ मृतकाके लिये रोया नहीं करतीं।

—क्रैस वशका एक कवि।

हमारा प्रशंसनीय ग्रामीण जीवन।

नागरिक जीवन जिसको भाता हो, भावे। हे लोगो! भला ग्रामीण होनेकी हालतमें हमें कैसा पाते हो?

जिसके घरमें गधोंके बच्चे बँधे हों, बँधे रहें। हमारे यहाँ तो अच्छे घोड़े और लम्बे भाले हैं।

जब हमारे घोड़े जनाब नामी समुदायको लूटनके लिये उद्यत होते हैं, तब जहाँ कहीं वह समुदाय होता है वहीं पहुँच-कर उसपर छापा मारते हैं।

हमारे घोड़े जिनाब और जब्र नामके सुप्रतिष्ठित समु-दायों पर भी डाका डालते हैं जो कि घरोंमें रहते हैं। और उनमेंसे जो मर जायँ वे मर जायँ, हमें कुछ चिन्ता नहीं।

लूट मारके लिये जब कोई और
अपने भाई बन्दों पर ही छापा मारते हैं

हमारा शौर्य ।

हे प्रिये सलेम ! मैं तेरे मङ्गलका अभिलाषी हूँ, सो तू भी मेरे मङ्गलकी अभिलाषिणी हो। और यदि तू भद्र पुरुषोंको मदिरा पान करावे, तो मुझे भी मदिरापान करा।

यदि तू किसी दिन लोगोंको किसी शुभ कार्य्यके निमित्त अथवा युद्धके लिये बुलावे तो मुझे भी उस समय अवश्यमेव बुला।

यद्यपि शुभ कार्य्यके हेतु लोग कठिन उद्योग करते हैं तथापि उसमें पहला तथा दूसरा दरजा हमारा ही हुआ करता है।

ज्योंही हमारा कोई सरदार मर जाता है, त्योंही हम अपने किसी बालकको अपना सरदार बना देते हैं। (अर्थात् हमारे बच्चोंमें भी सरदारीकी योग्यता है।)

युद्धके दिन निस्सन्देह हम अपनी जानें सस्ती कर देते हैं, पर शान्ति-कालमें उनका मूल्य बहुत अधिक होता है।

शत्रु जब युद्धमें योद्धाओंको ललकारते थे, तब हमारे ही पूर्वज घोड़ोंसे उतरकर पैदल * मुठभेड़ करते थे।

जब कि अन्य शूरवीर तलवारोंकी धारोंसे भयभीत होकर खेतमें कतराते हैं, ऐसे समयमें भी हम अपनी तलवारें हाथमें लेकर शत्रुओं पर टूट पड़ते हैं।

---

* युद्धमें दूरसे बाणों द्वारा लड़ने, अथवा घोड़ोंपर सवार होकर नेज़ों और तलवारोंसे लड़नेके बदले, तलवार लेकर पैदल लड़ना अधिक प्रशंसनीय समझा जाता था। और वास्तवमें यह शौर्य्यका बड़ा भारी चिह्न है। —अनुवादक।

युद्ध-ताण्डव ।

ईश्वरकी सौगद, यदि वह (शत्रु) एकातमें मिले तो हम दोनोंकी तलवारें उसीके साथ जायँ जो हममेंसे प्रबल हो ।

—इब्न ज्याब ।

मैंने उन (अपने सम्बान्धियों) की हत्या करके अपने क्रोधकी अग्नि शातकी है । परन्तु वास्तवमे अपनी उगलियोंको ही मैंने काटा है ।

कैम बिन पाईर ।

जो मुझसे नहीं डरता, मै भी उससे नही डरता । और न मै किसीके लिये वह निर्देश करता हूँ जो निर्देश वह मेरे विषयमें नहीं करता ।

—उवई बिन हमाम ।

जब युद्धके समय कालके दाँत तुझको काटें तो तू भी उसको उस समय तक काटता रह जब तक काल तुझको काटता रहे ।

—जरयल बिन इल अशीम ।



इसमें सन्देह नहीं कि प्रेमी ही प्रेमका मीठा स्वाद चखता है, क्योंकि भूमण्डल पर उससे बढ़कर बुरा मनुष्य कोई नहीं, क्योंकि प्रियाके वियोगके समय वह मिलनेकी अभिलाषामें रोया करता है और मिलापके समय वियोगसे चिन्तित होकर रोता है। सो उसकी आँखे वियोग और संयोग दोनों हालतोंमें गर्म ही रहती हैं।

—एक कवि।

अरबी काव्य-दर्शन ।



३—शृंगार ।



प्रेम ।

एक दिन एक अनुरागशून्य हृदयवालेने कहा कि प्रेम तो कोई चीज ही नहीं है । मैंने उत्तर दिया कि यदि तुम प्रेमका रस चखते, तो जान लेते ।

उसने कहा कि अनुराग क्या दिल्लगीके सिवा और भी कोई वस्तु है ? सो दिल्लगी यदि न भाई तो उसकी ओरसे मुँह फेर लिया ।

क्या रोने पीटनेके सिवा अनुराग कोई और वस्तु है ? इसलिये जब जीने चाहा तब उसे रोक लिया ।

इन परिभाषाओंको सुननेके पश्चात् मैंने कहा कि जब आपने अनुरागकी यह परिभाषा बतलाई है, तो वास्तवमें आपने अनुरागको पहचाना ही नहीं ।

—अब्दुल्ला जीलानी ।

प्रेमकी माया।

जो कुछ तू करती है, वह मेरी दृष्टिमें अति सुन्दर प्रतीत होता है *। और तेरे सिवा अन्य कोई यदि उसी कार्य्यको करता है तो वही मुझे अति घृणित जान पड़ता है।

—एक कवि।

प्रेमकी चञ्चल तरङ्गें।

अनुराग एक भड़कती हुई आग है, जो मुझमें बढ़ती ही जा रही है।

ऐ किसीके दिल! क्या तुझमें अनुरागी ऐसे अतिथिके निमित्त भी कोई स्थान है?

निस्सन्देह मैं तेरे दरवाजे पर खड़ा हूँ, और आशा करता हूँ कि तेरी ओरसे मुझे कोई उत्तर मिलेगा।

मुझको दुबलेपनका वस्त्र पहनानेवाली! तुझको कुशलताका वस्त्र मुबारक (धन्य) रहे।

---

* इसी प्रकारका कथन एक उर्दू कविका है —

तबीअतका अजब रँग है कि हो माशूक़ कैसा ही।
बुरी भी हर अदा उसकी भली मालूम होती है।

भावार्थ —तबीअतका ढंग विलक्षण है। वह यह कि चाहे प्रिय कैसा ही क्यों न हो पर उसकी प्रत्येक बुरी बात भी भली ही प्रतीत होती है।

—अनुवादक।

मेरे शरीरमें तो पुराने चिह्नों अर्थात् हड्डियों और पञ्जर-के सिवा कुछ शेष नहीं रहा। और इस सूखे पञ्जरमें केवल साँसको ही अनुरागने बाकी रक्खा है।

मैंने तेरे लिये अश्रुओंको सस्ता कर दिया है। यदि तू न होती तो मेरे आँसू बडे महँगे होते।

यदि तू अपने प्रेमके कपाट मेरे लिये खोल न देगी, तो मेरा दुर्भाग्य! और मेरा पतन!!

मेरी जान तेरे हाथमें है! यदि तू मेरे धनसे प्रसन्न है तो मेरा सारा धन भी तेरा ही है।

हे विधाता! मैं तेरे दरबारमें शिकायत करता हूँ। परन्तु तू तो जानता ही है कि मुझपर क्या बीत रहा है।

—बिहा-उद्दीन जुहैर।

प्रेम-प्रार्थना।

पृथ्वी पर ही बैठे बैठे मैंने तेरे निमित्त ऐसी प्रार्थना की है कि वह आकाशके कोने कोनेमें छा गई है।

साधु लोग नम्रतापूर्वक जो प्रार्थना किया करते हैं, उसे ईश्वर कभी भूलता ही नहीं।

ईश्वर तेरे दर्शनसे तेरे शुभचिन्तकोंके लिये आनन्द मंगल, की सामग्री एकत्र कर दे।

तेरे निमित्त ही मैं जो प्रार्थना करता हूँ, हे परमात्मन! तू उसको अच्छी तरह स्वीकार कर।

—बिहाउद्दीन जुहैर।

प्रेम-वृत्त ।

हे कान्ते ! जबतक तू मेरी आँखोंसे ओझल रहती है, सारा संसार मुझे उजाड़ मालूम होता है । सो हे चन्द्रमुखी ! तू बता कि कब तेरा दर्शन प्राप्त होगा ।

मैंने अपनी जानको तेरे अनुरागमें खपा दिया है । सो मेरी प्यारी जान, मेरे निमित्त तू क्या करेगी ?

मैं तो इसी बातसे प्रसन्न हूँ कि तू आनन्दपूर्वक जीवित रहे । मैं दुनियाँमें इसीसे सन्तुष्ट हूँ ।

अब मैं अपने मोहको दूना कर दूँ तो क्या वह निरर्थक जायगा और क्या अश्रुओंके बहानेसे लाभ नहीं होगा ?

तेरे सिवा यदि किसी औरने मेरे साथ अपना वचन पूरा किया है तो मैंने उसकी ओर आँख उठाकर देखा भी नहीं, और यदि किसी औरने बुलाया है तो सुना तक नहीं ।

—बिहाउद्दीन ज़ुहैर ।

मेरी कान्ता एक उज्ज्वल कुरता पहने हुए निकली । उसकी आँखें मतवाली थीं । मैंने कहा कि पास होकर निकले, पर सलाम भी नहीं किया, ऐसी सचमुच जब कि मैं तेरे सलामसे ही राजी हूँ ।

—एक कवि ।

प्रेम-निकेतन।

"मेरे हृदयमें प्रेमकी प्रचण्ड अग्नि प्रज्वलित है"-निस्सन्देह मैं ऐसी बात उस समय कह सकता हूँ जब कि यदि मेरा हृदय, केवल एक नेजेके लगभग दहकती हुई अग्निके निकट हो जाय तो उस अग्निको ही जला दे।

क्या यह न्यायकी बात है कि मैं तो तेरा दुखिया प्रेमी हूँ, परन्तु तुझसे न तो मुझको कुछ लाभ ही पहुँच रहा है और न हानि ही?

यदि मैं रोगी हूँ तो सदैव रोगी ही बना रहूँ, और यदि मुझपर जादू किया गया है तो ईश्वर करे, मेरा जादू अच्छा होनेमें ही न आवे।

—एक कवि।

प्रेम-विनोद।

हे कान्ते! तूने मेरे हृदयमें निवास किया और इसीमें तेरा गुप्त भेद है। सो ऐसा घर और ऐसे पड़ोसी दोनों धन्य हैं।

इसमें तेरे भेदके सिवा मैंने किसी औरको स्थान नहीं दिया है। तूही अपनी दोनों आँखोंसे देख ले कि क्या कोई और इसमें निवास करता है।

हे घातक ! मेरे अनहितमें भी जो कुछ तू करती है, मैं उससे प्रसन्न होता हूँ, और जो कुछ तू अच्छा समझती है, मैं भी उसे अच्छा ही समझता हूँ।

मेरा हृदय अंगारेके समान जलता हुआ है। पर ईश्वरकी सौगन्द, वह खिन्न नहीं है और न अपने वचनसे टलना ही चाहता है।

मैं अपने आपको ऐसी मृगनयनी पर न्योछावर करता हूँ जिसका प्रकाश चन्द्रमाके समान है और जिसको देखकर बुद्धि और आँखें हैरान हो जाती हैं।

यह एक अति अद्भुत दृश्य है कि उसके बालोंमें अग्नि और जल प्रतीत होता है, पर वास्तवमें न तो उनमें अग्नि ही है और न जल।

जिस रातको मैं जागता रहता हूँ, वह बहुत ही अच्छी होती है, क्योंकि उस रातमें मेरे अश्रु मेरे निमित्त कहानी कहनेवालेका काम देते हैं।

वियोगकी रात चाहे छोटी हो चाहे बड़ी, पर वह मेरी अभिलाषाओं और स्मृतिसे सहानुभूति रखती है।

—बिहाउद्दीन जुहैर।

जिस दिन किसी कान्ताका कान्त अपनी कान्तासे रुष्ट रहता है और उसके वियोगमें पड़ा रहता है, कान्ता द्वारा उस दिनके किये हुए शुभ कार्य्यको ईश्वर स्वीकार नहीं करता।

—एक युवती स्त्री।

प्रेम-आलिङ्गन ।

हे मित्रो ! यदि मैं अपने विचारोंसे टल जाऊँ तो उच्च पदोंके निमित्त और प्रेमके मार्गमें मेरी प्रतिज्ञाएँ पूर्ण न हों।

तुमसे प्रेम करनेके बाद यदि मैं किसी अन्य पर मोहित हो जाऊँ, तो ईश्वर करे कि उच्च स्थानकी चोटियों तक मेरा साहस भी न पहुँचे। (अर्थात् मैं साहसहीन हो जाऊँ।)

यदि मेरे मोहकी अग्नि शान्तिसे बुझ जाय, तो ईश्वर मुझे किसी कार्य्यमें सफल न करे और न मेरी नीतियाँ ज्ञानका स्रोत बनें।

मैंने तो तुम्हारे प्रेममें अपनी सवारी त्याग दी है और अकेला हो गया हूँ, यहाँ तक कि पारितोषिकमें मुझे बीमारी मिली है।

तुमने अपनी शरणमें आनेवाले प्रेमीपर निस्सन्देह अत्याचार करनेका फैसला कर लिया है। सो हे अत्याचारियो ! अब तुम्हारे अत्याचारकी दुहाई है।

तुम्हारे प्रेममें प्रत्येक कड़वी वस्तु पर धैर्य्य धरता हूँ। सो हे भले लोगो ! तुम्हारे कारण दुःखमें भी मुझे कैसा अच्छा स्वाद मालूम होता है !

ईश्वर करे, तुम्हारा दिल उस प्रेमी पर पसीजे, जिसके स्वभावमें तुम्हारा प्रेम सृष्टिके आदिसे है।

जब मैं प्याससे कष्टमें होता हूँ और उस समय भी यदि तुम्हारी याद आ जाती है, तो शीतल जल तक पहुँचना भूल जाता हूँ।

मेरा प्रेम जीवित है और मेरी शान्ति मर चुकी है। मेरे शरीरमें हृदय है, पर उसकी उपस्थिति भी अनुपस्थितिके बराबर ही है।

अब उस जानके मामलेमें ईश्वरसे डरो, जो तुम्हारे शरण अथवा पडोसमें है। पड़ोसीके साथ नेकी करना एक प्रशंसनीय गुण है।

अहा! वह भरपूर आनन्द कैसा अच्छा था, जब कि बुरे दिन भी हँसमुख मुखड़ा दिखलाते थे।

मना पहाड़के किनारेकी सुन्दर रात्रियाँ कैसी अच्छी और छोटी थीं, पर उनके वियोगके पश्चात् लम्बी हो गईं।

वे लोग कैसे उदार हृदयके और प्रतापी थे जिन्होंने अपने सद्व्यवहारसे प्रत्येक कुलीनको अपना दास बना लिया था।

वह अपनी तिरछी चितवनसे क्षयके बाणोंकी बौछार करते थे, और उनकी आँखोंमें लगे हुए सुरमेने बाणोंको अधिक विषैला बना रक्खा था।

—इब्न मातूक।

प्रेम-पत्रावली।

(अनुरागीकी ओरसे)

हे प्राणोंकी जान ! तू अपने मिलनका दान उसको दे, जिसको तेरे वियोगने घुला दिया है। मैं पहले आनन्दमय जीवन व्यतीत करता था, पर आज मैं एक दीन-हीन दुखिया हूँ।

मैं सारी रात जागता रहता हूँ और रात्रिमें मेरे दुःख ही मेरी कथाके वाचक होते हैं।

सो ऐसे हीन दुखियापर दया कर जिसका हाल बहुत ही शोचनीय हो गया है।

जब कि सबेरा होता है, उस समय प्रेमकी मदिरासे मत-वाला हो जाता है।

(अनुरागिनीका उत्तर)

हे नाना प्रकारके दुःख सहनेवाले और अनुरागका दम भरनेवाले ! क्या तू चन्द्रमासे मिलनेका अभिलाषी है ?

तू धोखेमें है। क्या कोई चन्द्रमासे अपनी इच्छाएँ पूर्ण कर सका है ?

मैंने तो तुम्हें सुनाकर बातों बातोंमें उपदेश दिया था कि अब थम जाओ, क्योंकि तुम मृत्यु और आपत्तिके पंजेमें आ फँसे हो।

अब तुमने मिलनका प्रश्न फिर उठाया, तो तुम्हें हमारी ओरसे बड़ी भारी हानि पहुँचेगी।

अब तुम्हारे लिये उचित यह है कि तनिक बुद्धिसे काम लो, और भली भाँति जान लो कि मैंने अपनी ओरसे तुम्हें उपदेश दे दिया।

उस ईश्वरकी शपथ, जिसने सारी वस्तुओंको उत्पन्न किया है और आकाश-मण्डलको तारागणसे सुशोभित किया है, यदि तुमने फिर कभी मुँहसे वह बातनिकाली जो अभी कही है, तो किसी वृक्षकी डाल पर तुम्हें फाँसी दे दूँगी।

(अनुरागीका प्रत्युत्तर)

प्रेमके कारण तुम मुझे मार डालनेकी धमकी देती हो, पर सच तो यह है कि मृत्यु तो एक दिन आवेगी ही, सो मरना मेरे लिये वस्तुत आनन्द दायक है।

जो अनुरागी कान्ताके घरसे निकाला और दुतकारा गया है, वास्तवमें मृत्यु उसके लिये चिर आयुसे अधिक उत्तम है।

जिस मनुष्यके सहायक थोड़े हैं, यदि तुम उससे मिलने जाओ तो बहुत अच्छी बात है, क्योंकि वास्तवमें जो मनुष्य दूसरोंकी भलाईमें लगता है, वह धन्यवादका पात्र होता है।

यदि तुमने मुझे मार डालनेका निश्चय किया है, तो मैं हाजिर हूँ, क्योंकि मैं तो तुम्हारा दास हूँ। और दास तो कैदमें होता ही है।

मैं तो तुम्हारे लिये अति व्याकुल हूँ, पर तुम्हारे मिलनेकी कोई राह सूझ ही नहीं पडती। हाँ, व्याकुलचित्त भला क्योंकर कोई उपाय सोच सकता है ?

हे जानकी मालिका ! तुम मुझपर दया करो, क्योंकि जो मनुष्य सौन्दर्य्य पर मोहित होता है, वह बेवस हो जाता है।

(अनुरागिनीकी ओरसे प्रत्युत्तर)

हे मिलनके भूखे अज्ञानी ! तू अनुरागके पजेमें बुरी तरह फँसा है। क्या तू चतुर्दशीके प्रकाशमान चन्द्रमाके पास पहुँच जायगा ?

अब मैं तुझे ऐसी प्रज्वलित अग्निमें डालूँगी जिसकी लपट कभी ठण्डी ही न होगी, और तुझे ऐसा घायल बनाऊँगी जिस पर अनगिनत तेज तलवारें पडी हों।

हे प्रेम करनेवाले ! मेरे मिलनसे पहले बडी कठिन दूरी है, और साथही साथ ऐसी बुरी और टेढी उलझन है कि आयु पर्य्यन्त उसका सुलझना दुस्तर है।

तू अनुरागका परित्याग कर और उससे मुँह मोड़। मेरी यह शिक्षा मान ले, क्योंकि यह अच्छी वस्तु नहीं है।

—एक कवि।

प्रेमियोंके वियोगको छोड़कर ससारकी सारी आपदाएँ मुझको तो सुगम ही प्रतीत हुई हैं।

—एक कवि।

प्रेमका भिखारी ।

अनुरागी लोग विरहकी वेदनाकी शिकायत करते हैं। परन्तु मेरी अभिलाषा तो यह है कि परमात्मा वह सबका सब विरह कष्ट, जो अन्य समस्त लोग इस मार्गमें उठाते हैं, मुझे अकेले ही उसका उठानेवाला बना दे।

ऐसी दशामें सारेका सारा प्रेम मेरे ही हिस्सेमें हो जायगा। यहाँ तक कि वैसा स्वाद न तो मुझसे पहले किसीने चक्खा था और न आगे कभी चखेगा ही।

—एक कवि।

प्रेमका दास ।

वियोगने जबसे मेरे हृदयमें चिरकाल तक न बुझनेवाली अग्नि प्रज्वलित की, तबसे मैं दुर्बल हो गया हूँ। नहीं तो मैं इससे पहले बहुत शक्तिशाली था।

मुझे आशा थी कि जब बहुत समय बीत जायगा तब मेरा अनुराग लुप्त हो जायगा, किन्तु ऐसा न हुआ।

अनुरागने तो अब मेरे हृदयके बीचो बीच तथा अँतड़ियों-में भी मूसलाधार वर्षा कर दी है। पर बादमें भी रह रह-कर जोरकी झड़ी लगती है।

वास्तवमें उनका हाल बड़ा आश्चर्यजनक है जो मुझको आँख उठाकर बार बार देखते हैं, मानों मुझे देखनेसे पहले और बाद उन्होंने कोई आशिक (प्रेमी) देखा ही नहीं था।

लोग कहते हैं कि यदि तू अपनी कान्तासे नाता तोड़ ले तो तेरी सुध-बुध ठीक हो जायगी। परन्तु सच तो यह है कि यारसे नाता तोड़नेमें तो सुध-बुध और भी ठिकाने न रहेगी।

ऐ लोगो, क्या यह आश्चर्य्यकी बात नहीं कि जो मेरा घातक है, मैं उसीके साथ प्रेम रखता हूँ? मानों उस घातकको उसके घातके बदले में मित्रता देता हूँ।

मेरे प्रेमके प्रमाणोंमेंसे एक प्रमाण यह भी है कि मेरी कान्ताका कुटुम्ब मेरे हृदय और आँखोंमें मेरे कुटुम्बियोंसे भी अधिक प्यारा है।

—हुसैन-बिन-मुतैर।

प्रेमका वशीभूत।

मेरा एक मित्र है जिसका मैं न तो नाम ही बतलाऊँगा और न जिसकी कोई बात ही बतलाऊँगा।

अपने मनमें तो मैं उसका नाम लेता ही हूँ, पर यदि अपनी जबानसे भी उसका नाम ले सकता, तो मेरे लिये यह एक अच्छा ढग था कि मैं उसका नाम लोगोंको बतला सकता।

मैं अपने मित्रके विषयमें यह बात पसन्द नहीं करता कि लोगोंमें उसकी चर्चा की जाय।

वह विख्यात तो है, किन्तु वह अज्ञात विख्यात है। अर्थात् उसका ठीक ठीक हाल किसीको मालूम ही नहीं है।

वह हिरन है, परन्तु जब मैं उससे मिलापके लिये सवे करता हूँ, तो चीतेके समान हो जाता है ।

अब मेरा हाल यह है कि अश्रु मेरे नयनोंसे बन्द न होते और जीभ लडखड़ा रही है ।

वास्तवमे मेरी व्यथाकी कथाने मुझे बुरा-भला कहने वालोंका भी बुरा हाल कर दिया और उनको बड़ी भा परेशानीमे डाल दिया है ।

मेरे शुभचिन्तको ! चुगुलखोरोंकी बातों पर तनिक भी ध्यान न दो, चाहे वे थोडा कहें चाहे ज्यादा ।

मेरी राम कहानी बहुत ही लम्बी-चौड़ी है और चुगुल खोरोंके अनुमान तथा समझके बाहर हैं ।

प्रेमके पथमें वचन भङ्ग करनेका पाप निस्सन्देह एक ऐसा पाप है जिसका कोई प्रायश्चित्त ही नहीं है ।

—बिहाउद्दीन जुहैर ।

ससारके शूर-वीरोंसे हम लडते हैं और उनको मार डालते हैं, पर कोमलाङ्गी नवयौवनाओंकी तिरछी चितवन हमको शान्तिके कालमें ही मार डालती है ।

—मुसलिम बिन वलीद ।

अपनी प्रेम-कथा।

जब कि कोई उसके निकट नहीं होता, तब मैं उससे वार्तालाप करता हूँ और उत्तरके लिये कहता हूँ, किन्तु वह उत्तर नहीं देती।

जब कि मैं उसकी कोई मीठी बात सुनता हूँ तो घुल जाता हूँ। यही नहीं, बल्कि ऐसी भी सभावना है कि उसके मीठे वचनके कारण मिठास भी घुल जाय।

मैं जब उसको देखता हूँ, तब मेरा दिल लहराने लगता है, और प्रसन्नवृत्ति चित्त यदि नाचने लगे तो भी आश्चर्यजनक बात न होगी।

इस ससारमें मेरे भाग्यमें भी कुछ वस्तु आई है। किन्तु उसकी ओरसे तो मुझे कुछ भी नहीं मिला।

हे विधाता! तू ही बता कि मेरी जो यह दुर्दशा हो रही है वह किस पापके कारण है, जिसमें मैं उससे तोबा (*प्रायश्चित्त पश्चात्ताप) कर लूँ।

हे कान्ते! मेरी दुर्दशा देखकर तो समस्त लोगोंके हृदय पसीज गये हैं, परन्तु तू ऐसी निठुर है कि तेरा हृदय पसीजता ही नहीं।

हे कान्ते! तू ही बता कि तू मित्र है अथवा शत्रु, क्योंकि तेरे कार्य मित्रकेसे नहीं हैं।

कान्ते ! तेरे सम्बन्धमें मेरे शत्रु नाना प्रकारके हैं। कुछ तो डाही, कुछ बुरा-भला कहनेवाले, कुछ चुगुलखोर और कुछ रकीब (प्रतिद्वन्द्वी) हैं। परन्तु मैं उनकी करनी पर हँसता हूँ।

वास्तवमें मुझे तेरे विषयमें घोर संग्राम करना पड़ा है। सो आशा है, तेरे मिलनसे विजयी होनेका सौभाग्य प्राप्त हो जायगा।

थोड़े ही कालके पश्चात् मैं अपने अनुरागका गुप्त रहस्य तेरे सन्मुख रख दूँगा। परन्तु मैं नहीं समझता कि ऐसा करनेमें मैं कहाँ तक भलाई या बुराई करूँगा।

मैं तेरे सौन्दर्य्यको भलाईका शकुन समझता हूँ। क्योंकि इससे मुझे इस बातकी शुभ सूचना मिलती है कि मैं घाटेमें न रहूँगा।

—बिहाउद्दीन ज़ुहैर।

जिस स्थानमे मेरी प्यारी सुलेमा उतरती है उसे मैं बहुत प्यार करता हूँ, चाहे अकाल ही सदैव उस भूमिके स्वामी रहें। अर्थात् चाहे निरन्तर वहाँ अकाल ही क्यों न वास करता हो।

—एक कवि।

आदर्श प्रेम।

हे सुन्दरी! तू अपने अनुरागको मुझमें अधिक न बढ़ा, क्योंकि अनुरागकी अधिकतासे मनुष्य कुमार्गी हो जाता है।

जब मामला हाथसे निकल चुका है तब भला मैं अनुरागको क्योंकर छिपा सकता हूँ?

मैं तो अनुरागसे मर गया हूँ, पर मुझे धिक्कारनेवाले कहते हैं कि तू जीवित है।

मेरे हृदयमें अनुरागका बसेरा तो बचपनसे है, और उसीका बहुत कुछ अंश अब भी बाकी है।

हे लोगो! तुम मुझसे यह न पूछो कि मैं किस बातपर मोहित हो गया हूँ, और वह कैसी है। वह सौन्दर्य्यमें सूर्य्यसे भी अपूर्व है और उसके ऊपर काले घूँघरवाले बालोंकी छाया है।

वह मेरे लिये दुःखदायी तो है, पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मानों परम्परासे ही वह मुझ पर कृपालु है।

—बिहाउद्दीन ज़ुहेर।

मैं उस व्यक्तिके प्रेमकी शिकायत करता हूँ जिसकी दूरीने मुझे दुर्बल कर रक्खा है, और मेरे हृदयमें ऐसी अग्नि प्रज्वलित कर रखी है जो बुझाई ही नहीं जा सकती।

—सातीरी मर्राक़।

प्रियाकी याद।

[अरबमें हीर नामी देशके बादशाहकी रानी अति सुन्दर थी। रानीका नाम 'हिन्द' था पर वह 'मुतजररिद 'के नामसे भी विख्यात थी। दैवयोगसे ऐसा हुआ कि एक बार महलके नीचेवाले बागमें रानी अपनी सहेलियोंके साथ सैर कर रही थी। वहां रानी और कविकी आँखें चार हो गईं।

कवि भी अपने शौर्य तथा कुटुम्बके लिहाजसे कुछ कम यश प्राप्त किये हुए न था। अतः दोनोंमें गाढ़ा प्रेम हो गया। कुछ काल तक बादशाहको बिल्कुल खबर ही नहीं लगी। बादमें जब एक दिन बादशाहने अपनी आँखोंसे दोनोंको एक साथ बैठे देखा तब कविको बन्दीगृहमें डाल दिया। उसी कैदकी हालतमें अपनी प्रेमिकाका ध्यान धरकर कविने जो सीधे सादे पद्य कहे थे, उन्हींका अनुवाद नीचे दिया जा रहा है।

—अनुवादक।]

हे कान्ते! यदि तू मुझे निर्धन समझकर धिक्कारती है तो मेरे साथ इराकको चल और वहाँसे मत लौट।

अब तू मेरी आर्थिक पूंजी न देख, बल्कि मेरी श्रेष्ठता और मेरी भलमनसत पर दृष्टि डाल।

मेरी अधीनतामें ऐसे तेज सवार हैं जो अग्निकी लपटके समान तेज हैं और नर घोड़े सदैव उनकी रानोंके नीचे रहते हैं।

उन सवारोंकी जिरहों और कवचोंमें मजबूत कीलें हैं। उन्हींसे उन्होंने अपने खोदोंके किनारोंको बाँध लिया है जिसमें वे लड़ाईमें गिर न जायँ।

उन सवारोंने जिरह (कवच) पहनी, फिर गाती बाँधी, और गाती बाँधना प्रत्येक अस्त्र-शस्त्रधारीके निमित्त उचित है।

वह सवार सबके सब एकही रंग ढंगके बाँके तिरछे हैं और चर्ख पक्षीके समान बड़े उद्योगी हैं।

उन घोड़ोंके बहुत तेज दौड़नेके कारण बड़ी धूल उड़ा करती है और जिन पशुओं तथा ऊँटों पर वे छापा डालते हैं उनको झटपट उठा ले जाते हैं।

मैंने अपनी आँखें ऐसे सवारोंसे ठण्ढी की हैं जिनसे अबीर-गुलालके समान सुगन्धि आती थी।

जब घोर अकाल पड़ता था उस समय मेरे पूर्वज धर्मार्थ कार्य्य करते ही देखे जाते थे।

मैं अपनी कान्ता 'मुतजोरद' के पास निस्सन्देह उस दिन गया था जिस दिन वर्षा हो रही थी।

उसके कुच उस समय उभरे हुए थे और वह श्वेत रेशमी वस्त्र धारण किये हुए थी।

मैंने उसे परदेसे निकाला। फिर वह मेरे साथ चली और अति प्रसन्न होकर चली। मानों कता (भटतीतर) पक्षी पानीकी ओर जा रहा था।

मैंने उसका चुम्बन किया तो उसने ऐसी साँस ली जैसे हिरनका छोटा बच्चा भयके अवसर पर दम चढ़ा लेता है।

फिर वह मेरे पास आ गई और बोली कि मुनख्खल, तू दुर्बल क्यों हो गया है? तेरा शरीर इतना गर्म क्यों है?

मैंने कहा कि तेरे प्रेमके सिवा और किसने मुझे दुर्बल किया? सो मेरा हाल न पूछ और चली चल।

मैं उससे प्रेम करता हूँ और वह मुझसे, पर उसके प्रेमकी सीमा यहीं तक नहीं है कि वह मुझसे प्रेम करती है, बल्कि उसकी ऊँटनी भी मेरे ऊँटके साथ प्रेम करती है।

मैंने केवल छोटे छोटे प्यालों भर शराब नहीं पी, बल्कि बड़े बड़े प्यालों-भर शराब पी है।

जब मैं शराबमें खूब मतवाला हो जाता हूँ तब अपने आपको बड़ा भारी बादशाह समझता हूँ।

पर जब नशा उतर जाता है तब फिर उस समय ऊँटों और बकरियोंका स्वामी हो जाता हूँ।

हे कान्ते! भला उसका कौन मित्र होता है जिसकी मिट्टी प्रेमने खराब कर रक्खी है? और हे कान्ते! दुःखी कैदीका भला कौन सहायक होता है?

—मुनख्खलयशकरी।

वह प्रेम जिसका तुम दम भरते हो, यदि सच्चा होता तो तुम पानीपर भी चलनेका साहस करते।

—बिहा उद्दीन ज़ुहैर।

प्रियाका बखान ।

मैंने चन्द्रमा और कान्ताके मुखड़ेको देखा, सो दोनोंके दोनों दृष्टिमें चाँद ही प्रतीत होते थे ।

मैं ऐसा दृश्य देखकर भोचकासा हो गया और बिलकुल ही न जान सका कि कौनसा आकाश मण्डलका चन्द्रमा है, और कौनसा मनुष्य-जातिका ।

यदि कान्ताके गालोंपर गुलाबकीसी रङ्गत न होती और वह मुझे अपने काले बालोंसे न डराती, तो मैं चन्द्रमाको कान्ता और कान्ताको चन्द्रमा ही समझ बैठता ।

हाँ, आकाशका चन्द्रमा तो छिप जाया करता है, पर यह चन्द्रमा कभी छिपता ही नहीं । फिर भला छिप जानेवाले चन्द्रमाकी तुलना इस न छिपनेवाले चन्द्रमाके साथ क्योंकर हो सकती है ?

—नज़र बिन शुमैल ।

प्रेमीकी विरह-कातरता ।

मेरी कान्ताने मेरे विषयमें न्याय नहीं किया, क्योंकि जब मैं उससे मिलना चाहता हूँ तब वह दूर हो जाती है । और जब मैं उससे दूर रहना चाहता हूँ तब उसका वियोग उससे मिलनेके निमित्त उत्तेजित करता है ।

वह उस मनुष्यसे, जो उससे मिलना चाहता है, दूर भागती है । मानों वह उससे प्रीति रखती है जो उससे प्रीति नहीं रखता ।

—एक कवि ।

सन्ताप ।

ऐ नजद देशकी पुरवाई हवा ! तू नजदसे कब चली थी ? सुन, निस्सन्देह तेरे चलनेने तो मेरे ऊपर विरहकी तह चढ़ा दी है ।

प्रात.काल कुछ दिन चढे जब कुमरी बेतकी कोमल हरी भरी डालोंपर बोली, तो मैं बच्चोंके समान रो पड़ा, अपने हृदय-को थाम न सका । और उस समय इतना व्याकुल हुआ कि मैं कभी उतना व्याकुल हुआ ही न था ।

बहुतसे लोगोंने निस्सन्देह यह समझ रखा है कि कान्त जब कान्ताके पास होता है, तब उस कान्तका दिल दु खी रहा करता है, और कान्ताके दूर रहनेसे कान्त कुछ शान्त रहता है ।

मैंने प्रत्येक ढगसे दवा की, लेकिन मुझे तो किसी प्रकार-से शान्ति न मिली । हाँ, फिर भी कान्ताका घर दूर होनेके बदले निकट होना अधिक उत्तम है ।

पर कान्ताके घरके निकट होनेसे क्या लाभ, यदि कान्ता मिलनसार न हो ?

—अब्दुल्ला दुमैनी ।

प्रेमके मार्गमें जिसने दु ख भोगा है, वही उसको पह-चानता है ।

—अबू अब्दुल्ला बग़ादी ।

आत्म-प्रमाद।

हे प्रिये! मुझको तेरे प्रेमने ऐसे स्थानपर खड़ा कर दिया जहाँ तू है। सो उस स्थानमें न तो आगेही बढ़ सकता हूँ और न पीछेही हट सकता हूँ।

जो लोग तेरे प्रेमके कारण मुझको बुरा-भला कहते हैं, उनको चाहिए कि वे दिल खोलकर मुझे बुरा-भला कहें, क्योंकि जब वे बुरा भला कहते हैं तब तेरी चर्चा करते हैं जो मेरे लिये अति रुचिकर है।

मुझको जिस प्रकार शत्रु कष्ट देते है उसी प्रकार तूभी कष्ट देती है। इसलिये अब जब कि तू शत्रुओंके समान हो गई तो मैं अब शत्रुओंके साथभी प्रेम करने लगा हूँ।

जब तूने मेरा तिरस्कार किया तो मैंने अपने आपको अत्यन्त तिरस्कृत किया, क्योंकि जो तेरी दृष्टिमें तिरस्कृत है, वह प्रतिष्ठाका भागी नहीं हो सकता।

—मजनूल गैम।

समर क्षेत्रमें बाण हमारे प्राणोंके घातक नहीं होते, पर वह तीर जो भँवोंकी धनुषमें लगाये जाते हैं, हमारा अन्त कर देते हैं।

—मुसलिम बिन-वलीद।

सन्ताप ।

ऐ नजद देशकी पुरवाई हवा ! तू नजदसे कब चली थी ? सुन, निस्सन्देह तेरे चलनेने तो मेरे ऊपर विरहकी तह चढ़ा दी है ।

प्रातःकाल कुछ दिन चढ़े जब कुमरी बेतकी कोमल हरी भरी डालीपर बोली, तो मैं बच्चोंके समान रो पड़ा, अपने हृदय-को थाम न सका । और उस समय इतना व्याकुल हुआ कि मैं कभी उतना व्याकुल हुआ ही न था ।

बहुतसे लोगोंने निस्सन्देह यह समझ रखा है कि कान्त जब कान्ताके पास होता है, तब वह कान्तका दिल दुःखी रहा करता है, और कान्ताके दूर रहनेसे कान्त कुछ शान्त रहता है ।

मैंने प्रत्येक ढंगसे दवा की, लेकिन मुझे तो किसी प्रकार-से शान्ति न मिली । हाँ, फिर भी कान्ताका घर दूर होनेके बदले निकट होना अधिक उत्तम है ।

पर कान्ताके घरके निकट होनेसे क्या लाभ, यदि कान्ता मिलनसार न हो ?

—अब्दुल्ला दुमैनी ।

प्रेमके मार्गमें जिसने दुःख भोगा है, वही उसको पह-चानता है ।

—अबू अब्दुल्ला बगदादी ।

आत्म-प्रमाद।

हे प्रिये ! मुझको तेरे प्रेमने ऐसे स्थानपर खड़ा कर दिया जहाँ तू है। सो उस स्थानमें न तो आगेही बढ़ सकता हूँ और न पीछेही हट सकता हूँ।

जो लोग तेरे प्रेमके कारण मुझको बुरा-भला कहते हैं, उनको चाहिए कि वे दिल खोलकर मुझे बुरा-भला कहें, क्योंकि जब वे बुरा भला कहते हैं तब तेरी चर्चा करते हैं जो मेरे लिये अति रुचिकर है।

मुझको जिस प्रकार शत्रु कष्ट देते हैं उसी प्रकार तूभी कष्ट देती है। इसलिये अब जब कि तू शत्रुओंके समान हो गई तो मैं अब शत्रुओंके साथभी प्रेम करने लगा हूँ।

जब तूने मेरा तिरस्कार किया तो मैंने अपने आपको अत्यन्त तिरस्कृत किया, क्योंकि जो तेरी दृष्टिमें तिरस्कृत है, वह प्रतिष्ठाका भागी नहीं हो सकता।

—अबुल शीस।

समर क्षेत्रमें बाण हमारे प्राणोंके घातक नहीं होते, पर वह तीर जो भँवोंकी धनुषमें लगाये जाते हैं, हमारा अन्त कर देते हैं।

—मुसलिम बिन-वलीद।

प्रेम-पिपासु ।

हे कान्ते ! तेरे लिये मेरा वह हाल है जो किसी ऐसे प्यासेका होता है जिसने कि केवल एक ही बारकी प्यास बुझानेके लिये ऐसे स्थानमें पानी देखा हो जिससे पहले एक गढा हो और उसमें भी मृत्युका भय हो ।

उस प्यासेने अपनी दोनों आँखोंसे ऐसा पानी देखा हो जिसके घाट तक पहुँचना कठिन हो और जिसे बिना पिये प्यासा लौट भी न सकता हो।

—एक कवि ।

आत्म-विस्मृति ।

(क)

हे प्रिये ! मैं तेरे प्रेमके वशमें ऐसा हो गया हूँ जैसे नकेल-वाला ऊँट, कि जिधर इच्छा हो उसी ओर वह खींचा जा सकता है ।

मेरे हृदयमें जितना प्रेम है, वह सब प्रकट नहीं किया जा सकता, और जिन बातोंके छिपानेमें मैं अशक्त हूँ, उनमें एकता भी नहीं । ❀

❀ बोलन थीं मैं रह ना सकदा
जीभ ना बने सहाई ।
मूरज द रथ जोड़देयाँई
पो बद्दलां विच माई ॥

—पूरण नायक ।

मैं तुझसे मिलापकी वैसी ही अभिलाषा रखता हूँ जैसी कि एक प्यासा पानीकी, परन्तु उस प्यासेको कूआँ खोदते समय पानीसे भी पहले पत्थरकी ऐसी एक कडी शिला मिल जाय जिसको वह तोड ही न सके।

भला ऐसे निष्ठुर व्यक्तिसे क्या आशा की जा सकती है जो मेरी जान निकलती देखे तो कहे कि निस्सदेह यह स्वस्थ है और बडे पक्के हृदयवाला है। * —अमद समुदायका एक कवि।

(ख)

हे कान्ते ! तू झाऊके वृक्षोंसे ही पूछ ले कि क्या मैंने तेरे घरके टूटे फूटे चिह्नोंकी वन्दना नहीं की †, क्या मैं वहाँ टीलोंपर दुखियाके समान खडा नहीं हुआ, क्या खडे होनेके समय खुश था, और फिर प्रात काल मेरी आँखोंसे क्या ऐसे आँसू नहीं बहे जो टूटी हुई लडीके मोतियोंके समान न थे। ‡

मैं लोगोंको देखता हूँ कि वे वसन्त ऋतु की अभिलाषा रखते हैं। किन्तु मेरे लिये तेरा मिलना ही वसन्त ऋतु है। +

---

* इधर जान मेरी है लोबोंमें, ज़ालिम।
उधर तू कहे—यह तो अच्छा भला है।

† माक्षीभूत वन' सर्वे
क शुगो मे न दृखने ?

‡ मुक्ताहारस्त्रुटितपतित कोपने नेत्रयोर्मे।

+ लोकी कहदे आई वसत,
जद मेरो श्रो प्राण'धारी आवे
भावेनदही आई वसंत।

मैं देखता हूँ कि लोग अकालसे डरते हैं, परन्तु मैं जिस अकालसे डरता हूँ वह तेरा प्रस्थान है।

ईश्वरकी शपथ, यदि मुझे इस बातसे दुःख पहुँचा है कि तूने मुझे कष्ट पहुँचाया है तो कुछ हर्ज नहीं, क्योंकि मैं इस बातसे प्रसन्न हूँ कि तेरे दिलमें मेरे विषयमें कुछ ख्याल तो पैदा हुआ।

—एक कवि।

अपनी दुःख-गाथा।

मेरे हृदयमें तुम्हारे लिये अक्षय प्रेम है, और अपने लिये संकटमय अभिलाषा।

मैंने तुम्हारे पास बहुत पत्र और दूत भेजे, पर वे मेरी व्यथाको भली भाँति दर्शा न सके।

मेरे अन्तःकरणमें ऐसी ऐसी बातें भरी पड़ी हैं जिनकी मैं चर्चा ही नहीं कर सकता। यहाँ तक कि दूतको जतलाना अथवा पत्रों द्वारा ही उनको प्रकट करना उचित नहीं समझता।

तुमने यह ख्याल कर लिया कि मैंने प्रतिज्ञाओंका भंग कर दिया है, पर वास्तवमें वह पिशुन पापी है जिसने अपने आपको तुम्हारा शुभचिन्तक जतलाकर मेरे विषयमें हलाहल विष उगला है।

यदि पिशुन झूठा नहीं है, तो सम्भव है कि वेहोशीकी हालतमे रहा हो, अथवा हँसी ठट्ठेके समय शायद भूलसे प्रतिज्ञा-भगका कोई शब्द उसके मुँहसे निकल गया हो।

प्रतिज्ञा-पालनका गुण जन्मसे ही मेरे स्वभावमें है। प्रेमके मार्गमे वचन-भगका दोप मुझमें नहीं, और मेरा भाव कदापि तनिक भी वदल नहीं सकता।

तुम्हारे वियोगके पश्चात् मैंने जिस प्रकार प्रतिज्ञाका पालन किया है, उसका हाल मुझसे न पूछो, वल्कि अन्य लोगोंसे पूछो, क्योंकि अपने मुँह मियाँ-मिटठू बनना मुझे बुरा मालूम होता है।

हे मित्रो! बताओ तो सही कि कब तक और कहाँ तक मैं अपनी दु ख गाथा तथा सकेतकी वात तुम्हें प्रकट रूपमें सुनाता ही रहूँगा?

जबसे तुम्हारा विछोह हुआ है, तबसे मेरा जीवन और मेरा सतोप दोनों अनाथ हैं, कोई इनका सहायक नहीं। और मेरे आँसू इन दोनो अनाथोंकी दशाको दर्शा रहे हैं।

—विहाउद्दीन जुहैर।

अपने अनुरागीके मार डालनेसे अनुरागिनीको पुण्य नहीं होता, बल्कि अनुरागी ही पुण्यका भागी ठहरता है।

—एक युवती स्त्री।

राम-कहानी।

मुझ पर दुःखोंका पहाड़ टूट पड़ा है, मैं वियोगसे खिजलाया हुआ हूँ, मेरे नेत्र अश्रु बहा रहे हैं और मेरा दिल जला जा रहा है।

परन्तु मुझ जैसे दुखिया पर अनुरागकी जलन और ज्यादा हो गई है, यहाँ तक कि सन्ताप और विलापके कारण मेरी दशा अधिक शोचनीय हो गई है।

हे परमात्मन! यदि मेरे लिये तनिक भी भलाई इसीमें हो, तो जबतक जानमें जान बाकी रहे, मेरे ऊपर दुःखोंकी ही मारामार रहे।

उस मृगनयनीके वियोगमें मेरा शरीर दुःखोंका घर बन गया है।

हे पुरवाई हवा! तू उस सुन्दरीके गृहकी ओर प्रस्थान कर और उस पर क्रोध कर, क्योंकि सम्भव है कि तेरे क्रोधसे उसका हृदय कुछ नर्म हो जाय।

जब उसका दिल नर्म हो जाय और वह तेरी बात सुनने लगे तो मीठे शब्दोंमें प्रेमियोंकी दुर्दशाकी भी चर्चा कर।

ईश्वर तेरा भला करे, तू मेरी भी चर्चा छेड़ना और पूछना कि क्या तुम्हें भी कुछ खबर है?

अरबी काव्य-दर्शन ।



४—वैराग्य ।

चेतावनी ।

सुबह और शामके आने और जानेने छोटेको जवान और बूढ़ेको नष्ट कर दिया ।

हम अपनी आवश्यकताओंकी पूर्तिमें रात दिन सब एक कर देते हैं । परन्तु जो मनुष्य जीवित है, उसकी आवश्यकताएँ पूरी ही नहीं होतीं ।

जीवितके वस्त्रोंको मृत्यु उतार लेती है, और मृत्यु ही उसको उसकी इच्छासे रोक दिया करती है ।

मनुष्य जब मर जाता है, तब उसीके साथ उसकी आवश्यकताएँ भी मर जाती हैं । किन्तु जबतक वह जीवित है, तबतक उसकी कोई न कोई आवश्यकता बनी ही रहती है ।

खिले हुए पुष्प ।

काल जिसको चाहता है, बदल देता है, परन्तु मेरी आत्माको नहीं बदल सकता । और मैं अन्तिम आयुको प्राप्त हूँगा, किन्तु मेरी आत्मा युवा ही रहेगी ।

मुझमें गुप्त बातके लिये एक स्थान है, जहाँतक न मेरे किसी स्नेहीकी पहुँच है और न मदिराका ही प्रभाव पड़ सकता है ।

जो मनुष्य अति शान्तिप्रिय होता है, उसका परिणाम भी उसी मनुष्यके समान होता है जो कि बड़ा समर-प्रेमी होता है ।

मनुष्यका धैर्य उसकी प्रशंसामें गिना जाता है, और उसका रोना-चिल्लाना उसका अवगुण समझा जाता है ।

प्रत्येक मनुष्यको कबरमें ऐसे लेटना होगा कि वह अपनी जगह पर ही करवट तक न बदल सकेगा ।

प्रतिष्ठित होकर जीवित रह । अथवा उदार होकर लहराते हुए झंडेके नीचे भालाके घावोंसे स्वर्गलोककी राह ले ।

हे मेरी आत्मा ! तू उस प्रकार मत जीवित रह जिस प्रकार अब तक प्रशंसारहित होकर जीती रही है । और हे आत्मा ! जब तू मरे तब इस प्रकार मरे, मानों मरी ही नहीं ।

कालने मुझको अकेला (बिना इष्टमित्रके) देखा और दुःखको भी अकेला देखा । इसलिये उसको मेरा मित्र बना दिया ।

सन्तोष ।

नीच लोगोंके कृपापात्र बननेके बदले, मैं अपने लिये यह अच्छा समझता हूँ कि पुराने कपड़ोंमें नङ्गा रहकर दिन काटूँ और थोड़ी सी जीविकापर ही सन्तोष करूँ। *

यद्यपि मेरी शक्ति मेरे साहससे न्यून हो और मेरा धन मेरे स्वभावानुसार पुण्यके लिये कम हो, तथापि मैं अपयश तथा नीचताके घाट पर कदापि न उतरूँगा।

तू बहुतसे लोगोंको देखेगा कि उनके पग वृत्तिके मार्गमें नहीं उठते, परन्तु वे वृत्तिके कामोंमें सफलीभूत हैं।

फिर कौन सी वस्तु है जो तुझको सायकाल और रातके समय यात्रार्थ कष्ट देती है? यहाँ तक कि तू कभी स्थल-यात्रा करता है और कभी जल-यात्रा।

जब कि समस्त कार्य्योंके मार्ग बन्द हो जाते हैं, निस्सन्देह उस समयमें सन्तोष ही सारे बन्द मार्गोंको भली भाँति खोल देता है।

---

* वरं विभवहीनेन प्राणैः सन्तर्पितोऽनलः ।
नोपचारपरिभ्रष्टः कृपणः प्रार्थितो जनः ॥

तथा

वरं प्राणत्यागो न पुनरधमानामुपगमः ।

निर्धन होकर प्राणों द्वारा आग (पेटकी) बुझाना अच्छा परन्तु उपचारहीन कृपणसे प्रार्थना करना अच्छा नहीं।

तथा

मर जाना अच्छा, किन्तु नीचोंके पास जाना अच्छा नहीं।

यदि तू अपने उद्देश्योंकी पूर्तिके लिये सन्तोष धारण करके प्रार्थना करता है, तो हताश न हो, क्योंकि एक न एक दिन तू सफलता प्राप्त कर लेगा।

सन्तोषी पुरुष अवश्यमेव सफलताका अधिकारी है, जैसे कि दरवाजेको खटखटानेवाला प्रविष्ट होनेका भागी है।

अपने पगको उठानेसे पहले उसके रखनेका स्थान देख ले, क्योंकि यदि पैर फिसलनेके स्थानमें पड़ेगा तो तू फिसल जायगा।

स्वच्छ जल, जिसे तू पीता है, कहीं तुझे धोखा न दे, क्योंकि कभी कभी उसमें भी गन्दी वस्तु मिली हुई होती है।

—मुहम्मद-बिन-बशीर।

मेरी बहादुरी।

मैं सवारोंकी एक ऐसी टोलीसे, जिसमें एक सवार काल-चक्र भी है, अकेले ही नेजाबाजी करता हूँ।

मैं अकेला ही संग्राम नहीं करता, बल्कि इस संग्राममें मेरा साथी धैर्य भी है।

प्रत्येक दिन मेरा जीवन मुझसे अधिक शूर-वीर साबित हुआ है और निस्सन्देह उसके अधिक शूर वीर साबित होनेमें अवश्यमेव कोई गुप्त रहस्य है।

मैं विपत्तियोंको अपने सिर पर उठानेका ऐसा अभ्यासी हो गया हूँ कि अब विपत्तियाँ मुझसे पृथक् होकर आश्चर्यके साथ कहती हैं कि यह मनुष्य आपदाओंसे न मरता ही है और न भयभीत ही होता है। फिर क्या मौतको मौत आ गई है अथवा भयको ही भयभीत कर दिया गया है ? जिसके कारण वे ही इसके पास नहीं फटकते।

मैं पानीके भयकर भीषण प्रवाहके समान अति भयकर अवसरों पर भी आगे ही बढ़ता हूँ। मानो मेरे लिये इस जानके अतिरिक्त कोई अन्य जान भी है जिसके कारण मैं इसकी कुछ पर्वाह ही नहीं रखता। अथवा मुझे इस जानके साथ वैमनस्य है।

तू अपने जीको मत रोक, जिसमे वह अपनी शक्तिके अनुसार प्रत्येक वस्तु प्राप्त कर ले, क्योंकि आत्मा और शरीर दोनों पडोसी, जिनका घर आयु है, एक दूसरेसे शीघ्र पृथक होनेवाले हैं।

तू शराब और वेश्याओंका श्रेष्ठताका कारण न जान, क्योंकि वास्तवमे श्रेष्ठता तलवार और प्रत्येक नूतन आक्रमणमें होती है।

इसके अतिरिक्त श्रेष्ठता शत्रु राजाओंका बध करने और इस बातमें है कि तेरे साथ एक ऐसी बडी सेना हो जिसके कारण आकाश-मण्डलमे कालिमा छा जाती हो।

—मुतनब्बी।

जो मनुष्य ईश्वरसे डरता है, उसके कार्योंका फल अच्छा हुआ करता है और ईश्वर उसे प्रत्येक बुराईसे बचाता है।

जिसको भाई और मित्र छोड दें, उसे चाहिए कि अपने विवेकको ही मित्र बना ले।

तू ऐसे उच्च कुलोत्पन्न और बुद्धिमान् पुरुषसे, जो बाहर भीतर एक समान हो, सदैव सम्मति लिया कर।

प्रत्येक कार्यके लिये समय नियत है और प्रत्येक कार्य-की सीमा भी निश्चित है।

जिसने सारी बातोंमें नम्रतासे काम लिया है, वह न तो किसी कार्यमें लज्जित हुआ और न किसीने उसकी निन्दा ही की।

सन्तोषी अपनी वृत्तिमें सन्तुष्ट रहता है, किन्तु लालची यदि धनी भी हो जाय तो भी रुष्ट ही रहता है। *

जो मनुष्य लोगोंमें शान्तिके साथ रहता है, वह उनकी बुराइयोंसे बचा रहता है और आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

---

* (क) सन्तोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम्
कुतस्तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम् ॥

सन्तोषरूपी अमृतसे तृप्त हुए, शान्त चित्तवालोंको जो सुख होता है, वह इधर उधर दौड़नेवाले धनके लोभियोंको कहाँ?

(ख) जब आवे सन्तोष धन,
सब धन धूरि समान।
—तुलसी।

यदि किसी उच्च कुलोत्पन्नको कोई स्थान रुचिकर न हो तो कुछ हर्ज नहीं; क्योंकि उसके लिये भूमंडल पर और अनेक स्थान हैं।

आनन्दको चिरस्थायी और सदैव रहनेवाला मत समझ, क्योंकि इस काल-चक्रमें एक बार जो प्रसन्न किया जाता है, वह अनेक बार कष्टमें डाला जाता है। *

अबुल-फतह-बुस्ती।

वैराग्य-रत्नाकर।

अपने मनको बुरी बातोंसे बचा और उसे ऐसी बातोंके लिये उत्तेजित कर, जिनसे उसकी शोभा बढ़े। ऐसी दशामें तेरा जीवन आनन्दमय होगा और लोग तेरी प्रशंसा करेंगे।

लोगोंको अपनी बाहरी हालतके सिवा और कुछ न दिखा। चाहे समय तेरे अनुकूल न हो, अथवा कोई मित्रही क्यों न तुझपर अत्याचार कर रहा हो।

यदि आजकी वृत्ति तुझ पर कठिन हो, तो सन्तोष कर। आशा है कि समयका फेर कल तक जाता रहेगा।

---

* (क) नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।

—कालिदास।

अर्थात्—चक्रके धुरेकी भाँति दशा ऊपर नीचे होती रहती है।

(ख) चक्रवत् परिवर्त्तन्ते दुःखानि सुखानि च।

अर्थात्—दुःख और सुख चक्रके समान घूमते रहते हैं।

धनसे धनीके पास द्रव्य होता है; पर उसको वह पद नहीं प्राप्त होता जो कि हृदयके धनीको होता है, चाहे उसके पास कम ही धन क्यों न हो।

उस मनुष्यकी मित्राईसे कुछ भी लाभ नहीं जिसका चित्त चलायमान है, और जिधरकी वायु होती हो उधर ही झुक जाता है।

जब तक तेरे पास सम्पत्ति है, तबतक खल मित्र तेरे प्रति बड़ी उदारता प्रकट करेगा। पर निर्धनताके समय वह तेरे निमित्त कजूस हो जायगा।

धनके समय तो तेरे बहुतसे भाई निकल आते हैं, पर आपदाओंके अवसर पर उनकी संख्या बहुत कम हो जाती है।

—हजरत अली।

आत्म-सुधार।

जो मनुष्य अधिक बोलता है, उसकी क्रियाओंमे अवश्यमेव त्रुटि होती है, और मनुष्यका वचन कभी उसीको ठोकर खिलाता है। *

मनुष्यकी जिह्वा छोटी होती है, परन्तु वह बड़े बड़े दोष कर बैठती है। ऐसा ही अनेक कहावतोंमे कहा गया है। †

---

* आत्मनो मुखदोषेण बध्यन्ते शुकसारिका।
बकास्तत्र न बध्यन्ते मौनं सर्वार्थसाधनम्॥

अर्थ—अपने मुखके दोषसे तोते और मैना पैद किये जाते हैं। बगलोंको कोई पिंजरोंमें नहीं डालता। मौन सब कामोंका साधन है।

† मानों हाथी पाइयाँ बातों पाँव।

अनेक बार ऐसा हुआ है कि मनुष्यको उस बात पर लज्जित होना पड़ा है जिसको उसने कहा है, किन्तु उस बात पर कभी लज्जित ही नहीं होना पड़ा जिसको कि उसने कहा ही नहीं। *

कठिन कार्य्योंमेंसे अत्यन्त कठिन वह कार्य है जिसमें तेरा कोई सहायक अथवा सन्मार्गका दिखलानेवाला न हो।

तुच्छ मनुष्य जो बात तुझसे कहे, उसे तुच्छ मत जान, क्योंकि मधुमक्खी एक मक्खी ही है, परन्तु मधुकी स्वामिनी है। †

मतलबी आदमीको उसके मतलबकी पूर्तिसे पहले ही परख ले, जिसमें उसकी मित्रतासे धोखा न खाना पड़े।

यदि शत्रु किसी मजबूरीके कारण मित्रता पर राजी है,

---

* फलैर्विसंवाद मुपागता गिरः
प्रयान्ति लोके परिहासवस्तुताम्।

पञ्चतन्त्र।

अर्थ—वह वाणियाँ जो अपने फलसे विरुद्ध होती हैं, लोकमें परिहासका कारण हैं।

† (क) तृणेन कार्यं भवतीश्वराणां
किमङ्ग वाग्हस्तवता नरेण।

हितोपदेश।

अर्थ—तिनकेसे भी बड़ोंको काम पड़ता है, जीभ और हाथवाले मनुष्यका क्या कहना है।

(ख) कूपोऽन्त स्वादुजल प्रीत्यै लोकस्य न समुद्र।

पञ्चतन्त्र।

अर्थ—मीठे जलवाला कूआँ लोकप्रिय है, समुद्र नहीं।

तो उस मजबूरीके दूर हो जाने पर उसकी शत्रुता फिर लौट आवेगी । *

जिस आपदामें किसी उद्योगसे काम न निकल सकता हो, उसमें घबराना न चाहिए । यदि किसी ढगसे काम निकल सकता हो तो उसे प्रयोगमें लानेसे चूकना भी न चाहिए । †

प्राप्तिके पश्चात् जो वस्तु जाती रहे, उससे भी न घबरा, और न उसके लिये ही प्रलाप कर जो हाथमें आनेसे पहले ही जाती रही हो ।

मनुष्यका नियत समय जब समाप्त हो चुकता है, तब उसकी सारी सम्पत्ति उसके किसी काम नहीं आती । ‡

स्वतन्त्रताका भङ्ग हो जाना अथवा प्रिय वस्तुका नष्ट हो जाना, ये घटनाएँ ऐसी हैं कि इन्हींसे तुझे सबसे अधिक भयभीत रहना चाहिए ।

---

* (क) शत्रुणा नहि सन्दध्यात् सुश्लिष्टेनापि सन्धिना ।
अर्थ—शत्रुके साथ दृढ़ सन्धिमें भी न मिले ।
(ख) कारणान्मित्रतामेति कारणादेति शत्रुताम्
भाव— क्योंकि वह कारणसे मित्रता और शत्रुता ठानता है ।

† (क) त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि दैवे ।
अर्थ—भाग्यके विरोधी होने पर भी धीरज न छोड़ना चाहिए ।
(ख) येन केनाप्युपायेन शुभेनाप्यशुभेन वा उद्धरेद्दीनमात्मानम् ।
अर्थ—किसी भी शुभ या अशुभ उपायसे अपने आपको सङ्कटसे निकाले ।

‡ (क) समानने नयनयोर्नहि किञ्चिदस्ति । भोज प्रबन्ध ।
अर्थ—आँखोंके मिच जाने पर कुछ भी नहीं है ।
(ख) मूदहु आँख कतहुँ कोउ नाँही ।

अन्य लोगोंके ठोकर खानेपर फूला न समा और न दूसरोंकी हँसी ही उड़ा, बल्कि कालके चक्रोंसे डरता रह।*

वह वस्तु सबसे अधिक रद्द होनेके योग्य है जिसके विरुद्ध काल साक्षी है।

मनुष्यका मूल्य वह है जो उसे श्रेष्ठ बनावे। अतः प्रत्येक मनुष्यको चाहिए कि वह शुभ कार्य करे और अपने लिये ऐसी वस्तुओंका अभिलाषी हो जिनके सहारे उच्च पद प्राप्त कर सके।

यह बात असम्भव नहीं कि किसी रोगका औषध न मिले, परन्तु दरिद्रताके साथ यदि आलस्य भी हो जाय, तो ऐसे रोगके औषधकी सम्भावना ही नहीं है।†

तू अपनी मृत्युके पश्चात् अपने धनका वारिस चाहे शत्रु-

---

* आपद्गतं हससि रे द्रविणोऽसि मूढ
लक्ष्मी स्थिराभवति कस्यवगे विधातुः।
एता न पश्यसि घटीर्नलयन्त्रचक्र
रिक्ता भवन्ति भरिता भरिताश्च रिक्ताः॥

भावार्थ—आपदामें फँसे हुए किसी पर, हे मूर्ख, तू हँसता है। क्या रहट परकी बारी बारीसे भर जाने और खाली होनेवाली हँडियोंको नहीं देखता?

† (क) सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहितम्।

भर्तृहरि।

अर्थ—सब रोगोंकी दवा शास्त्रमें मिल जाती है।

(ख) आलस्यहि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः।

वृद्धचाणक्य।

अर्थ—आलस्य मनुष्योंका बड़ा भारी शत्रु है।

को ही बनावे, किन्तु तू धनसञ्चय कर और अपने जीते जी खाने-पीनेमें अपने भाइयोंके अधीन न हो।*

सच्चा दान वह है जिसे तू न तो किसीके बदलेमें करे और न बादमें उसके बदलेकी प्रतीक्षा ही करनेवाला बने।†

नीचसे कोई बात पूछोगे तो वह संकोच करेगा, यहाँ तक कि पूछनेवालेकी जबान भी बन्द हो जायगी।

तेरी परखी हुई बातोंमें सबसे अधिक खरी बात वह है जिसके द्वारा तू बेबसी और निखट्टूपनमें पड़नेसे बच सके।

बुद्धिमान् उन मनोरंजक बातोंको भी छोड़ देते हैं जिनसे बुरी बातोंमें फँस जानेका भय होता है।

जिस मनुष्यकी तू उसके सन्मुख खूब दिल खोलकर प्रशंसा करता है, पीछे उसकी बुराई करनेसे लज्जा कर, और उस मनुष्यकी प्रशंसासे भी लज्जा कर जिसके चले जानेके पश्चात् तू बकरी बन जाता हो।

कुलीन उसीसे मुठभेड करता है जो उसकी टक्करका हो। पर नीच अपनेसे भी नीचपर ही हाथ बढाता है।‡

---

* न बन्धुमध्ये धनहीनजीवितम्।

चाणक्य।

बन्धुओंमें धनहीन होकर रहना बहुत बुरा है।

† तद्दानं सात्विकं स्मृतम्।

गीता।

अर्थात् वस्तुतः निष्काम दान ही दान है।

‡ (क) यद्यपि रटति सरोषं मृगपतिपुरतोऽपि मत्तगोमायुः।
तदपि न कुप्यति सिंहोऽप्यसदृशपुरुषेषु कः कोपः॥

वास्तवमें वह बड़ा भारी त्यागी है जो अपने अपराधीको अपने काबूमें पा जाय और उसको दण्ड देनेकी भी शक्ति रखता हो, पर उसको उदारताके साथ छोड़ दे।*

मनुष्यका उत्तम धन वह है जिसके सहारे वह अपनी मर्य्यादा सुरक्षित रक्खे और शुभ कार्योंमें उसे खर्च करे।

सब नेकियोंमेंसे सर्वश्रेष्ठ नेकी वह है जिसके बाद उपकार न जताया जाय और न जिसके करनेमें किसी प्रकार से विलम्बही किया गया हो। †

उन जड़ी बूटियोंके भरोसेपर, जो भली भाँति परखी हुई हैं, कदापि विष न पी।

अर्थ—चाहे पागल गीदड़ सिंहके सामने आकर जोरसे भबके, पर सिंहको क्रोध नहीं आता। जो अपने जैसे नहीं, उन पर क्रोध काहेका?

(ख) दोहा—कीजे आप समानसों, वैर प्रीति व्यवहार।
कबहुँ न कीजै नीचसों चरचा कथा विचार॥

* (क) ज्ञानस्य भूषणक्षमा
क्षमा ज्ञानका अलंकार है।
(ख) शक्तानां भूषणं क्षमा
शक्तोंका क्षमा भूषण है।

† (क) जो उपकार करके जताने लगा।
वह अपने कियेको मिटाने लगा।
(ख) तधिगस्तु कण्ययन्नपि वांछाम्
अर्थिवागवसरं सहते यः।

अर्थ—धिक् है उसे जो अर्थीको अवसर देखता हुआ उसके बोलने तक विलम्ब करता है।

अपने भाइयों और मित्रोंके साथ सप्रेम मिल, चाहे उन्होंने तुझसे नाताही तोड लिया हो।

सब बातों और कार्योंका एक अन्त अवश्य होता है। सो तू कोई कार्य ऐसा न कर जिसके कारण कोई मनुष्य तुझसे बदला लेनेकी ठाने और तुझपर अकस्मात् कुछ आपत्ति आ जाय।

सारे संसारमें सबसे अधिक विवेकभ्रष्ट वह मनुष्य है जो लोगोंकी निन्दामें दत्तचित्त रहता है— जैसे मक्खी व्रण-स्थानोंको ही ताडा करती है। *

सीधे होनेमें चाहे तू बाणके समानही हो, तथापि लोग यही कहेंगे कि यह सीधा है ही नहीं।

जिस मनुष्यने एक ऐसे मनुष्य पर अनेक बार अत्याचार किया है, जिसका ईश्वरके सिवा कोई और सहायक ही नहीं है, चाहिए कि वह अत्याचारी सचेत रहे और अपने अत्याचारका फल शीघ्र न पानेसे भ्रममें न पड जाय।†

—इस्माईल इब्न अबीबकर।

* न विना परिवादेन रमते दुर्जनो जनः।
काकः सर्वरसान् भुक्त्वा विना मेध्यं न तृप्यति ॥ —महाभारत।
अर्थात्—दुर्जनोंको निन्दामें ही आनन्द आता है, सारे रसोंको चखकर कौवा गन्दगीमें ही तृप्त होता है।

† कर्मवशातो भाव्यस्य नाशः कुतः। भर्तृहरि।
अर्थ—जो कर्मवश होनी है वह नहीं टलती।

तू कुछ दिनों बाद अवश्य मर जायगा। फिर परमात्मा तेरा और तेरे अत्याचारीका ठीक ठीक न्याय चुकावेगा, यहाँ तक कि उसमें तनिक भी त्रुटि न होगी।

सफल जीवनके मूल मन्त्र।

अपने जीवन-कालमें ही अपनी आत्माके लिये मार्ग-व्यय पहले भेज, क्योंकि तू थोड़े ही कालके बाद इस जीवनको छोड़कर अपनी राह लेगा।

मृत्युके लिये तैयारी कर, क्योंकि मृत्युका मार्ग सामारिक मार्गोंसे अधिक कठिन है।

ईश्वरसे भय करने और बुरी बातोंसे बचनेको अपना मार्ग-व्यय बना, क्योंकि तेरी मृत्यु अति शीघ्र आनेवाली है।

अपनी वृत्ति पर सन्तोष कर, क्योंकि सन्तोष ही अमीरी है। और जो सन्तोष नहीं किया करता, दरिद्रता उसकी मित्र बन जाती है।

नीचोंकी मित्रतासे बच, क्योंकि वह शुद्ध भाव रखकर मित्रता नहीं करते, बल्कि बनावटसे काम लेते हैं।

नीचोंको जबतक कुछ मिलता जुलता रहता है, तबतक वे मित्र बने रहते हैं। और जब तू उनको कुछ न देगा, तब उनका विष तेरे लिये घातक हो जायगा।

मनुष्य और मृत्यु ।

जब कि मनुष्य ऐसा हो कि उसके पास ऊँट न हों-जिन को वह प्रात काल चरानेके लिये ले जाय और सायकाल घर लावे तथा उसके सम्बन्धी भी उसपर कृपालु न हों,

ऐसे निष्क्रिय मनुष्यके लिये अति उत्तम है कि निखट्टू रहने के बदले अथवा कपटी भाईके साथी होनेके स्थानमें मृत्युकी शरण ले ।

बहुतसे असीम और अखण्ड जगल है जिनमें अद्भ-नग नाशकी (मेरी) सवारियाँ चक्कर लगाया करती हैं ।

मेरी सवारियोका भ्रमण इस सबबसे है कि प्रभुता प्राप्त हो, अथवा उसमें लूटका धन मिले । और ससारकी विचित्रताएँ तो असंख्य हैं ।

बहुतसे स्त्री पुरुष मुझसे बहुतसी बातें पूछा करते हैं । भला गरीबसे कहाँ कोई पूछता है कि तेरी हालत क्या है ?

मैंने गरीबीके समान अन्य कोई वस्तु युवकके लिये अधिक दु खदायी नहीं देखी । और न कोई अन्य बुरी रात्रि उस काली, अँधेरी रातके समान देखी है जिसमें लूट-मार करनेवाला निराश होकर लौट आता है ।

तू चाहे गरीबीसे दिन काटे और चाहे पुण्यात्मा होकर मरे, पर निस्सन्देह मैं देखता हूँ कि मृत्युसे भागनेवाला कभी उससे नहीं बच सकता ।

यदि कोई जीवित मनुष्य (भागनेवाला) मृत्युसे मुक्त हो सकता तो मैं मृत्युसे बच जाता, क्योंकि मेरी सवारियाँ बहुत तेज भागनेवाली हैं।

—अबू-नवानाश।

वैराग्य-कुंज।

मैं अपने गुप्त विचारोंको नहीं छिपाया करता, और न ऐसी नौबतही आने देता हूँ कि मेरे गुप्त विचार प्रकट होनेके निमित्त दिलमें खलबली पैदा करे।

—एक कवि।

यदि तेरे लिये कुछ शुभ कार्य्य हो जाय अथवा तुझे कुछ सुख मिल जाय, तो उसे बहुत समझ, क्योंकि तू अति शीघ्र नाना प्रकारके कष्टोंमें ग्रस्त होगा।

—अयास बिन इल इम।

यदि तूने कुछ नहीं बोया, तो अन्य किसी बोनेवालेको जब तू कुछ काटते हुए देखेगा, उस समय तू अपने व्यर्थ समय गँवाने पर लज्जित होगा।

—एक कवि।

तू विद्याकी प्राप्तिके निमित्त अथवा अपनी दशा सुधारनेके हेतु अवश्य लोगोंसे मिला जुला कर, अन्यथा मिलनेसे कुछ लाभ नहीं, क्योंकि मेल-जोलसे व्यर्थ बकवासही बढ़ती है।

—एक कवि।

घोर दुःखोंसे पीड़ित उदासीन भी यद्यपि कभी कभी हँस पड़ता है, तथापि मैं यदि कभी लोगोंकी देखा-देखी हँस पड़ता हूँ तो अपनी आत्माको एकान्तमें धिक्कारता हूँ।

—हलीफ़।

जो लोग मुझसे डाह रखते हैं, मैं उनको बुरा-भला नहीं कहता, क्योंकि मुझसे पहले भी गुणवान मनुष्य हुए हैं और उनसे भी डाह रक्खी गई थी।

—एक कवि।

निस्सन्देह हमसे पहले भी लोग अपने मित्रोंसे पृथक् हुए हैं और मृत्युकी ओषधिने प्रत्येक चिकित्सकको थका दिया है।

—मुतनब्बी।

विशाल हृदयवाला मनुष्य जानता है कि दुःखके पश्चात् सुख होता है। अस्तु, जब सुखी होता है, तब वह इस बातको स्मरण रखता है कि यह सुख सदैव रहनेवाला नहीं है।

—कितालबजल-किराबी।

यदि तू अपनी आवश्यकतासे अधिक धन पुण्यार्थ दे, तो कोई बड़ी बात नहीं है। बल्कि प्रशंसनीय बात तो यह है कि तू उसमेंसे कुछ पुण्यार्थ दे, जो कि तेरी आवश्यकताके लिये भी काफी नहीं है।

—अल-मुकन्नआ उल किन्दी।

जब कि हमने यह जान लिया कि हम सदैव जीवित नहीं रहेंगे, तो हमें पता लग गया कि हमें वियोगका दासत्व शीघ्र ही स्वीकार करना पड़ेगा।

—मुतनब्बी।

जब किसी विवेकीने संसारकी परीक्षा की, तो उसे ज्ञात हुआ कि संसारमें मित्रके रूपमें कैसे कैसे शत्रु हैं।

—अबूनिदास।

मनुष्यको मृत्युके पश्चात् उसी मकानमें निवास करना होगा जिसको कि उसने अपनी मृत्युसे पहले बनाया है।

—हजरत अली।

संसारमें दो वस्तुएँ बहुत ही कम पाई जाती हैं। एक तो शुद्ध कमाईका धन और दूसरे सत्य-शिक्षक मित्र।

—अतुल अवायन।

कालचक्रकी बदौलत आनन्द तो कभी ही कभी मिला करता है, पर उसकी आपदाएँ प्राय सदैव बनी रहती हैं।

—इब्न राविगी।

जब कि मैं जानता हूँ कि मेरा जीवन केवल एक क्षण-मात्र है, तो मैं क्या उसको ईश्वरकी स्तुति, प्रार्थना और उपा-सनामें न लगाऊँ?

—सुलैमान दारी।

मेरे पास कोई ऐसी वस्तु नहीं रही जो एक पैसेमें भी बेची जा सके और मेरी शकल मेरी हालतको दर्शा रही है।

—इब्न अदहम।



प्रकीर्ण।

कभी कभी पुरुषार्थहीन घरमें खाली बैठकर आनन्द उड़ानेवाले पुरुषको भी वृत्ति मिल जाती है, चाहे उसने अपनी ऊँटनी पर कभी पालान और नमदा भी न कसा हो।

कभी वह मनुष्य भी धनसे वञ्चित रहता है जो अपनी ऊँटनी पर पालान कसे हुए सदैव यात्रामें ही रहा करता है।

पीठ-लगा गदहा जबतक पीटा नहीं जाता, अच्छी तरह काम नहीं देता। इसी प्रकार प्रभुता न चाहनेवाला अधम उस समय तक कुछ नहीं देता, जबतक कि डराया नहीं जाता।

—कुसम-बिन-अब्दुल करम।

अरबी काव्य-दर्शन ।



५—प्रकीर्ण ।



मेरी आदत ।

मेरी जातिके लोग मेरे ऋण लेने पर रुष्ट होते हैं, यद्यपि मेरा ऋण निस्सन्देह ऐसे कार्य्योंके लिये होता है जिनसे यश फैलता है ।

मैं उधारके जरियेसे अपने उन स्वत्वोंकी सीमाओंको बाँधता हूँ जिनको उन्होंने बिगाड़कर नष्ट कर दिया है और अब बनानेकी शक्ति नहीं रखते ।

मेरा उधार अच्छे घोड़ेके निमित्त है जिसको मैंने घरका परदा बना रखा है और जिसके लिये नौकर भी रख छोड़ा है ।

मेरे और मेरे सगे तथा चचेरे भाइयोंके बीचमें जो अन्तर है, वह निस्सन्देह बहुत बड़ा है ।

मेरे भाई यदि मुझे हानि पहुँचाते हैं तो मैं उनको लाभ पहुँचाता हूँ । और चाहे वे मेरी प्रतिष्ठाको भङ्ग करें, तथापि मैं उनका मान करता हूँ ।

वे पीठ पीछे मेरी बुराई करें, परन्तु मैं उनकी बुराई नहीं करता । और यद्यपि वे मेरी दुर्गतिके अभिलाषी हों, तथापि मैं उनकी सुगतिकी ही लालसा रखता हूँ ।

मैं पूर्व वैमनस्यको मनमें नहीं लाता, क्योंकि जातिका नेता वह मनुष्य नहीं हुआ करता जो मनमें कपट रखनेवाला हो ।

जब कि मुझ पर लक्ष्मीकी कृपा रहती है, तब मेरी सारी सम्पत्ति उनके लिये होती है । और जब मैं द्रव्यहीन हो जाता हूँ, तो उनकी करुणाका पात्र नहीं बना करता ।

अतिथि जबतक मेरे गृहमें निवास करता है, तबतक मैं निस्सन्देह उसका दास हूँ । इसके अतिरिक्त किसी अन्य अवसर पर मेरी टेक दासत्वकी नहीं है ।

—अल-मुकन्नआ-अल-किन्दी

सद्व्यवहारकी स्थितिका ही नाम जाति है । अर्थात् जब तक कि किसी जातिमें सद्व्यवहार पाया जाता है, वह जाति कायम रहती है । और जब उससे सद्व्यवहार चला जाता है, तो वह जाति भी नष्ट हो जाया करती है ।

—एक कवि ।

मेरा हाल।

जब मैं धनवान् हो जाता हूँ तब निस्सन्देह फूल नहीं जाया करता। उस समय जो कोई मुझसे उधार माँगता है, मैं उसको अपनी शक्तिके अनुसार उधार देता हूँ।

कभी कभी मैं द्रव्यहीन हो जाता हूँ। यहाँ तक कि मेरी हीनता बहुत बढ़ जाती है। परन्तु अपनी मर्य्यादाको स्थिर रखते ही मैं फिर अमीर हो जाता हूँ।

मेरी हीनता इतनी जल्दी आती और चली भी जाती है, कि उस समय मेरा कोई अभिन्नहृदय मित्र उधार अथवा याचित स्वत्व सहित सहायतार्थ नहीं पहुँचा सकता।

एक मात्र मेरा धनी हो जाना निदान ईश्वरकी कृपा है और ऊँटोंके सीनोंको तङ्गोंसे कसकर यात्रा करनेके कारण है।

प्रत्येक पुण्यात्माके हृदय (कालके दिनोंमें) जब सङ्कुचित हो जाते हैं, उस समय भी मैं शुद्ध भाव रखकर ही दान दिया करता हूँ।

मैं अपने चचेरे भाईको उस समय महान् सङ्कटसे मुक्त कर देता हूँ जब कि वह ऐसा गिर पड़ता है, जैसे ऊँट फिसलावसे गिर पड़ता है।

मैं उसको धन देता हूँ, उससे प्रेम रखता हूँ और उसको सहायता देता हूँ, चाहे वह अपने मनमें मेरे लिये छलही क्यों न रखता हो।

वह अपने बाद सुगन्धित लकड़ीकी शुद्ध सुगन्धके समान अपनी शुद्ध कीर्ति छोड़ जायगा। उसके बाद उसकी पवित्र कीर्तिसे यशोकी ध्वनिके समान यह बात गूँजा करेगी —

> "जो मनुष्य पवित्र जीवन व्यतीत करेगा, वास्तवमें वही देशकी सेवा करेगा। और नानाप्रकारकी आपदाओंको झेलते हुए भी देशका भार बँटावेगा।"

यदि वह मनुष्य युवक हो और बेतकी डालीके तुल्य हो, तो भी उच्च पदकी प्राप्तिके निमित्त पवित्र उद्योगसे काम लेगा।

वह उच्च पदकी प्राप्तिके मार्गमें प्रत्येक बुराईसे हाथ रोके रखेगा, और ऐसे स्थानपर पहुँचेगा जहाँ यह गाया जा रहा होगा —

> "जो मनुष्य पवित्र जीवन व्यतीत करेगा, वास्तवमें वही देशकी सेवा करेगा। और नाना प्रकारकी आपदाओंको झेलते हुए भी देशका भार बँटावेगा।"

—जमीन जाहिर।

जब कि कड़ी भूख और अनुराग दोनों इकट्ठे हो जाते हैं और किसी दरिद्र पर टूट पड़ते हैं, तो वह मृतप्राय हो जाता है।

—एक कवि।

मेरा हाल।

जब मैं धनवान् हो जाता हूँ तब निस्सन्देह फूल नहीं जाया करता। उस समय जो कोई मुझसे उधार माँगता है, मैं उसको अपनी शक्तिके अनुसार उधार देता हूँ।

कभी कभी मैं द्रव्यहीन हो जाता हूँ। यहाँ तक कि मेरी हीनता बहुत बढ़ जाती है। परन्तु अपनी मर्य्यादाको स्थिर रखते ही मैं फिर अमीर हो जाता हूँ।

मेरी हीनता इतनी जल्दी आती और चली भी जाती है, कि उस समय मेरा कोई अभिन्नहृदय मित्र उधार अथवा उचित स्वत्व सहित सहायतार्थ नहीं पहुँचा सकता।

एक मात्र मेरा धनी हो जाना निदान ईश्वरकी कृपा है और ऊँटोंके सोनोंको तङ्गोंसे कसकर यात्रा करनेके कारण है।

प्रत्येक पुण्यात्माके हृदय (कालके दिनोंमें) जब सङ्कुचित हो जाते हैं, उस समय भी मैं शुद्ध भाव रखकर ही दान दिया करता हूँ।

मैं अपने चचेरे भाईको उस समय महान् सङ्कटसे मुक्त कर देता हूँ जब कि वह ऐसा गिर पड़ता है, जैसे ऊँट फिसलावमें गिर पड़ता है।

मैं उसको धन देता हूँ, उससे प्रेम रखता हूँ और उसको सहायता देता हूँ, चाहे वह अपने मनमें मेरे लिये छलही क्यों न रखता हो।

मैं चाहता तो उसको ऐसे कठोर वचन कह सकता था जो उसकी हड्डी तकको काट सकते थे। परन्तु उसको मेरी शान्ति ढँक लेती है।

जब कोई मामला आ पडता है तो मैं अपने मनको आदेश देता हूँ। परन्तु ससारमें ऐसे भी मनुष्य हैं जिनपर उनके मनका आदेश हुआ करता है, और वे अपने मनपर आदेश नहीं किया करते।

जिसको मैं भली भाँति परख लेता हूँ, उससे मुँहदेखी बात नहीं करता और न किसी हालतमें ही कजूसी करता हूँ।

मैं उदारचित्त और शीलवान हूँ, और कालकी रातोंका चक्र अपने हेर फेरसे मेरी प्रकृतिको नहीं बदलता।

मैं सकटमय आपदाओंको अपने सबाधियोंसे रोकता हूँ और उनके कष्टोंका निवारक हूँ। परन्तु जो कोई मुझसे मुँह फेर लेता है, मैं भी उससे मुँह मोड लेता हूँ।

मैं अपने समस्त विचारोंको, दृढताके साथ, उन लोगोंके निमित्त पूरा करता हूँ, जो उन विचारोके सुपात्र होते हैं। पर अन्य लोगोंका हाल यह है कि उनके थोडे विचार भी पूर्ण नहीं होते।

—इब्न अब्दुल-इल-असदी।

काल-चक्रने मेरे हृदय और तनमें कुछ भी नहीं छोडा जिसको कि किसी सुन्दरीकी आँख अपना दास बना ले।

—मुतनब्बी।

कुछ खरी खरी बातें ।

जिस मनुष्यको ईश्वर लक्ष्मी दे, पर वह सांसारिक यशकी प्राप्ति तथा परलोकके निमित्त कुछ भी खर्च न करे, तो निस्सन्देह वह बड़ा अधम है ।

भाग्यसे ही प्रत्येक दूरकी वस्तु निकट हो जाती है और बन्द कपाट खुल जाता है ।

ईश्वरकी सृष्टिमें सबसे अधिक दुःखी पुरुष वह है जिसका साहस तो बढ़ा चढ़ा हो, पर पल्ले फूटी कौड़ी भी न हो ।*

ईश्वरकी सत्ता और उसके अटल सिद्धान्तोंके हेतु जो युक्तियाँ हैं, उनमेंसे एक युक्ति यह भी है कि विद्वान् तो दुःखी अवस्थामें है और एक मूढ खूब मजे उड़ा रहा है ।

जब तुम सुनो कि किसी श्रीपतिके हाथमें टहनी फूटी और उसमें पत्ते निकले, तो तुम उसका अनुमोदन कर दो ।

जब यह सुनो कि कोई दुखिया पानी पीनेके लिये किसी घाट पर आया तो पानी ही सूख गया, तो ऐसी बातको भी सच ही कहो ।

—अबू-मुहम्मद-अल-रहीम ।

---

* दरिद्रो महामना   विबुधैर्मूढ़ उच्यते ॥ (विदुर)
अर्थ—बड़े दिलवाला किन्तु दरिद्र मूढ़ कहलाता है ।

एक अनोखा ख़याल।

[बगदादके मुसलमानी राज्यकालमें यहिया नामका एक प्रतापी प्रधान सचिव हुआ था। उसीके मुहम्मद नामक पुत्र-के मरने पर एक कविने शोकपूर्ण पद्योंमें एक ऐसा अनोखा ख्याल बाँधा है, जिसको सराहे बिना कोई सहृदय मनुष्य नहीं रह सकता।

—अनुवादक।]

मैंने दान और पुण्यसे पूछा कि तुम्हें क्या हो गया जो तुमने चिरस्थायी यशके बदलेमें अमिट तिरस्कार ग्रहण कर लिया है? और मान-मर्य्यादाका स्तम्भ क्यों ढह गया है?

उन्होंने उत्तर दिया कि हम पर यहियाके पुत्र मुहम्मदका दुःख पड़ा है।

इस पर मैंने कहा कि तुम लोग प्रत्येक स्थानमें उसके दास थे। तुम्हारे लिये तो उचित यह था कि तुम उसके मरने-से पहले ही मर जाते।

उन्होंने कहा कि उसका शोक मनानेके निमित्त केवल आज ही एक दिन हम ठहर गये हैं। कल हम भी चले (मर) जायँगे।

एक कवि।

मैंने अपनी मर्यादाको बिकनेसे बचा रखा है, और उसका ख़रीदनेवाला तो कोई है ही नहीं।

—मामूब इब्न अयूब।

आदर्श भाव ।

जो मनुष्य अपने कामोंमें ईश्वरके अतिरिक्त किसी और-को अपना परम सहायक समझता है, उसे नाना प्रकारके उद्योग करने पर भी दुःख ही दुःख भोगना पड़ता है ।

किसी कार्यमें यदि तू उसके किसी अन्य मार्गसे प्रविष्ट होगा तो तू भूल भटक जायगा और यदि दरवाजेकी ही राहसे आवेगा तो सीधे मार्ग पर रहेगा । *

शत्रुकी हालत और उसके छलको तुच्छ न जान, क्योंकि अनेक बार लोमड़ीने सिंहोंका पछाड़ दिया है । †

जिस मनुष्यने उच्च पद प्राप्त किया है, उसके हृदय पर द्रोहका बोझ नहीं हुआ करता । और जिसके स्वभावमें क्रोध हो, वह उच्च पद नहीं प्राप्त कर सकता ।

निषिद्ध वस्तुको ग्रहण मत कर, क्योंकि उसकी मिठास जाती रहेगी और उसकी कड़ुवाहट बाकी रह जायगी ।

गदहा रेशमी वस्त्र भी पहन ले तो भी लोग उसे गदहा ही कहेंगे ।

आकाशमें अनगिनत तारे हैं, किन्तु ग्रहण केवल सूर्य्य

* मागा[illegible] [illegible] । [illegible] ।

अर्थ—[illegible] है ।

† शत्रु [illegible] विरल [illegible] कहिचित् ।

अर्थ—छोटे अथवा निर्बल शत्रुकी भी कभी उपेक्षा न करे ।

और चन्द्रको ही लगा करता है (अर्थात् विपत्तियाँ केवल बड़े बड़े मनुष्यों पर ही आया करती हैं।)*

जब कि आयुकी सीमा अन्तमें मृत्यु है तब आयुका अधिक तथा न्यून होना बराबरसा ही है।

जब कि ईश्वर किसी मनुष्यकी सहायता करनेके लिये ठान लेता है, तो उसके शत्रु भी उसके सहायक बन जाते हैं।

लोग दिखलानेके लिये मेरी आव भगत करते हैं, किन्तु यदि व मुझपर एकान्तमें अधिकार जमा सकें तो मुझे उसी समय मार डालें।

वास्तवमें साधुता उस युवकमें जो है अपनी इच्छाओंसे उस कालमें दूर रहे जब कि वह उन पर अपना अधिकार रखता हो। †

यदि तूने किसीके साथ भलाई की है तो उससे भलाईकी आशा रख, और यदि तूने कोई बुराई नहीं की तो किसीकी बुराईसे न डर।

—दीवानुलअरबसे अनुवादित।

---

* सम्पदो महतामेव महतामेव चापदः।
वर्धते क्षीयते चन्द्रो न तु तारागणः क्वचित्॥
अर्थ—बड़ोंको ही सम्पत्ति और बड़ोंकोही विपत्ति आती है। चन्द्र ही घटता बढ़ता है, न कि तारा समूह।

† (क) गृहेषु पञ्चेन्द्रियनिग्रहस्तपः।
अर्थ—घरमें रहकर इन्द्रियदमन करना तप है।
(ख) निवृत्त रागस्य गृहं तपोवनम्।
अर्थ—जिसका राग दूर हो गया है उसके लिये घर भी तपोवन है।

व्यायाम पर वार्तालाप।*

खलीलका कथन अनीससे।

अनीस! तुम हमसे क्यों कतराते हो और खेलाड़ियोंके साथ खेलमे क्यों नहीं सम्मिलित होते?

क्या तुम नहीं देखते कि मित्र एक दूसरेको खेलनेके लिये पुकार रहे हैं, और कैसे प्रसन्न चित्त है? वे इस प्रकार हाथ फैलाते और सिकोडते हैं कि दर्शक लोग उनको देखकर मुग्ध हो जाते हैं।

हिरनीके समान उनमें मुडनेकी शक्ति है, पर जब वे बाडो को फाँदते हैं तो सिंह होते हैं।

जब वे सीधे खडे हो जाते हैं तब स्तम्भके समान प्रतीत होते हैं। पर लचकनेके अवसर पर कोमल डालियाकी नाईही है।

अनीसका उत्तर।

हे खलील! चलो, दूर हटो! मरे पाससे जाओ। निस्सन्देह तुम लोग बड़े शठ हो।

घोडा कुदाने और कूद-फाँद करनेसे क्या लाभ? और भला लकडीके खेल और गेंद खेलनेसे लाभ ही क्या?

* इस व्यायामके विषयका कथन परस्पर वार्तालापकी शैली पर है। खलील और अनीस इस वार्तालापके नायकोंके कल्पित नाम हैं।

—अनुवादक।

और चन्द्रको ही लगा करता है (अर्थात् विपत्तियाँ केवल बड़े बड़े मनुष्यों पर ही आया करती है।)*

जब कि आयुकी सीमा अन्तमें मृत्यु है तब आयुका अधिक तथा न्यून होना बराबरसा ही है।

जब कि ईश्वर किसी मनुष्यकी सहायता करनेके लिये ठान लेता है, तो उसके शत्रु भी उसके सहायक बन जाते हैं।

लोग दिखलानेके लिये मेरी आव भगत करते हैं, किन्तु यदि व मुझपर एकान्तमें अधिकार जमा सकें तो मुझे उसी समय मार डालें।

वास्तवमें साधुता उस युवकमें जो है अपनी इच्छाओंसे उस कालमें दूर रहे जब कि वह उन पर अपना अधिकार रखता हो। †

यदि तूने किसीके साथ भलाई की है तो उससे भलाईकी आशा रख, और यदि तूने कोई बुराई नहीं की तो किसीकी बुराईसे न डर।

—शीवाबुलअरबसे अनुवादित।

---

* सम्पदो महतामेव महतामेव चापदः।
वर्धते क्षीयते चन्द्रो न तु तारागणः क्वचित्॥
अर्थ—बड़ोंको ही सम्पत्ति और बड़ोंको ही विपत्ति आती है। चन्द्र ही घटता बढ़ता है, न कि तारा समूह।

† (क) गृहेषु पञ्चेन्द्रियनिग्रहस्तपः।
अर्थ—घरमें रहकर इन्द्रियदमन करना तप है।
(ख) निवृत्तरागस्य गृहं तपोवनम्।
अर्थ—जिसका राग दूर हो गया है उसके लिये घर भी तपोवन है।

तुमने तो मुझे सन्तुष्ट कर दिया और अब मेरी छाती गज भरकी हो गई। सो अब तुम कल ही मुझको खेलाडियोंके साथ पाओगे।

—अहमद मुहम्मद तनूरी।

कुशल सहनशील।

हे मेरे मित्रो, याद रक्खो कि कोई आपत्ति चाहे कितनी ही भीषण क्यों न हो, पर ईश्वरकी सौगन्द कि सदैव किसी जीव पर नहीं रहेगी। *

सो यदि किसी दिन तुम पर कोई आपत्ति आ जाय तो उससे व्याकुल न हो जाओ, और यदि तुम्हारी कुछ हानि हो जाय तो सबसे शिकायत न करते फिरो।

निस्सदेह बहुतसे ऐसे कुलीन हैं कि उनपर आपदाएँ आई तो वे धैर्य्य धारण किये रहे, यहाँ तक कि वे सब आपदाएँ मुँह सिकोड़े हुए स्वय चली गईं।

कुछ ऐसी भी घोर विपत्तियाँ पड़ीं जो अथाह जलके समान लहरें मारनेवाली थीं। पर धैर्य्यके साथ ही मैंने उनका भी स्वागत किया। यहाँ तक कि वे लुप्त हो गईं।

कालके चक्रोंके निमित्त मेरी आत्मा तो सदैवसे बड़ी हेकड़ है, परन्तु जब उसने देखा कि मैं आपत्तिके अवसर पर धैर्य्य धारण कर लेता हूँ, तब उसने भी धैर्य्य धारण कर लिया।

---

* नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण। मेघदूत।
अर्थ-चक्रके धुरेकी भाँति दशा ऊपर नीचे होती रहती है।

ओ शरीर दास! कहीं विद्वान् मनुष्य अपने अमूल्य समयको खेल-कूदमें लगाता है? खेल कूद तो बच्चोंके लिये छोड दो। बस उठो और किसी काम-काजमें लग जाओ।

खलील।

अरे अनीस! तुम्हारी बात तो निस्सन्देह ऐसी है कि उससे सुननेवाले धोखेमें पड सकते हैं। परन्तु हमपर हमारे शरीरका प्रभुत्व है।

सो यदि हम उसको पुष्ट करेंगे तो वस्तुत वह हमारा सहायक बनेगा।

क्या उस निर्बलसे कुछ भलाईकी आशा की जा सकती है, जिसका हृदय सदैव खिन्न और अप्रसन्न रहता है?

वास्तवमें लोगोका यह कहना सच है कि शरीरकी स्वस्थताके बिना मनुष्यकी बुद्धि भी ठीक नहीं रहती।

तुम अब अपने और मेरे शरीरकी ओर देखो, तो तुम्हें ठीक ठीक पता चल जायगा और सच या झूठका निर्णय हो जायगा।

तुम विद्या और विवेकमें भी मुझसे आगे न बढ सकोगे, और अच्छी तरहसे जान लोगे कि तुम नहीं, बल्कि मैं ही श्रेष्ठ हूँ।

अनीस।

तुम्हारी कृपाके लिये मैं धन्यवाद देता हूँ। और ऐ खलील, ईश्वर करे कि तुम सदैव सुरक्षित और प्रसन्नताके साथ जीवित रहो।

तुमने तो मुझे सन्तुष्ट कर दिया और अब मेरी छाती
च भरकी हो गई। सो अब तुम कल ही मुझको खेलाड़ियोंके
ाथ पाओगे।

—अहमद मुहम्मद उन्नी।

कुशल सहनशील।

हे मेरे मित्रो, याद रक्खो कि कोई आपत्ति चाहे कितनी
ी भीषण क्यों न हो, पर ईश्वरकी सौगन्द कि सदैव किसी
ीव पर नहीं रहेगी। *

सो यदि किसी दिन तुम पर कोई आपत्ति आ जाय तो
ससे व्याकुल न हो जाओ, और यदि तुम्हारी कुछ हानि
ो जाय तो सबसे शिकायत न करते फिरो।

निस्सदेह बहुतसे ऐसे कुलीन हैं कि उनपर आपदाएँ
ाईं तो वे धैर्य्य धारण किये रहे, यहाँ तक कि वे सब आप-
ाएँ मुँह सिकोड़े हुए स्वय चली गईं।

कुछ ऐसी भी घोर विपत्तियाँ पड़ीं जो अथाह जलके
समान लहरें मारनेवाली थीं। पर धैर्य्यके साथ ही मैंने उनका
भी स्वागत किया। यहाँ तक कि वे लुप्त हो गईं।

कालके चक्रोंके निमित्त मेरी आत्मा तो सदैवसे बड़ी
हेकड़ है, परन्तु जब उसने देखा कि मैं आपत्तिके अवसर पर
धैर्य्य धारण कर लेता हूँ, तब उसने भी धैर्य्य धारण कर लिया।

---

* नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण। मेघदूत।
अर्थ—चक्रके धुरेकी भाँति दशा ऊपर नीचे होती रहती है।

यह देखकर मैंने अपनी आत्मासे कहा कि तू एक प्रतिष्ठित पुरुषके समान जान दे दे। और सच तो यह है कि दुनियाँ कभी हमारी थी, पर उसने अब हमसे मुँह मोड़ लिया है।

—एक कवि।

प्रभुताका मार्तण्ड।

मेरे गुणोंसे तो तू अनाभिज्ञ नहीं है, और वास्तवमें उन्हीके कारण लोग मुझसे जलते हैं। परन्तु लोगोंके जलने-भुननेपर भी मैं सदैव उन्नतिके शिखर पर चढ़ता रहता हूँ।

मुझ पर जो विपत्तियाँ आती हैं, वे मेरे गौरवको यथेष्ट रूपसे बढा ही दिया करती हैं।

हे मेरे मित्र! जब कि तू मुझसे पृथक् हो जायगा, तो वास्तवमें तू ऐसे शक्तिशाली पुरुषसे नाता तोड़ बैठेगा, जिसकी फुरतियाँ उसके सहयोगियोंके हृदयोंको कँपा देती हैं।

जब कि अन्य लोग छिप जाते हैं, उस समयमें भी तू मुझे सूर्यके समान पावेगा, जो कभी किसी स्थानमें छिपा नहीं करता।

—महवस-बिन-मुहम्मद अनसारी।

मेरे पास कोई ऐसी वस्तु नहीं रही जो कि एक पैसेमे भी बेची जा सके। और मेरी शकल मेरी हालतको दर्शा रही है।

—इब्न मयूम।

ऊँटनी ।

मेरी ऊँटनी जङ्गली गदहेके समान बड़ी मजबूत और चतुर है। मैंने उस पर ऐसी कड़ी दुपहरमें सफर किया है, जिसकी लपट नीलगायोंको भी भून देती हैं।

उसकी दोनों कोखें एक दूसरीसे दूर और चौड़ी हैं। वह हजरमूत देशके ऊँटोंके वशसे है। उसके जोड़ गठीले हैं और वह यमन-देशीय महरी गोत्रकी है।

मैंने उसको हाँका तो ऐसी चली मानो उड़ती थी। वह मोटी ताजी है और यदि समस्त ऊँटोंके घरानोंका पता लगाया जाय तो उसका घराना सर्वश्रेष्ठ निकलेगा।

मैंने इसको उच्च कुलके ऊँट और ऊँटनीसे पाया। फिर जब इसके खरीदनेका विचार किया, तो इसके मालिकको दामका अधिकार दे दिया। यहाँ तक कि उसीके माँगनेके अनुसार दाम देकर इसका मालिक हो गया।

—अइस-उल-इनफी।

घोड़ा ।

मैं प्रातःकाल उस समय यात्रा करता हूँ, जब कि आकाश-मण्डलमें लाली छाई होती है और रात्रिके अन्त तथा भोरके प्रारंभका समय होता है।

मेरे जानेके समय तारे अङ्गारोंके समान होते हैं और मैं ऐसे घोड़े पर जाता हूँ, जो स्वयमेव बहुत तेज जाता है। यहाँ तक कि उसकी गर्दन तथा माथेके बाल कभी इधर और कभी उधर हो जाया करते हैं।

यह घोड़ा उस घोड़-दौड़में प्रथम रहा था, जिसमें समस्त दर्शक एकत्र थे, और यह फिर उस समय एक बाजके समान वर्षाकी बून्दोंको झाड़ता था।

यह उस अच्छे शिकारी बाजके समान है जो दूरसे ही शिकार पर चोट करता है और जिसके छोटे परोंसे समीपके पक्षी भयभीत रहते हैं।

जिसके भयसे पक्षी वृक्षोंकी डालियोंमें शरण लेते हैं, जो शिकारको दूरसे ही देख लेता है और जब उसके निकट आ जाता है, तो शिकार उसके पजेसे निकल नहीं सकता।

जो कि ऐसा अच्छा शिकारी बाज है कि शिकारके निकट पहुँचनेसे ही, शिकारको ऐसा प्रतीत होता है, मानो वह उस पर टूट पड़ा।

उसकी आँखें बड़ी ताड़नेवाली हैं, और ऐसा मालूम होता है कि मानों एक पत्थरके दोनों किनारोंमें रक्खी हुई हैं। यहाँ तक कि सूईसे कभी सी भी नहीं गई।*

—हुमयद-उल-अरक़त।

काल-चक्रकी बदौलत आनन्द तो कभी कभी ही मिला करता है, पर उसकी आपदाएँ प्राय सदैव बनी रहती हैं।

—इब्न राबिन्दी।

---

* ध्यान रहे कि जब कोई बड़ा बाज पकड़ा जाता है तो उसकी आँखें पहले सी दी जाती हैं जिसमें वह पालतू हो जाय। परन्तु कविने अपने घोड़ेकी तुलना ऐसे बाजक मात्र की है जो स्वेच्छानुसार विचरकर शिकार करनेवाला है और न कभी पकड़ा गया है और न उसकी आँखें ही सी गई हैं।

अनुवादक।

मेघ ।

मैं रात्रिको जाग रहा था कि वह रात ऐसे विद्युन्मय मेघके कारण लम्बी प्रतीत होने लगी, जो कि बहुत गाढ़ा था और एक भूमिसे दूसरी भूमिकी ओर जा रहा था।

रात्रिके पहले भागमें मेघ मतवालोंके समान छोटे छोटे भागोंमें विभक्त था। और उसका एक टुकड़ा ही अकालसे पीड़ित भूमिके लिये ऐसा पर्याप्त था, कि वैसा दूसरा कोई पूरा मेघ भी काफी नहीं था।

झुण्डके झुण्ड बादल जङ्गलोंमे ऐसे गरज रहे हैं, मानों बड़ी बड़ी ऊँटनियाँ एक दूसरेको देखकर बड़बड़ा रही हैं।

इस गाढ़े और श्वेत मेघके ऊँचे ऊँचे किनारे क्या हैं, मानों लबनान पहाड़की ऊँची ऊँची लम्बी-चौड़ी चोटियाँ हैं।

वह जलमय मेघ अपने चलते-फिरते टुकड़ोंकी सहायतासे उन अति प्रचण्ड वायुओंका सामना करता है जो हवाए मूतकी ओरसे आती हैं।

यह मेघ अपने पीछे शुद्ध और स्वच्छ जल छोड़ जाता है। और यदि संसारमें पवित्र जल होता है तो इसीका होता है।

यह मेघ ऊँचे स्थानके अरफज वृक्ष, तथा गारी और तीखी घासोंकी जड़ोंके उन सूतरोंमे जीवन डाल देता है, जो कि पुराने हो जानेके कारण सूखकर मर गये थे।

यह गाढ़ा श्वेत मेघ बहुत जलसे भरा होनेके कारण शनैः शनैः उस ऊँटके समान चलता रहा जो कि बूढ़ा और दुर्बल

हो। साथही साथ जिसकी नकेलकी डोर भी तङ्ग हो और वह ऐसी भूमिपर आगे बढता हो जिसमे पैर धँसते हों।

—मिलहत-उल-जिरमी।

एक अभ्यागत-सेवी कुटुम्ब। *

जाड़के दिनोंमें मैं मुहल्बके परिवारका अतिथि था। वे दिन अकालके थे और मैं विदेशमें एक यात्री था।

उन्होने निरन्तर मेरा सत्कार किया था, बराबर मेरा हाल पूछा था और सदैव मुझ पर करुणा रखी थी। यहाँ तक कि उनको मैंने अपना परिवार ही समझ लिया था।

—एक कवि।

भाईका दुखड़ा।

ऐ मेरी आँख। प्रत्येक दिन जब कि भोर हो, उस समय भाई जरीह पर चार आँसू बहाया कर।

निस्सन्देह मेरा भाई मेरे लिये एक पहाड़के समान था जिसकी छायामें मैं शरण लेती थी। परन्तु मर जानेके बाद तू (मेरा भाई) मुझे ऐसे चटियल मैदानमें छोड़ गया है, जिसमें कहीं छया नहीं, और मैं अब धूपमें पड़ी हूँ।

---

* प्राचीन अरबमें अतिथि-सेवाकी बड़ी प्रथा थी। विशेषतः अकालके समय जो कोई आगतुकोंको खान पानादिमे सुख पहुँचाता था, वह असीम-आदरणीय, तथा महत्वपूर्ण प्रशंसाका भागी होता था। और जो कोई अभ्यागतोंकी सेवामें किसी प्रकारकी कसर रखता था वह अति निन्दनीय माना जाता था।

—अनुवादक।

जब तू जीवित था तब मैं साहसवाली थी, निडर होकर मैदानमें फिरा करती थी और तू मेरा बाहुबल था।

आज मैं एक तुच्छके सन्मुख भी हीन हूँ और उससे डरती हूँ, और यदि कोई मुझ पर अत्याचार करता है, तो मैं (नि शस्त्र होनेके कारण) उसको अब अपने हाथोंसे रोकती हूँ।

मुझको अब मजबूर होकर अपनी आँख बन्द कर लेनी पड़ती है, क्योंकि मैं जानती हूँ कि मेरे सवारों और नेजोंकी तेजी तेरी मृत्युके कारण जाती रही है।

जब कि कुमरी (चिड़िया) दिनमें, वृक्षकी किसी डाली पर बैठकर 'वाशजनाहो' कहती है, मैं उस समयमें 'वासबाहो' — ये मेरी सुबह मुझ पर दया कर—कहती हूँ •

—फातिमा-बिन्त-इल-अजहम (स्त्री)।

पुत्र और बधूसे दुःखी स्त्री ।

मैंने अपने पुत्रका पालन पोषण उस समय किया जब कि वह पक्षीके एक ऐसे नन्हे बच्चेके समान था जिसके शरीर पर छोटे ही छोटे बाल होते हैं और जिसके शरीरका सबसे बड़ा अङ्ग पेट ही होता है।

अब वह खजूरके एक ऐसे मजबूत वृक्षके सदृश हो गया है जिसकी टहनियोंको छाँट दिया गया हो और जिस-

• प्राचीन अरबमें प्रात और सायंकालके समय नये मृतकों पर शोक मनानेका दस्तूर था। और प्रात काल ही प्राय लूट मार होती थी। इसलिये सुबहका कुशल पूर्वक बीतना बहुत अच्छा समझा जाता था। अनुवादक।

के तनेसे मोटी मोटी डालियोंको काट दिया गया हो। परन्तु इतना बडा होकर अब उसने मुझे मारना शुरू किया और मुझे शिक्षा देना आरम्भ किया। परन्तु बुढ़ापेके बाद मैं सभ्यता सीखूँ, यह आशा उसको न रखनी चाहिए।

अब जब मैं उसके बनाव-शृङ्गारको देखती हूँ तो बडा आश्चर्य होता है। यहाँ तक कि उसकी दाढीके बालोंसे भी बडी विचित्रता टपकती है।

एक दिन उसकी बहूने मुझको सुनाते हुए उससे कहा कि दुष्कर्मोंको छोड दे, क्योंकि माताके साथ समझ बूझकर व्यवहार करना चाहिए।

उसकी बहूने तो मुझे सुनाकर ऐसा कहा, किन्तु उसका वास्तविक हाल यह है कि यदि वह मुझे जलती हुई अग्निमें पडी देखे, तो निकालनेके बदले उलटे आगमें कुछ लकडियाँ और डाल दे।

—अज्ञात अरबी एक स्त्री।

विदेशमें पुत्रका मारा जाना।

लूट-मार करके धनोपार्जनकी इच्छासे तू रात्रिके समय गया। परन्तु उलटा तू ही मृत्युके घाट उतार गया।

मैं नहीं जानती कि किसने तुझे मार डाला। ईश्वर करे कि मुझे तेरे घातकका पता लग जाय।

यदि तू मारा नहीं गया, तो फिर क्या तू बीमार है जो घर लौटकर नहीं आया? अथवा तू शत्रुओंके चगुलमें फँसा हुआ है?

क्या ऐसा तो नहीं हुआ कि तुझे उन विपत्तियोंने मृत्युका मुँह दिखाया हो, जिन्होंने कि चकोरके बच्चोंका क्षय कर दिया है ?

मनुष्य चाहे जहाँ जाय, मृत्यु उसकी घातमें वहीं लगी रहती है ।

कौन सा अच्छा गुण है जो तुझमें न था और अन्य किसीमें था (अर्थात् तू सकल गुण सपन्न था) ?

हे लोगो ! जब कि मृत्युका समय आ जायगा, उस समय प्रत्येक वस्तु तुम्हारी घातक बन जायगी ।

बिना किसी कष्टके अनेक बार तू अपने उद्योगमें सफलीभूत रहा ।

निस्सन्देह किसी आपदाने ही तुझको इस बातसे रोका है, कि तू मुझे उत्तर दे । अब मैं धैर्य धारण करूँगी, क्योंकि तू अपने पूछनेवालेको उत्तर ही नहीं देता ।

ईश्वर करे कि मेरा हृदय तेरी ओरसे एक क्षणके लिये धैर्य धरे ।

क्या ही अच्छा होता कि मैं तेरे बदलेमें मृत्यु की भेंट होती ।

—पत्र सी ।

एक बादशाहकी माताका परलोकगमन । ❀

हम शत्रुओंको मारनेके लिये उत्तम उत्तम तलवारें और बड़े बड़े भाले तैय्यार करते हैं । परन्तु मृत्यु बिना लड़े ही हमारा सफाया कर देती है ।

❀ सैफ-उद-दौला नामी शाम (Syria)के बादशाहकी माताकी मृत्यु पर ये शोकपूर्ण पद्य कहे गये थे । —अनुवादक ।

हम अच्छे अच्छे तेज घोड़ोंके स्वामी होते हैं। फिर भी वे हमको कालचक्रके धावोंसे मुक्त नहीं करते।

कौन है जो ससार पर सदैवसे मोहित नहीं? परन्तु ससारमे सर्वदा रहनेके लिये कोई मार्ग ही नहीं।

मित्रसे मिलना-जुलना तेरे भागमें ऐसा ही है जैसे कि सुषुप्तिकी अवस्थामें तेरे विचारकी दशा होती है।

कालने मुझ पर आपदाओंके इतने बाण फेंके कि मेरा हृदय तीरोंके परदेमे हो गया।

सो जब मुझ पर बहुतसे तीरोंकी बौछार हुई तो मैं ऐसा बिध गया कि बाणोंके फलों पर फल टूटे।

मुझ पर दु ख सुगम हो गये। अब मैं उनकी कुछ तितिक्षा नहीं करता, क्योंकि जिस पर सर्वदा आपत्तियाँ आती रहती हैं, उसके लिये कोई क्लेश दुस्तर नहीं हो सकता।

जिसने बादशाहकी माताके परलोकगमनका समाचार दिया, उसने निस्सन्देह आज प्रथम बार (ससारमें) इतनी बड़ी कुलवतीकी मृत्युका समाचार दिया है।

अब इस समाचारसे लोगोंकी हालत ऐसी हो गई है, मानों इससे पहले किसीको मृत्युने दु ख ही नहीं दिया था और न किसीके मनमें ऐसी आपत्तिकी स्फुरणा ही हुई थी।

सुगन्धिके बदले, उस स्वर्गवासिनीके मुख पर ईश्वरकी कृपा सुशोभित है और सौन्दर्य्य उसपर लपटे हुए कफनके समान है।

यह स्वर्गवासिनी क़बरमे ढँकनेसे पूर्व चतुराईसे ढँकी हुई थी और उच्च भावोंसे पूर्ण थी।

पृथ्वीके नीचे एक ऐसी स्थिति है जो कि उसके नीचे पुरानी हो जायगी। परन्तु हमारी स्मृति उसके विषयमें सदैव नवीन ही रहेगी।

कोई मनुष्य संसारमें नित्य नहीं रहेगा, बल्कि सभी लोग क्षयको प्राप्त होंगे।

मेरी आत्मा इस बातसे सन्तुष्ट है कि तू ऐसी मौत मरी है जिसकी अभिलाषा समस्त जीवित स्त्रियाँ और पुरुष रखते हैं।

तू शुभ दिवस प्राप्त करके मरी है। और उनमेंसे कोई दिन भी ऐसा संकटमय नहीं हुआ कि जिसमें तूने जीवनके स्थानमें मृत्युको श्रेष्ठ न समझा हो।

मानका परदा तुझपर तना हुआ है, क्योंकि राज्य तेरे पुत्र अली (सैफ़-उद्दौल) के हाथमें उच्च अवस्थामें है।

तेरी क़बर पर (ईश्वर करे) प्रातःकालके समय बरसनेवाला मेघ ऐसा बरसे जैसा कि तेरा हाथ दानकी वर्षा किया करता था।

वह चारों ओर फैला हुआ मेघ मूसलाधार बरसे और भूमिको ऐसा उखाड़ डाले जैसे जैसे तोबड़ों (दानेवाले पात्रों) को देखकर घोड़े भूमिको उखाड़ देते हैं।

मैं तेरा हाल प्रत्येक प्रभुतासे पूछता हूँ, क्योंकि तेरे विषयमें मुझे यह पता है कि कोई प्रभुता तुझसे वञ्चित नहीं थी।

कोई भिखारी जब तेरी क़बरके समीपसे जाता है तो वह रो पड़ता है। यहाँ तक कि रोते रोते भिक्षा माँगना भूल जाता है।

तू अनेक प्रकारसे दान किया करती थी । क्या ही अच्छा होता कि इस समयमें भी तुझे दान करनेकी शक्ति होती ।

मैं तुझे तेरे जीवनकी सौगद देकर पूछता हूँ, कि क्या तू जीवन और उसकी बात भूल गई ? और मैं यद्यपि तेरे निवास स्थानसे दूर हूँ, तथापि तुझको नहीं भूलता ।

तूने हमारी इच्छाके प्रतिकूल अब ऐसे स्थानमें जाकर निवास किया है जहाँ कि उत्तरी तथा दक्षिणी वायु पहुँचती ही नहीं ।

अब खुज़ामा झाडियोंकी सुगधि तेरे निकट नहीं पहुँचती और मेघकी फुहार (छोटी छोटी हलकी बूँदें) भी तेरे समीप जानेसे रुक गई है ।

तू अब ऐसे स्थानमें है जिसका निवासी अपने गृहसे दूर होता है और सम्बन्धियोंसे नाता तोड़े हुए पृथक् रहता है ।

तू उदासी, मेघके जलके समान पवित्र थी, और अपने भेदोंको गुप्त रखनेवाली तथा बातकी सची थी ।

तेरी बीमारीके दिनोंमें तेरी दवा एक बड़ा निपुण चिकित्सक करता था । परन्तु तेरा अद्वितीय पुत्र प्रभुताका बड़ा भारी चिकित्सक है ।

जब कि किसी सीमाका रोग, तेरे पुत्रके सम्मुख लोग प्रकट करते हैं तो उसके लम्बे भालोंके फल उस सीमाको नीरोग करते हैं ।

तू अन्य स्त्रियोंके समान नहीं थी। और न तू उन स्त्रियों के समान थी जिनकी क़बरें उनके लिये परदेके समान समझी जायँ ।

तेरी लाशके साथ व्यापारी लोग नहीं गये थे जो कि लौटनेके पश्चात् अपना अपना जूता साफ करते।

तेरी लाशके चारों ओर बड़े बड़े लोग नङ्गे पैर और पैदल थे। और छोटे छोटे कंकर-पत्थर उनके पैरोंके नीचे शुतुर-मुर्ग- (ऊँट पक्षी) के पखोंके परोंके समान थे।

तेरी मृत्युके शोकसे परदेमें रहनेवाली स्त्रियोंको परदेने प्रकट कर दिया। और उन्होंने केवल काले वस्त्रको धारण नहीं किया बल्कि सुगंधित उबटनके स्थानमें मुखपर स्याही मल ली।

इन स्त्रियोंको जब आपत्ति-जनक समाचार मिला तो हँसी-खुशीके कारण, उनकी आँखोंमें जो नीर था वह आपत्तिके नीरमें परिवर्तित हो गया।

जैसी तू योग्य थी, यदि उसी प्रकार अन्य स्त्रियाँ भी होतीं तो निस्सन्देह स्त्रियोंको पुरुषोंसे श्रेष्ठ गिना जाता।

सूर्य्य (ज्योति केंद्र) का वाचकशब्द (शम्स) स्त्री लिङ्ग नाम है तो कुछ हर्ज नहीं। और चन्द्रमाके लिये पुलिङ्ग शब्द है, तो इससे चन्द्रमाके लिये कोई गौरव नहीं। *

जो लोग मर गये हैं उनमेंसे उसका मरना सबसे अधिक दुःखदायी है जो मरनेसे पूर्व अद्वितीय हो।

हममें से कुछ लोग, कुछ लोगोंका अन्त्येष्टि सत्कार करते हैं और पिछले लोग अगलोंको सिरों पर चलते हैं।

बहुत सी आँखें ऐसी हैं कि उनके किनारोंको चूमा जाता

---

* अरबी भाषामें सूर्य्य-वाचक शब्द स्त्री लिङ्ग है और चन्द्रमावाचक पुलिङ्ग है। अनुवादक।

संसारमें हमसे पहले जो लोग पैदा किये गये थे, वे जीवित रहते तो हम पृथ्वी पर आने-जानेसे रोक दिये जाते।

—मुतनब्बी।

ऐ सुननेवाले! क्या तुझे ज्ञात नहीं कि पृथ्वी चौड़ी-चकली है। फिर क्या कोई भाग मुझे रहने न देगा?

—अयास-बिन-क़तीम।

जब किसी विवेकीने संसारकी परीक्षा की, तो उसे ज्ञात हुआ कि संसारमें मित्रके वस्त्रोंमें कैसे कैसे शत्रु हैं।

—अबूनिवास।

मनुष्यको मृत्युके पश्चात् उसी मकानमें निवास करना होगा जिसको कि उसने अपनी मृत्युसे पहले बनाया है।

—हजरत अली।

संसारमें दो वस्तुएँ बहुत ही कम पाई जाती हैं—एक तो शुद्ध कमाईका धन, दूसरे सत्य शिक्षक मित्र।

—अबुल अतायत।

जब कि मैं जानता हूँ कि मेरा जीवन केवल एक क्षण मात्र है, तो मैं क्यों उसको ईश्वरकी स्तुति, प्रार्थना और उपासनामें न लगाऊँ?

—सुलैमान बाली।

